छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **प्रथम सत्र**

मंगलवार, दिनांक 08 जनवरी, 2019

(पौष 18, शक सम्वत् 1940)

[अंक 03]

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 08 जनवरी, 2019

(पौष-18, शक संवत् 1940)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत)पीठासीन हुए)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले दिन ही बहस हुई और सदन के नेता जी हाऊस से गायब हो गये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि सदन के नेता श्री भूपेश बघेल जी हैं कि श्री मोहम्मद अकबर जी हैं ? श्री मोहम्मद अकबर जी का कल स्टेटमेंट आया कि संसदीय सचिव बनाये जायेंगे । पहले तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि हाऊस के नेता कौन हैं ? (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वे एक जिम्मेदार मंत्री हैं और उनका स्टेटमेंट आ सकता है । इसमें बड़ी बात क्या है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अकबर जी का स्टेटमेंट सारे समाचार-पत्रों में छपा है । (व्यवधान)

समय :

11.01 बजे

निधन का उल्लेख

1. श्री मोहन भैया, लोक सभा के पूर्व सांसद।
2. श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी, अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री ।
3. श्री शिवराज सिंह उसारे, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य।
4. श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य ।
5. श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्वसदस्य।
6. श्री श्यामलाल चतुर्वेदी, राजभाषा आयोग के पूर्व सदस्य ।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि लोकसभा के पूर्व सांसद, श्री मोहन भैया का दिनांक 16 सितम्बर, 2018, अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी का दिनांक 15 अक्टूबर, 2018, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री शिवराज सिंह उसारे का दिनांक 29 अक्टूबर, 2018, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रामेश्वर प्रसाद कोसरिया का दिनांक 27 दिसम्बर, 2018 तथा अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह का दिनांक 2 जनवरी, 2019 को निधन हो गया है ।

नीरमणी\08-01-2019\a10\11.00-11.5

श्री मोहन भैया का जन्म 18 अक्टूबर, 1934 को ग्राम-लोसल, सीकर, राजस्थान में हुआ था । आप युवा अवस्था से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़कर समाज सेवा में सक्रिय रहे । आप सन् 1977 में दुर्ग लोक सभा क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुए । आप संसद की इस्पात एवं खान समिति के सदस्य रहे । आप आपातकाल के दौरान जेल भी गये । आपकी समाज सेवा में विशेष अभिरूचि थी, आप कुष्ठ बस्तियों में रोटी-सब्जी वितरण से लेकर हर जरूरतमंद के लिये सदैव खड़े रहे । आपका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन प्रदेश की आम जनता की भलाई तथा सेवा के लिये समर्पित रहा ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी का जन्म 1 जून, 1933 को ग्राम-भिड़रागांव, जिला-आजमगढ़, उत्तरप्रदेश में हुआ था । आपने स्नातकोत्तर एवं एल-एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की थी । आपने अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया । आप आपातकाल के दौरान जेल भी गये । आप सन् 1977 में अंबिकापुर निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के लिये सदस्य निर्वाचित हुए । आपने अनेक विभागों के मंत्री पद का दायित्व भी संभाला । आपकी अध्ययन तथा लेखन में अभिरूचि थी । आपने अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग के उत्थान के कार्य में विशेष योदान दिया । आपका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन प्रदेश की आम जनता की भलाई तथा क्षेत्र के विकास के लिये समर्पित रहा ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता, कुशल प्रशासक, लेखक तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री शिवराज सिंह उसारे का जन्म 25 दिसम्बर, 1947 ग्राम-भर्रीटोला, जिला-राजनांदगांव में हुआ था । आपका मुख्य व्यवसाय कृषि था । आप सन् 2008 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर मोहला-मानपुर क्षेत्र से छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिये सदस्य निर्वाचित हुए । आप छत्तीसगढ़ विधानसभा की अनेक महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य रहे । आप कद्दावर आदिवासी नेता के रूप में जाने जाते रहे । आपकी समाजसेवा में विशेष अभिरूचि थी । अपने क्षेत्र के विकास के लिये आप सदैव तत्पर रहे । आपका राजनैतिक जीवन अपने क्षेत्र की जनता की भलाई के लिये समर्पित रहा ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक अनुभवी राजनैतिक तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

जारी..........श्री कुरैशी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कुरैशी\08-01-2019\a11\11.05-11.10

जारी..........अध्यक्ष महोदय :- श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया का जन्म 7 जुलाई, 1942 को हुआ था । आपका मुख्य व्यवसाय कृषि था, आपने एलएल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की, आपने वकालत का कार्य भी किया । आप 1977 में जनता पार्टी की टिकिट पर निर्वाचन क्षेत्र मुंगेली से अविभाजित मध्यप्रदेश की विधान सभा के सदस्य रहे हैं । आप अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव संघर्षशील रहे । आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह का जन्म 12 नवम्बर, 1944 को हुआ । आप सक्ती राजघराने के सदस्य थे । आपका मुख्य व्यवसाय कृषि था । आप प्रथम बार 1972 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में सक्ती से अविभाजित मध्यप्रदेश की विधान सभा के सदस्य चुने गए थे । आप दूसरी बार 1990 में सक्ती विधान सभा से ही भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । आप, अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव प्रयासरत् रहे । समाज सेवा में आपकी विशेष रूचि थी । आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मोहन भैया हमारे दुर्ग से सांसद रहे । वे 1977 में पहली बार सांसद बने । आप बहुत ही सहज, सरल और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे । सांसद होते हुए भी उन्होंने कभी हमें इस बात का भान नहीं होने दिया कि वे एक सांसद हैं, वे एक सामान्य व्यक्ति की तरह ही व्यवहार करते थे और मिलते भी थे । समय पड़ने पर वे सामाजिक मुद्दों पर मुखर होकर अपनी बात कहते थे, चाहे वह खुद की पार्टी की सरकार क्यों न हो । वे बहुत ही लोकप्रिय रहे, उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा में व्यतीत किया ।

आदरणीय प्रभुनारायण त्रिपाठी जी के साथ ही शिवराज उसारे जी जो कि हमारी पार्टी से विधायक रहे । दोनों ही सहज, सरल और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे । आदिवासी समाज में उनकी विशेष पैठ रही है । कोसरिया जी का जन्म 1942 में हुआ । 1977 में ही वे भी जनता पार्टी से विधायक बने। आदरणीय पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जिनका जन्म 1944 में हुआ और वे 1972 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में और फिर बाद में भारतीय जनता पार्टी के विधायक के रूप में 1990 में वे सक्ती से निर्वाचित हुए, जहां से आप चुनकर आते हैं । इन सभी महानुभावों का मध्यप्रदेश की विधान सभा और छत्तीसगढ़ में बहुत योगदान रहा । इनके जाने से अपूरणीय क्षति समाज को हुआ है । मैं उनके परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और मृतात्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मोहन भैया, बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के माध्यम से समाज की सेवा से जुड़े रहे । उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का सफर जनसंघ से प्रारंभ किया । वे अनेक दायित्वों पर रहे और इसके साथ ही आपातकाल में उन्हें जेल भी जाना पड़ा । जेल से छूटने के बाद जब जनता पार्टी का गठन हुआ और लोक सभा का चुनाव लड़े तो सांसद के रूप में निर्वाचित होकर आए । लोक सभा में काम किया और काम करने के बाद आजीवन वे समाज की सेवा में लगे रहे । हमने एक ऐसे समाजसेवक को खोया है, जिसने गरीबों के लिए, आम आदमी के लिए, खासकर निचले तबके के लिए अपना जीवन समर्पित किया ।

.............जारी--- श्री ठाकुर -

ठाकुर\08-01-2019\a12\11.10-11.15

........जारी श्री धरमलाल कौशिक :- खास करके जो नीचे तबके, ऐसे लोगों के लिए अपना जीवन जिन्होंने समर्पित किया। श्री प्रभु नारायण त्रिपाठी जी अंबिकापुर और अंबिकापुर में साथ ही उन्होंने जनसंघ के कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने भी काम प्रारंभ किया। आपातकाल में जेल उनको जाना पड़ा। मीसा में बंद रहे और उनके साथ ही साथ में एक अधिवक्ता के रूप में उन्होंने व्यवसाय का चयन किया। एक सफल अधिवक्ता रहे और एक सफल अधिवक्ता के साथ ही साथ चुनाव लड़े और विधानसभा में चुनाव लड़ने के बाद में अविभाजित मध्यप्रदेश में मंत्री के रूप में 1,2, 3 ऐसे अनेक विभागों को उन्होंने संभालने का काम किया। गृहमंत्री के रूप में जिन्होंने काम किया। यहां के कानून व्यवस्था को लेकर के, बाकी चीजों को लेकर के एक प्रदेश में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। साथ ही एक ईमानदार छवि कि जब उनके पास कोई जाए और बातचीत हो तो उन्होंने कहा कि राजनीति को अलग करो और व्यवसाय को अलग करो। जहां तक मेरी पारिवारिक है और बाकी चीजें हैं, उसको मेरे वकालत तक रहने दो और उसके बाद में समाज के सेवा में जो मैं कर सकता हूं, योगदान रहेगा। आजीवन ऐसे बहुत कम लोग होते हैं, जो समाज की सेवा में सारी चीजों से राजनीति में रह कर के राजनीति से लिप्त न हों और सेवा कर सकें, ऐसे प्रभुनारायण त्रिपाठी जी हमारे रहे हैं। साथ ही हमारे शिवराज सिंह उसारे इस विधानसभा के सदस्य रहे, जिला पंचायत के पहले सदस्य थे और उसके बाद कांग्रेस के विधायक के रूप में चुन कर के आयें। मैं जब आसंदी पर होता था इस विधानसभा में तो बड़े विनम्र भाव से बोले कि साहब मुझे अपने क्षेत्र की जनता की आवाज पहुंचानी है और इस हाऊस के माध्यम से पूरे समय तक वो छत्तीसगढ़ी को प्राथमिकता दिये। छत्तीसढ़ी में अपनी बात को रखते थे और मंत्रियों से भी इतनी नम्रता से बातचीत करके कि मेरे क्षेत्र की समस्या का निराकरण कैसे हो जाये, ये उनके जीवन का एक क्षेत्र के प्रति क्षेत्र के लोगों के प्रति जो लगाव है, अपने राजनीतिक जीवन में सफलतापूर्वक उन्होंने निर्वाह किया है। श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया जी दो बार विधायक रहे। बिलासपुर सिविल कोर्ट में वकालत करते थे और लगभग हम लोग साथ में वकालत किये हैं। जब विधायक रहे तो एक जनप्रतिनिधि के रूप में उन्होंने काम किया और उसके साथ ही साथ में कि बाबा गुरूघासीदास जी के अनुयायी के रूप में कि समाज में

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समरसता, समाज में शांति और ऐसे लोगों की सेवा कैसे कर सके? वकालत का व्यवसाय करते हुए अपने जीवन में उन्होंने उस बात को निभाने का पूरे जीवन में प्रयास किया। श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी सक्ती राजपरिवार से जुड़े हुए दो बार विधायक रहे। ऐसा उनको नहीं लगता था कि वह आदमी राजपरिवार से जुड़ा हुआ है बल्कि एक सामान्य परिवार का व्यक्ति, लोगों के साथ में उनका संबंध, लोगों के साथ में उनका व्यवहार और खासकर के उस क्षेत्र में जो अनुसूचित जनजाति बाकी लोगों के साथ उनकी समस्याओं का निराकरण कैसे हो सके? सामान्य लोगों के बीच में जाकर के, उनके साथ में क्रिकेट खेल लेना, टी शर्ट पहनकर के जाकर के उनके साथ में चौक चौराहों में बैठकर के बातचीत करना, मतलब अपने जीवनकाल में उन्होंने कभी यह प्रदर्शित होने नहीं दिया कि मैं एक राजपरिवार से संबंधित हूं बल्कि उन्होंने अपने जीवन में इस बात का निर्वाह किया कि मैं एक सामान्य परिवार के व्यक्ति ऐसे लोगों के बीच में एक आभास उन्होंने जीवन में कराये और उनका सेवा किया। निश्चित रूप से ऐसे महान आत्माओं के जाने से हमने उन सबको खोया है। हमारे लिए दुख की बात है। मैं भारतीय जनता पार्टी विधायक दल की ओर से उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और भगवान से मैं कामना करता हूं कि उन सभी आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दे।

श्री अरविन्द

अरविंद\08-01-2019\a13\11.15-11.20

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ माटी के सपूत स्वर्गवासी हो गए हैं। हम अभी यहां पर उनको श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए खड़े हुए हैं। मोहन भैय्या दुर्ग लोकसभा के सांसद थे। प्रभुनारायण त्रिपाठी जी एक बहुत ही दमदार गृहमंत्री के रूप में उनकी पहचान थी। वे वैसे गृहमंत्री थे कि उनके बिना जानकारी के नियुक्ति नहीं हो पाती थी और न ही कोई ट्रांसफर हो पाता था। वे अपने विभाग के बहुत ही प्रभावी मंत्री के रूप में मध्यप्रदेश में उनकी पहचान थी। शिवराज सिंह उसारे साहब हमारे संग इस सदन में सदस्य रहे हैं। वे यहां गरीबों की आवाज उठाते रहे हैं। रामेश्वर कोसरिया जी मुंगेली के विधायक रहे और कांग्रेस पार्टी से बिलासपुर लोकसभा का चुनाव भी लड़े थे। उनके पिता भी मंत्री रहे थे। उन्होंने गरीबों की सेवा करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी सक्ती के राजा साहब, वे भी विधायक के रूप मे अपने क्षेत्र की सेवा किए। इन सभी ने छत्तीसगढ़ के निर्माण में, यहां के गरीबों की आवाज उठाने में, यहां की समस्याओं के निराकरण कराने में अपना-अपना योगदान दिया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से एक और नाम का जिक्र करना चाहता हूँ। जिसे मैं रोक नहीं पा रहा हूँ। श्री श्याम लाल चतुर्वेदी जी, बहुत पुराने नेता पक्ष और विपक्ष के सारे लोग उनका सम्मान करते थे। उन्हें पदमश्री भी मिला हुआ है। उन्होंने अपना पूरा जीवन पत्रकारिता को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समर्पित किया। उन्होंने बहुत ही सादगीपूर्ण जीवना जीया। आज वह भी हमारे बीच नहीं हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि इन पांच के अलावे छठवां नाम आसंदी अपनी तरफ से जोड़े और उन्हें भी सदन की ओर से श्रद्धांजलि दी जानी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है, यह परम्परा है कि विधानसभा के अंदर जो विधायक रहते हैं, जो दिवंगत होते हैं और जो सांसद रहते हैं, उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन तो छत्तीसगढ़ की माटी का है। अगर इस सदन में हमारी कोई विभूति दिवंगत हों, तो उन्हें सम्मान देने पर किन्हीं नियमों को आड़े नहीं आने देना चाहिए। मैंने पहले दिन ही आपसे कहा था कि सिर्फ और सिर्फ नियमों से सदन नहीं चलेगा। बल्कि कुछ परम्परा भी आपके द्वारा स्थापना की जानी चाहिए। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि छत्तीसगढ़ अंचल के, छत्तीसगढ़ प्रदेश के जितने भी यशस्वी, नामी-गिरामी और महान पुरूष हैं, अगर वे दिवंगत होते हैं और हम यहां उनके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं, तो निश्चित रूप से हमको प्रेरणा मिलेगी और इस प्रदेश को प्रेरणा मिलेगी और उनके रास्ते पर चलने का हमें रास्ता मिलेगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप विशेषाधिकार का प्रयोग करें और छठवें नाम के रूप में श्री श्यामलाल चतुर्वेदी जी का भी नाम उसमें शामिल करके इन सभी विभूतियों को अपनी श्रद्धासमुन अर्पित करना चाहते हैं। मैं इन सभी के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ। उनके महान कार्यों को स्मरण करता हूँ और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अपने दल की ओर से और सदन की ओर से भी निवेदन करता हूँ कि उन्हें श्रद्धांजलि दी जाए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. रमन सिंह जी।

डॉ0 रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दुर्ग के पूर्व सांसद मोहन लाल जिन्हें हम मोहन भैय्या के रूप में जानते हैं। जब हम लोगों ने राजनीति की शुरूआत की, उस दौर में एक व्यक्ति को देखा, जो अन्याय और अत्याचार के खिलाफ गरीबों, मजदूरों और किसानों के लिए हमेशा उपलब्ध रहने वाला ऐसा व्यक्ति जो उस दौर में हम लोगों के लिए मोहन भैय्या के नाम से जानते थे। हम लोग युवा मोर्चा में काम करते थे। हमने उनको देखा कि आपातकाल के विरोध में वे पूरी हिम्मत और ताकत के साथ उस अन्याय के खिलाफ लड़ते हुए 19 महीने आपातकाल में जेल में पूरी सजा काटने के बाद भी मुस्कारने वाला वह मोहन भैय्या जो पूरे छत्तीसगढ़ में न केवल दुर्ग के सांसद के नाते, बल्कि जहां भी संकट आता था, पूरे छत्तीसगढ़ में कहीं भी मोहन भैय्या की उपस्थिति होती थी। मैं उनका एक वाकया बताना चाहता हूँ कि वे कैसे विनोदी भी थे और उनके अंदर कैसे आक्रमकता भी थी। एक महामहिम दुर्ग पहुंचे और भिलाई के सर्किट हाऊस में मोहन भैय्या वहां पहुंच गए। मोहन भैय्या के वहां पहुंचने बोले कि तुम्हें किसने बुलाया ? कैसे आ गए मोहन भैय्या ?

...........जारी श्री अग्रवाल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अग्रवाल\08-01-2019\a14\11.20-25

जारी...डॉ. रमन सिंह :- कैसे आ गए । मोहन भैया ने कहा कि मुझे दुर्ग-भिलाई के मुर्गों ने बुलाया है । तुम जब-जब आते हो, यहां के मुर्गे साफ हो जाते हैं तो कृपा करके शाकाहारी बनिए, ये बताने आया है मोहन भैया । ऐसे दृढ़ता के साथ वहां जाकर अपनी बात रखने वाला मोहन भैया, जो हर आन्दोलन की अगुवाई करने वाले मोहन भैया । निश्चित रूप से उनके जाने से हम सबको क्षति हुई है । 1977 में सांसद की हैसियत से उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रभुनारायण त्रिपाठी जी सरगुजा जिले के और एक मजबूत विधि-विधायी और गृहमंत्री के रूप में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका हमने देखी और शिवराज उसारे को हम सबने 2008 से 2013 के बीच एक विनम्र, सीधे-साधे, अपने क्षेत्र में लगातार सक्रिय रहने वाले ऐसे विधायक के रूप में देखा, जो कभी जोर से बोलना नहीं जानता, अधिकारियों से भी जोर से बात नहीं करता, मगर अपने क्षेत्र में उसकी लोकप्रियता, लोगों से उसका जुड़ाव, उसारे जी को निश्चित रूप से हम हमेशा याद रखेंगे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रामेश्वर प्रसाद जी का निधन हम सबके लिए दु:खद है । पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी का निधन निश्चित रूप से अविभाजित मध्यप्रदेश के एक विधायक के नाते एक अच्छे स्पोर्ट्समेन के नाते, बहुत अच्छे खिलाड़ी और उन्होंने सभी क्षेत्रों की विशेषज्ञता हासिल की थी, ऐसे पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी के प्रति श्रद्धांजलि देते हैं । हम स्वर्गीय श्यामलाल चतुर्वेदी जी को याद कर रहे हैं, जो पद्मश्री, छत्तीसगढ़ भाषा आयोग के अध्यक्ष और छत्तीसगढ़ी भाषा को, बोली को, उसकी मधुरता को, उसके मिठास को निश्चित रूप से पूरे छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ के बाहर पहुंचाने में लगातार जीवन भर सक्रिय रहे, उसके लिए उन्होंने पूरा जीवन समर्पित किया। सभी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए मैं प्रार्थना करता हूं और आपने जो विषय रखा, उसमें मैं अपनी सहमति व्यक्त करता हूं ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, प्रथम दिवस दिवंगत सक्रिय राजनीति के पुरोधाओं को श्रद्धा सुमन अर्पित करने का वक्त है। मोहन भैया के साथ तो हम लोगों ने काम किया है । 1977-78 में पूरे देश में जनता पार्टी की लहर में उन्होंने दुर्ग लोकसभा का प्रतिनिधित्व किया था । मोहन भैया जी गरीबों के साथ हमेशा खड़े रहते थे । दुर्ग की राजनीति में पार्टी से परे हटकर भी उन्होंने अनेक बार आन्दोलनों का नेतृत्व किया था । 1977-78 में मैं दुर्ग साइंस कालेज के स्टूडेन्ट यूनियन में चुनाव लड़ा था, प्रेसीडेन्ट था और वे उस जमाने में सांसद हुआ करते थे । माननीय बीजू पटनायक जी स्टील मिनिस्टर थे । हम लोगों ने स्थानीय लोगों को रोजगार देने के संदर्भ में वहां आन्दोलन किया था । ये सांसद जनता पार्टी के थे, जनता पार्टी की सरकार थी और जब हम लोग

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

आन्दोलन करने के लिए सड़कों पर निकले थे तो मोहन भैया हमारे साथ ही सड़कों पर निकल गए थे तो वे हमेशा नौजवानों को, गरीबों को इनकी मदद हमेशा दुर्ग जिले की राजनीति में मिलती रही ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रभु नारायण त्रिपाठी जी 1977 के कार्यकाल में अम्बिकापुर का प्रतिनिधित्व करते थे । उस जमाने में पूरा विश्वविद्यालय एक हुआ करता था तो हम लोग अम्बिकापुर भी जाया करते थे, माननीय बृजमोहन जी हैं । छात्र राजनीति में इनसे हमारी मुलाकात होती थी । सौभाग्य से अम्बिकापुर में इनकी पार्टी में आदरणीय रवि त्रिपाठी जी विधायक भी बन गए थे, जो स्वर्गीय हो गए, वे इस सदन के सदस्य थे । ये उन्हीं के परिवार से थे तो हम लोगों का खूब आना-जाना हुआ करता था । इनका भी निधन छत्तीसगढ़ की अपूरणीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, भाई उसारे जी के साथ तो इसी सदन में हम लोगों को बैठने का सौभाग्य मिला था, वे ट्राईवल क्षेत्र से आते थे, सुदूर अंचल से आते थे और जैसा कि अभी आपने कहा, हमने तो जोर से बोलते हुए इनको देखा तक नहीं। नाराज होते भी नहीं देखा । वे एक कार्यकाल विधान सभा में बैठे, अपने क्षेत्र के लिए समर्पित रहते थे, आदिवासियों के लिए समर्पित रहते थे, विकास की चिन्ता करते थे और निश्चित रूप से उनका असामयिक रूप से जाना, ये तो अकल्पनीय है कि इसी सदन में हमारे साथ नये छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद बैठे और उनके जाने की शुरूआत हो गई तो मुझे ऐसा लगता है कि इनका जाना हम सब लोगों के लिए अपूरणीय क्षति है । माननीय रामेश्वर कोसरिया जी...

जारी...श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\a15\11.25-11.30

जारी.....श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय रामेश्वर कोसरिया जी, यह भी 1977 में मुंगेली से प्रतिनिधित्व किये । अनुसूचित जाति से थे, निश्चित रूप से जनसेवा इनका माध्यम था । पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी के साथ भी मध्यप्रदेश विधान सभा में हम लोगों को बैठने का अवसर मिला था । माननीय अध्यक्ष महोदय, हालांकि वह राजघराना के थे । सदन के अंदर मौजूद रहते थे तो कभी लगता नहीं था । बहुत ज्यादा बोलने वाले तो थे नहीं, लेकिन लोगों से जब बैठा करते थे, ऐसा लगता था, क्षेत्र की चिंता, किसानों की चिन्ता, गरीबों की चिन्ता उनके मन में थी । आदरणीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ विधान सभा इन सारे दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता है । हमारे आदरणीय नेताओं के दल की भावनाओं के साथ, हम लोग भी उसमें शामिल होकर सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजीत जोगी (मरवाही) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश के 6 महान विभूतियों को हम अपनी श्रद्धांजलि दे रहे हैं । इन सभी से व्यक्तिगत रूप से मेरा परिचय था, मैं यह रेखांकित करके कह सकता हूं कि हमारे छत्तीसगढ़ के गौरव में इन सभी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया । सबका व्यक्तित्व अलग था, जैसा कि मोहन भईया को सबने कहा है, पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता, दुर्ग के सांसद के रूप में और उसके बाद भी जैसा सामान्य जीवन उन्होंने जीया, वह हम सब के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है । आदरणीय प्रभुनारायण जी त्रिपाठी, जब गृह मंत्री थे, उस समय मैं कलेक्टर रहा । मैंने उनकी प्रशासनिक क्षमता को बहुत नजदीक से देखा, मेरे जिले में भ्रमण के लिए कई बार आये ।

श्री शिवराज उसारे, मेरे समय में भी एम.एल.ए. रहे और अपने क्षेत्र के विकास के लिए इतने अधिक समर्पित थे कि राजनांदगांव जिले में शिवनाथ नदी पर कोई बांध नहीं बांधा जा सकता और वे बार-बार मुझसे जिद करते थे कि इतनी बड़ी नदी बह रही है, इतना पानी इस नदी से जा रहा है, आप कोई उपाय निकालिये और इसके पानी का उपयोग हम कर सकें । मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि श्री शिवराज उसारे के व्यक्तिगत प्रयासों से हम बांध तो नहीं बना सकते थे, डूब का क्षेत्र बहुत बड़ा था, पर एक बड़ा बराज बना है, जिससे पूरे क्षेत्र के लोगों को बहुत लाभ मिल रहा है । नदी में सदैव पानी रहता है और फिर उन्होंने जिद करके नदी के किनारे-किनारे बिजली भी लगा दी और उस पूरे क्षेत्र के लोग खुशहाल हो गये । मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि मोंगरा जलाशय का नाम उसारे जी के नाम से किया जाये, क्योंकि उसको बनाने का, बनने का पूरा श्रेय उन्हें जाता है ।

कोसरिया जी, सामाजिक रूप से वकील के रूप में और एक विधायक के रूप में हम सबसे उनका एक अंतरंग परिचय था । आमापारा में जो सतनाम भवन बना है, मैं उन दिनों रायपुर का कलेक्टर था, उनके प्रयासों से वह बहुत अच्छी जमीन सतनाम भवन के लिए दी गई । आज एक अच्छा सतनाम भवन कोसरिया जी के प्रयासों से वहां बना ।

जारी... श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\a16\.-.5

जारी श्री अजीत जोगी :- श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी सक्ती के पूर्व राजपरिवार से संबंधित रहे। बड़े ही सरल स्वभाव के थे और उनमें पूर्व राजपरिवार का होने का अहंकर कभी भी लक्षित नहीं हुआ। मैं अपने दल के नेता धर्मजीत सिंह जी के इस अनुरोध से सहमत हूं कि श्यामलाल चतुर्वेदी जी जो छत्तीसगढ़ी अस्मिता, सभ्यता, भाषा इन सबके संरक्षक थे और जैसी छत्तीसगढ़ी वह बोलते थे, मेरे अनुभव में पूरे छत्तीसगढ़ में आदरणीय श्यामलाल चतुर्वेदी जी और आदरणीय दिवंगत पवन दीवान जी इन दोनों लोगों से अच्छी छत्तीसगढ़ी, मीठी छत्तीसगढ़ी जो वास्तव में हमारी भाषा है इनसे बेहतर और कोई नहीं बोलता था। ऐसा कोई नियम नहीं है कि हम केवल पूर्व सांसदों या पूर्व विधायकों को ही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रद्धांजलि दें। हमारे राज्य में जो महान विभूतियां हुई हैं उनको हमें श्रद्धांजलि देने का अधिकार है इसलिए मैं अनुरोध करता हूं कि यह नाम भी आज की श्रद्धांजलि में जोड़ा जाए, धन्यवाद।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम कुल पांच विभूतियों का स्मरण कर रहे हैं जिनका संपूर्ण जीवन एक निष्काम कर्मयोगी की तरह बीता। अपने संसदीय सेवाकाल में उन्होंने जो कार्य किए हैं मैं समझता हूं कि आगे आने वाली पीढ़ी के लिए वह हमेशा प्रेरणादायी रहेंगे।

श्री मोहनलाल जी जो हमारे दुर्ग के सांसद थे, उनको अंतिम समय तक पूरे प्रदेश और दुर्ग में मोहन भैय्या के नाम से ही जाना गया। अभी हम उनका स्मरण कर रहे थे। उन्होंने हमेशा अपना जीवन आम आदमी की तरह जीया। मुझे इस बात का स्मरण होता है कि सन् 1977 में जब वे सांसद बने, दुर्ग जिले में भयंकर अकाल की स्थिति निर्मित हो गई थी। उस समय मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी और हमारे पिता श्री मोतीलाल वोरा जी उस समय दुर्ग के विधायक थे। मोहन भैय्या पूरे जिले के किसानों को लेकर हमारे निवास पर पहुंच गए और बोले कि वोरा जी इनका आप हल निकालिये, इनको आप काम दीजिए। चाहे वह रिक्सा वाले हों, ठेला वाले हों, तांगा वाले हों उन सबको लेकर हमारे निवास पर पहुंचते थे और बोलते थे कि वोरा जी इनके साथ आप न्याय करिये, आप कर सकते हैं। मैं इस बात के लिए बचपन से उनको देखा करता था। उनके मन में गरीबों के प्रति जो एक लगन थी, गरीबों के प्रति काम करने का जो माद्दा था, मैं समझता हूं कि आज हम लोग जो इस सार्वजनिक जीवन में आये हैं हमको इस तरीके का कार्य करना चाहिए तभी हम सही मायने में जनप्रतिनिधि कहलाने के लायक हो सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी जी अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री रहे, उनका भी कार्यकाल स्मरणीय रहा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री शिवराज सिंह उसारे जी जो राजनांदगांव जिले के थे, उन्होंने आदिवासियों के हित के लिए हमेशा लड़ाई लड़ी और उसका फायदा भी उन्हें उन्होंने अपने कार्यकाल में दिलाया।

श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया जी अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे, उन्होंने भी जो कार्य किए हैं वह हम सबके बीच हैं।

श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी विधानसभा के पूर्व सदस्य हैं उनको भी मैं पुष्पांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ की महान विभूतियां जिनका जिक्र माननीय अजीत जोगी जी ने किया, श्री श्यामलाल चतुर्वेदी जी, उनका भी मैं स्मरण करता हूं क्योंकि छत्तीसगढ़ की भाखा को आगे बढ़ाने में उन्होंने जो योगदान दिया है मैं समझता हूं कि उन बातों को हमें अपने जीवन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में आत्मसात करना चाहिए और हमारे माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी जिन्होंने अभी पूरे प्रदेश को काफी कम समय में काफी ऊंचाईयों तक ले जाने का संकल्प लिया है, हम श्यामलाल चतुर्वेदी जी की भावनाओं का सम्मान करते हुए उनको सही सम्मान देंगे। मैं सभी दिवंगत आत्माओं को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री प्रमेश

प्रमेश\08-01-2019\a17\11.35-11.40

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री मोहन भैया लोकसभा के पूर्व सांसद, श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी जी, अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री, श्री शिवराज सिंह उसारे जी, छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व सदस्य, श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया अविभाजित मध्यप्रदेश् विधानसभा के पूर्व सदस्य, श्री पुष्पेंद्र बहादुर सिंह अविभाजित मध्यप्रदेश के विधानसभा सदस्य के निधन पर मैं अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रभु नारायण त्रिपाठी जी हमारे अंबिकापुर जिला सरगुजा के ही रहने वाले थे। उनका काम उनके काम करने की शैली लगन और उनका कर्मठता हमने बहुत करीब से देखा। वो जनसंघ से जुड़े हुए थे। भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में मध्यप्रदेश में मंत्री भी रहे। किस प्रकार से उन्होंने सादगीपूर्ण रहते हुए भी और लोगों के साथ अलग-अलग दल के रहने के बावजूद अपना संपर्क हमेशा स्थापित रखते थे। मैं उनके निधन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। श्री शिवराज सिंह उसारे जी हमारे विधानसभा के मेंबर थे, साथ में विधायक थे। बहुत ही सरल और सहज व्यक्तित्व के उसारे जी वास्तव में किस प्रकार से एक आदिवासी अंचल से एक सुदूर अंचल से जीतकर आने के बाद और अपनी बातों को कैसे रखना है, उसको हमको बहुत करीब से देखने का मौका मिला। आज वो हमारे बीच नहीं रहे उनको मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और जितने हमारे दिवंगत माननीय मोहन भैया, प्रभुनारायण जी, शिवराज सिंह जी, रामेश्वर प्रसाद जी, पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह सबके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं।

श्री दलेश्वर साहू :- सभी दिवंगत नेता को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। श्री शिवराज उसारे मेरे ही जिला के हैं और सन् 1994 में जिला पंचायत के सदस्य रहे मेरे साथ में और वो आदिवासी नेता थे। पेंड्रीमेटा के निवासी और बहुत सरल स्वभाव और उनकी सादगी तो बहुत ही उनके जीवन का एक अंग था और 2008 में विधानसभा का सदस्य भी रहा। ऐसे व्यक्ति हमारे बीच नहीं है और आज भी नहीं रहना हमारे आदिवासियों के लिए और हम लोग को हमेशा दिशा निर्देश दिया करते थे और वो बीच में पार्टी भी बदल दिया था भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गये थे तो ऐसे एक बहुत सादगी नेता को मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय मोहन भैया लोकसभा के पूर्व सांसद, श्री प्रभु नारायण त्रिपाठी जी अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री, श्री शिवराज सिंह उसारे जी छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व सदस्य तीसरी विधानसभा में हमारे साथ सदस्य थे और इधर हमारे साथ बैठते थे। उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। रामेश्वर प्रसाद कोसरिया जी अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व विधानसभा के सदस्य। आदरणीय पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा के पूर्व सदस्य हमारे जिल जांजगीर से विधायक चुने गये थे शक्ति विधानसभा क्षेत्र से दो बार विधायक थे । मेरे पिता जी के बहुत अभिन्न मित्र थे और 1972 में पहली बार निर्दलीय विधायक के रूप में जीते थे। मुझे बहुत अच्छे से याद है कि अपनी दादी के खिलाफ कांग्रेस पार्टी के सदस्य के खिलाफ चुनाव लड़े थे। वो कांग्रेस की विधायक होती थी और उनके खिलाफ चुनाव लड़ के निर्दलीय वो चुनाव जीते थे और उनका छाप इंजन छाप था। मेरे पिता जी के मित्र थे मुझे अच्छे से याद है और हर चुनाव में वाकई वो उनके साथ मजाक में आता था कि वो चुनाव लड़े। शुरू के राउन्ड के काउंटिंग में वो ट्रेल कर रहे थे तो वहां से निकल के चले गये वो गायब हो गये और अकलतरा विधानसभा क्षेत्र और सक्ति विधानसभा क्षेत्र के अगल बगल काउंटिग हो रही थी और मेरे बड़े पिताजी चुनाव लड़ रहे थे। अब वो गायब हो गये उसके बाद उनको खोज रहे थे वो जीत गये और उनको खोज रहे थे वो कहां गये कहां गये। बाद में एकात डेड़ घंटे बाद हमारे घर में वो मिले उनको पकड़ के रैली निकाली गई वो हर बार इस बात को याद करते थे कि ऐसा चुनाव हुआ। खरसिया के चुनाव में 1988 में जब कुमार दिलीप सिंह जूदेव जी जब खरसिया में चुनाव लड़े। सक्ति और खरसिया अगल-बगल के विधानसभा क्षेत्र था तो पुष्पेंद्र बहादुर सिंह जी ने बहुत सक्रिय भूमिका निभाई उसमें और उसके बाद जब जांजगीर लोकसभा का चुनाव कुमार दिलीप सिंह जूदेव जब लड़े तो वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए। ...जारी श्रीमती सविता

सविता\08-01-2019\a18\11.40-11.45

.......जारी श्री सौरभ सिंह :- और उसके बाद जब जांजगीर लोकसभा का चुनाव कुमार दिलीप सिंह जूदेव लड़े तो वे भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए और वर्ष 1990 में वे भारतीय जनता पार्टी के सक्ती विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गए। उनको वाइल्ड लाईफ का विशेष शौक था, फोटोग्राफी करते थे। वे पूरी दुनिया के राष्ट्रीय उद्यानों में गये थे, देखे थे, फोटोग्राफी की थी। वे राजकुमार कॉलेज में पढ़े, राजकुमार कॉलेज के मैनेजिंग कमेटी के भी सदस्य थे। उनको मैं अकलतरा विधानसभा क्षेत्र जांजगीर-चांपा जिले की तरफ से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय श्याम लाल चतुर्वेदी जी, इस सदन के बहुत सारे सदस्य नहीं जानते कि वे हमारे जांजगीर जिले के ही निवासी थे। उनका कोटमी सोनार में जन्म हुआ, आज जो कोटमी सोनार क्रोकोडाईल पार्क के नाम से जाना जाता है, वह पहले श्याम लाल चतुर्वेदी जी के नाम से

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जाना जाता था। वे 20 साल तक उस गांव के निर्विरोध, निर्वाचित सरपंच थे। फिर उसके बाद वे पत्रकारिता के क्षेत्र में गये, बिलासपुर गये और अपने एक नये मुकाम को चुना। मैं उनको भी जांजगीर जिले और अकलतरा विधान सभा क्षेत्र की तरफ से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजैपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आज इस सदन में पॉच जनप्रतिनिधि मन ला श्रद्धांजलि देथन। जेमन अपन समय मा जनता मन के प्रतिनिधि बनकर जनता मन ला न्याय दिलाये बर, लगातार संघर्ष करिन। स्वर्गीय श्री मोहन भैया, लोक सभा के पूर्व सांसद, श्री प्रभुनारायण त्रिपाठी जी, अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री, श्री शिवराज सिंह उसारे जी, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री रामेश्वर प्रसाद कोसरिया जी, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री पुष्पेन्द्र बहादुर सिंह जी, सक्ती राजपरिवार के अउ दो-दो बार विधायक रिहिन अउ आज वही विधान सभा ले जेमा वे जीतकर गये रिहिन हे, आप भी चुनाव जीतकर आए हवव।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री श्याम लाल चतुर्वेदी जी, जो छत्तीसगढ़ी भाखा ला बढ़ाए बर अउ छत्तीसगढ़ी भाखा ला सम्मान दिलाए बर अपन योगदान दीन, मैं अइसे तमाम् महान विभूति मन ला अपन तरफ से, अपन दल के तरफ से अउ सदन के तरफ से श्रद्धासुमन अर्पित करत हव। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- मैं इस सदन की पुरानी व्यवस्था से अपने आप को हटाते हुए, इसमें आदरणीय श्याम लाल चतुर्वेदी जी का भी नाम शामिल करना चाहूंगा। क्योंकि वे छत्तीसगढ़ के महान सपूत थे, छत्तीसगढ़ की अस्मिता के प्रतीक थे और मेरे ख्याल से वे अंतिम पीढ़ी है इसलिए मैं भी उन्हें अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ और आप सभी की भावनाओं को ध्यान रखते हुए, अपने को व्यक्तिगत संबद्ध करता हूँ और सदन की ओर से पूरे शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। दिवंगत व्यक्तियों के सम्मान में अब दो मिनट का मौन धारण करेंगे।

(सदन द्वारा खड़े रहकर दो मिनट का मौन धारण किया गया.)

अध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही दिवंगतों के सम्मान में 5 मिनट के लिए स्थगित।

(11.46 बजे से 11.57 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

श्री चौधरी

चौधरी\08-01-2019\a19\11.55-11.60

समय :

11.57 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल केन्द्र की सरकार ने और माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 10 प्रतिशत सवर्णों को आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए आरक्षण की घोषणा की है, उससे पूरे देश में हर्ष व्याप्त है। हम पूरे छत्तीसगढ़ के निवासी इसके लिए उनका अभिनंदन करते हैं, उनका स्वागत करते हैं। (मेजों की थपथपाहट) हम चाहेंगे कि इस विधानसभा की तरफ से भी इसके लिए केन्द्र की सरकार को धन्यवाद देना चाहिए। ... (व्यवधान)...

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चला-चली की बेला में आरक्षण किया है। उनकी नीयत साफ होती तो पहले ही ले आते।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- 4 साल क्या कर रहे थे?

श्री बृहस्पत सिंह :- यह तो जुमला है, 5 साल याद नहीं आया, सरकार के कार्यकाल की समाप्ति में याद आया।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं धन्यवाद दे देता हूं जैसे माननीय प्रधानमंत्री जी की घोषणा की बात आपने कही, उनका नाम तो नहीं उल्लेख करना था, लेकिन जैसे उन्होंने हमारे खाते में 15 लाख दिये, वैसे धन्यवाद दे देता हूं, जैसे उन्होंने स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करके डेढ़ गुना किये, उसको भी धन्यवाद दे देता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप संसदीय कार्यमंत्री हैं, आपको तो कम कम से सदन में इस प्रकार की बात नहीं करनी चाहिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- जैसे बृजमोहन जी ने कहा, ये चुनाव के समय सवर्ण आरक्षण, ये उसी प्रकार धन्यवाद करेगा।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- आप इसके पक्ष में हैं या नहीं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप क्या चाहते हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप यह बताईये कि 10 प्रतिशत आरक्षण होना चाहिए या नहीं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- आप ये बताईये कि 15 लाख मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, शांत हो जाईये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप यह बताईये कि 10 प्रतिशत सवर्णों को आरक्षण होना चाहिए या नहीं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में उन किसी बातों का उल्लेख नहीं होना चाहिए, आप उसको विलोपित कराईये। आप यहां कैसे प्रधानमंत्री जी की बात को धन्यवाद देंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप यह बता दीजिए कि इस आरक्षण के पक्ष में हैं या नहीं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- हॉ मैं बता देता हूं न।

अध्यक्ष महोदय :- कृपया शांत हो जाईये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप धन्यवाद देने खड़े हुए हैं, इसके पक्ष में हैं या नहीं ? क्या आप इसके विरोध में हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अग्रवाल जी, शांत हो जाईये।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 लाख रुपया हमारे खाते में आये, हम उसके पक्ष में हैं, किसानों की आमदनी डेढ़ गुना होना चाहिए, उसके पक्ष में हैं। अध्यक्ष जी, और कुछ नहीं कर पा रहे हैं। ... (व्यवधान) ..

श्री अजय चन्द्राकर :- आप घोषणा पत्र पढ़ लीजिए। क्यों गुमराह कर रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी, शांत हो जाईये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, इसको आप विलोपित कराईये।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल।

श्री बृहस्पत सिंह :- पहले काले धन के बारे में तो बता दीजिए।..(व्यवधान)..

श्री अमरजीत भगत :- सारे एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. को मिलाकर 50 प्रतिशत तक आरक्षण देने का नियम है, उसमें आप लोग नहीं कर सकते थे। ... (व्यवधान)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\b10\12.00-12.5

(व्यवधान)

समय :
12.00 बजे

कार्यमंत्रणा समिति का प्रतिवेदन

अध्यक्ष महोदय :- कार्यमंत्रणा समिति की बैठक सोमवार दिनांक-07 जनवरी, 2019 में लिये गये निर्णय अनुसार वित्तीय तथा अन्य कार्य पर चर्चा के लिये उनके सम्मुख अंकित समय निर्धारित करने की सिफारिश की गयी है ।

वित्तीय कार्य	**समय**
वित्तीय वर्ष 2018-19 के तृतीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा, मतदान एवं तत्संबंधी विनियोग विधेयक का पुर:स्थापन, विचार एवं पारण ।	03 घंटे
शासकीय संकल्प	**समय**
राज्य के मंत्री परिषद के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत किये जाने	30 मिनट

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हेतु संविधान में आवश्यक संशोधन किये जाने की पहल करने बाबत् संकल्प ।

अब इसके संबंध में श्री रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्यमंत्री प्रस्ताव करेंगे ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन कार्यमंत्रणा समिति के प्रतिवेदन में की गई सिफारिश को स्वीकृति देता है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि सदन कार्यमंत्रणा समिति के प्रतिवेदन में की गई सिफारिश को स्वीकृति देता है ।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा पाईंट ऑफ ऑर्डर है ।

अध्यक्ष महोदय :- अब अनुपूरक मांगों पर चर्चा होगी । परम्परानुसार सभी मांगें एक-साथ प्रस्तुत की जायेंगी ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- क्या पाईंट ऑफ ऑर्डर है ? (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- व्यवस्था का प्रश्न है । (व्यवधान)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- उसमें क्या पाईंट ऑफ ऑर्डर होगा ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा में कभी भी जब राज्यपाल जी का अभिभाषण प्रस्तुत हो गया हो तो पहले उस पर चर्चा होती है । हम पिछले 28 सालों से सदन के सदस्य हैं । मध्यप्रदेश की विधानसभा में, छत्तीसगढ़ की विधानसभा में राज्यपाल जी का अभिभाषण यदि प्रस्तुत हो गया है तो पहले उस पर चर्चा होगी और राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा होने के बाद फिर अनुपूरक मांगों पर चर्चा होगी परंतु सदन में यह गलत परम्परा प्रारंभ की जा रही है और कम से कम आपके नेतृत्व में तो सदन की गलत परंपराएं जारी नहीं होनी चाहिए, जो परम्पराएं हैं वह टूटनी नहीं चाहिए और इसलिये हम चाहेंगे कि राज्यपाल जी के अभिभाषण पर पहले चर्चा हो और बाद में अनुपूरक पर चर्चा हो । अन्यथा इस सदन की जो पिछले 30 सालों की जो परम्पराएं हैं उन परम्पराओं को हम जीवित रख पायेंगे और छत्तीसगढ़ सदन की जो उच्च परम्पराएं हैं उसको भी हम जीवित रख पायेंगे । मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप इसको स्थगित करके पहले आप राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा करवायें और बाद में अनुपूरक अनुमान पर चर्चा करवायें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पाईंट ऑफ ऑर्डर पर आपकी व्यवस्था आ जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं दे रहा हूं ।

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष जी के आदेश को चुनौती नहीं देते । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- हम पाईंट ऑफ ऑर्डर पर बोलना चाहते हैं । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- श्री अजय भैया, आप बीपी की गोली खाकर आये हैं कि नहीं आये हैं ?

श्री अजय चंद्राकर :- व्यवस्था नहीं आयी है न ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं व्यवस्था देता हूं न । मैं व्यवस्था दे रहा हूं तब तक सुन तो लो । उनका कौन सा पाईंट ऑफ ऑर्डर है ?

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था देने से पहले आप मुझे सुन लें ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस विषय पर बोलना है। श्री बृजमोहन जी ने पाईंट ऑर्डर की बात कही । आपका संरक्षण चाहिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शासन की तरफ से तो बाद में उत्तर आयेगा । पहले आप इनको सुन लें, बाद में शासन जो कहना चाहे लेकिन पहले हमारे जो सदस्य इस संबंध में जो कहना चाहते हैं उनकी बात आप सुन लें । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप पाईंट ऑफ ऑर्डर की बात करेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने पाईंट ऑफ ऑर्डर की बात की है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसी पर बोलना चाहता हूं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- श्री अजय भैया, आप बीपी की गोली खाकर आये हैं न, आपके स्वास्थ्य का ध्यान हम लोगों को रखना पड़ेगा । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- यह सदन बहुत छोटा है, इतना तीखापन क्यों भई ?

श्री अमरजीत भगत :- श्री चंद्राकर जी, आप बिल्कुल बच्चों जैसे करते रहते हैं।

श्री अरूण वोरा :- श्री चंद्राकर जी, आप उत्तेजित मत होईए । कांग्रेस की सरकार है और कांग्रेस की सरकार सबके हित का सोचती है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिस दिन शपथ ली थी, उस दिन आपने अपने भाषण में कहा था कि मैं इस सदन की गरिमा..........जारी

.............श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\b11\11.55-11.60

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने जिस दिन शपथ ली थी, उस दिन आपने अपने भाषण में कहा था कि मैं इस सदन की गरिमा को और आगे ले जाउंगा ताकि यह सदन हिंदुस्तान में संसदीय परम्पराओं के लिए जाना जाए ।

अध्यक्ष महोदय :- जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ बनने के बाद कुछ कारणों से षडयंत्रपूर्वक, षडयंत्रपूर्वक इसलिए कहा क्योंकि आज की तारीख में कहीं पर कर्जामाफ नहीं हुआ है। (व्यवधान) पहले राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा होनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह किसानों से पूछ लो । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, हमें आपका संरक्षण चाहिए । पहले राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा हो और उसके बाद अन्य विषयों पर चर्चा होनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- किसानों का कर्जा माफ हो रहा है, इसलिए तकलीफ हो रही है । (व्यवधान) पहले ये इस्तीफा दें ।

अध्यक्ष महोदय :- संसदीय कार्यमंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- बीजेपी को तय करना चाहिए कि ये कर्ज माफी के पक्ष में हैं या खिलाफ में हैं ? किसानों के प्रति आप लोगों का दृष्टिकोण स्पष्ट होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- अरे, सुनो भाई । चौबे जी, आप बोलें ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अजय जी, प्रथम दिवस शुरूआत में इतनी उत्तेजना क्यों ?

श्री बृहस्पत सिंह :- आज बीपी की दवाई खाना भूल गए हैं । इसलिए उत्तेजना ज्यादा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उत्तेजना इसलिए है क्योंकि आप लोग प्रारंभ से ही षडयंत्र करने में लग गए हो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, आपके प्रति और आसंदी के प्रति धन्यवाद करते हुए आपनी बात कहता हूं । प्वाइंट ऑफ ऑर्डर माननीय बृजमोहन जी ने उठाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उनका जवाब दे रहा हूं, आप उसी की बात कह रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप प्वाइंट ऑफ ऑर्डर में व्यवस्था देंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- जी ।

श्री रविन्द्र चौबे :- लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि ये आज की अनुपूरक की चर्चा को रोकने का प्रयास क्यों कर रहे हैं ? 16 लाख किसानों के कर्ज माफ हुआ है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये राज्यपाल जी का अपमान है । (व्यवधान) राज्यपाल जी का अपमान हो रहा है । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन राज्यपाल जी के संरक्षण में चलता है और ये सदन राज्यपाल जी का अपमान करे, उनकी चर्चा को रोककर अनुपूरक पर चर्चा करवाए । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- प्रदेश में किसानों की बात कही जा रही है । (व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सरकार विरोधी नारे लगाए गए)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अपने सदन प्रारंभ किया । आपके दिशा निर्देश में सबसे पहले परसों 4 तारीख को महामहिम राज्यपाल जी का अभिभाषण हुआ । छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद जो परम्परा रही है । उसके अनुसार सबसे पहले राज्यपाल जी के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा होती है । उसके बाद में अन्य बिजनेस आएंगे । उसके बाद हम सिलसिलेवार आगे बढ़ेंगे । संसदीय कार्यमंत्री जी भी वरिष्ठ हैं । छत्तीसगढ़ विधान सभा की जो परम्परा रही है, उसका निर्वाह होना चाहिए । हम यह मानते हैं कि आसंदी पर आपके बैठने से छत्तीसगढ़ की ख्याति हिंदुस्तान ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान के बाहर भी जाए । लेकिन यदि हम उस परम्परा को तोड़कर आगे बढ़ेंगे तो मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है । इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूं कि पहले महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा हो और इस चर्चा के उपरांत फिर उसके बाद हम वित्त विधेयक और अन्य विषयों पर चर्चा करेंगे । हमें कभी भागना नहीं है, हमें कहीं जाना नहीं है । हम किसानों के खिलाफ नहीं हैं । बल्कि आपने जितनी व्यवस्था आपने की है, वह अधूरी है, हम चाहेंगे कि उससे ज्यादा व्यवस्था करें । हम पूरी चर्चा करेंगे इसलिए मैं आपसे आग्रह करता हूं कि पहले राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा करवाकर, सदन की परम्परा को कायम रखें ।

श्री रविन्द्र चौबे :- तो फिर आदरणीय नेता प्रतिपक्ष की अनुपूरक पर अपनी बात कहें, उसे रोकने का प्रयास क्यों हो रहा है ? आप कर्ज माफी की चर्चा नहीं करेंगे ? आप किसानों की चर्चा नहीं करेंगे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- हम सबमें चर्चा करेंगे लेकिन पहले अभिभाषण पर चर्चा करेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- रोकने की बात नहीं हो रही है लेकिन बात परम्परा की हो रही है । आप संसदीय कार्यमंत्री हैं, आप बताइए आप इससे सहमत हैं क्या ? ऐसा कभी हुआ है क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- हां, मैं बता रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी ।

--- श्री ठाकुर -

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ठाकुर\08-01-2019\b12\12.15-12.20

श्री रविन्द्र चौबे:- हां, मैं बता रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय:- धर्मजीत जी।

श्री रविन्द्र चौबे:- माननीय अध्यक्ष जी किसानों का कर्जा माफ वो भी छ: हजार एक सौ करोड़। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय:- धर्मजीत जी।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- माननीय अध्यक्ष जी। मैंने पाइण्ट ऑफ आर्डर उठाया था।

अध्यक्ष महोदय:- हां आपका पहले। सत्यनारायण जी।

श्री अजय चंद्राकर:- अभी एक पर चर्चा हो रही है।

अध्यक्ष महोदय:- हां-हां, मैं व्यवस्था दे रहा हूं। सत्यनारायण जी।

सत्यनारायण शर्मा:- माननीय अध्यक्ष जी आपने आसंदी से कार्य मंत्रणा समिति का प्रस्ताव रखा। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी ने उसे अपना प्रस्ताव रखकर के पहले तो इसमें फैसला होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- उसी पर हो रहा है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- कार्य मंत्रणा समिति की सिफारिशों को स्वीकार करें और कार्य मंत्रणा समिति में जो सिक्वेंश है, उसको देख लीजिए।

श्री अजय चंद्राकर:- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि परंपरा के खिलाफ बोला जाए तो एक व्यवस्था दीजिए, यदि उसमें सदन की सहमति हो । ....व्यवधान

सत्यनारायण शर्मा:- उसी हिसाब से तो आप बीच में आए हैं।

अध्यक्ष महोदय:- मैं व्यवस्था दे रहा हूं न। आप बैठिए।

डॉ. शिव कुमार डहरिया:- अजय भाई। आपके नेता जी ने सहमति दी है। आप क्यों विरोध में खड़े हो जाते हो हर बार । आपके नेता जी का अपमान करते हो हर बार। आपके नेता जी ने सहमति दी है, उसी का अपमान करने लग जाते हो आप।

अध्यक्ष महोदय:- धर्मजीत जी, आप अपनी बात कहें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- राज्यपाल के अभिभाषण पर कार्य मंत्रणा में चर्चा नहीं होती है, उसके लिए सदन होता है। उसमें विवाद है ही नहीं। विवाद किस बात पर है उसको समझिये ।

श्री रविन्द्र चौबे:- अध्यक्ष जी, माननीय बृजमोहन जी ने बहुत अच्छा पाइण्ट ऑफ आर्डर रेज किया है। ये कोई परंपरा तोड़ने की घटना नहीं है। 2010 में जो आज कह रहे हैं वो इधर बैठते थे और इसी परंपरा का पालन हुआ था। इस समय भी गवर्नर एड्रेस के पहले चर्चा हुई थी। आप निकलवा के देखवा लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय:- मैं व्यवस्था देख रहा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे:- ऐसा नहीं है। आप किसानों की कर्जा माफी क्यों रोक रहे हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- अरे, 60 साल में एक बार हुआ? आज हम क्यों तोड़ रहे है ? ....(व्यवधान) उसको बार-बार थोड़े ही करना है ।

अध्यक्ष महोदय:- सब शांत हो जाइए।

श्री अजय चंद्राकर:- माननीय संसदीय मंत्री जी अगर परंपरा टुटी तो आप लोग क्या कर रहे थे ? आप लोग उस समय क्या कर रहे थे ?

श्री रविन्द्र चौबे:- इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था के प्रश्न में व्यवस्था दीजिए और आगे बढ़िए।

अध्यक्ष महोदय:- मैं दे रहा हूं। मैं दे रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- आप 2010 की बात कर रहे हैं तो फिर विधानसभा की कार्यवाही निकालिए। ऐसा क्यों किया गया था ?

श्री रविन्द्र चौबे:- हां, मैं बता देता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- किस कारण से किया गया था ?

श्री रविन्द्र चौबे:- मैं बता देता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- आखिर क्यों किया गया था? क्योंकि इम्जेप्शनल केस हमेशा होते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे:- हां-हां, मैं बता देता हूं न। अध्यक्ष जी, उससे भी जो महत्वपूर्ण कारण जो आज है। हम पूरे प्रदेश के किसानों की कर्जा माफ कर रहे हैं। (मेजो की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- कर्जा माफी राज्यपाल के अभिभाषण में है। आप राज्यपाल का अपमान कर रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे:- उससे भी महत्वपूर्ण कारण है।...........(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय:- धर्मजीत जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- आप दो मिनट बैठे।

अध्यक्ष महोदय:- मैं खड़ा हो गया हूं। नहीं, मैं खड़ा हो गया हूं।

श्री सत्यनारायण सिंह:- ये बहिर्गमन करने के पहले की भूमिका है।

अध्यक्ष महोदय:- मैं व्यवस्था दे रहा हूं। आप शांत रहिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, इनका चुनाव का गुस्सा अभी उतर नहीं पाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यों ने माननीय राज्यपाल का अभिभाषण प्रस्तुत होने के पश्चात उस पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा न कराते हुए पहले अनुपूरक अनुमान पर चर्चा कराने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पर आपत्ति की है। इस संबंध में मेरी यह व्यवस्था है कि अनुपूरक अनुमान पर चर्चा हेतु मैंने दिनांक 08 जनवरी, 2019 की तिथि तथा कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा हेतु दिनांक 09,10 एवं 11 जनवरी, 2019 को चर्चा कराये जाने की तिथि घोषित की गई है। तदनुसार आज की कार्यवाही............................

जारी श्री अरविंद देवांगन

अरविंद\08-01-2019\b13\12.15-12.20

जारी अध्यक्ष महोदय :- तदनुसार आज की कार्यवाही में अनुपूरक अनुमान पर चर्चा रखी गई है। जहां तक माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा के पूर्व अनुपूरक अनुमान पर चर्चा कराने का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में पूर्व में भी व्यवस्थाएं हैं कि माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा के पूर्व अनुपूरक अनुमान पर चर्चा की गई है। इसलिए आपकी व्यवस्था के प्रश्न को अमान्य करता हूँ। (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरा पाईण्ट आफ आर्डर है।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- आपको अध्यक्ष जी के व्यवस्था के खिलाफ नहीं बोलना है। ध्यान रखो।

अध्यक्ष महोदय :- अब मैं अनुपूरक अनुमान पर चर्चा हेतु परम्रानुसार सभी मांगें एक साथ प्रस्तुत की जाती है और उस पर एक साथ चर्चा होती है। अत: मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से कहूंगा कि सभी मांगें एक साथ प्रस्तुत करें। मैं समझता हूँ कि सदन इससे सहमत होगा।

सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- अध्यक्ष जी, मैंने विशेषाधिकार भंग की सूचना दी है।

श्री अमरजीत भगत :- इसी प्रकार करते-करते तो आप उस पार पहुंच गए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय धर्मस्व मंत्री आदरणीय ताम्रध्वज साहू के खिलाफ मेरी विशेषाधिकार भंग की सूचना है। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह परम्परा रही है कि एक बार सत्र का नोटिफिकेशन होने के पश्चात किसी भी नीतिगत विषय पर कोई भी मंत्री सदन के बाहर घोषणा नहीं करता है।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये आपने आज सूचना दी है न ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी बात तो सुन लीजिये। मैंने सूचना 9 बजे के पहले दी है।

अध्यक्ष महोदय :- अभी सचिवालय में प्राप्त हुई है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- मुझे सूचना उठाने का अवसर है।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, मेरे पास जो विचाराधीन है, आप उस पर इतनी बहस नहीं कर सकते।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, सदन में आपको सुनना पड़ेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, आप सुनने के बाद व्यवस्था दीजिये न।

अध्यक्ष महोदय :- विशेषाधिकार का प्रस्ताव आज आया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप सुन लीजिये, आप माननीय सदस्य को सुन लीजिये और सुनने के बाद निर्णय दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उस पर विचार कर रहा हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप सदस्य को सुन लीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- मेरे सचिवालय में अभी मिला है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सुबह 9 बजे के पहले दिया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 9 बजे के पहले लगा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- 9 बजे के पहले मेरा स्टाफ आ गया था। आप सुन लीजिये, उसके बाद व्यवस्था दें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप सुन लें। उसके बाद निर्णय करें, हमें कोई दिक्कत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल जी, प्लीज-प्लीज। इतना तीखा व्यवहार मत कीजिये।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी ने सुन लिया।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। आप सुन लीजिये।

श्री मनोज मण्डवी :- आप लोग अभी से इतना गुस्सा क्यों कर रहे हो ?

एक माननीय सदस्य :- अभी से आप लोग इतना गुस्सा क्यों कर रहे हो ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन की अवमानना का विषय है। प्रदेश के धर्मस्व मंत्री आदरणीय ताम्रध्वज साहू जी ने इस सदन की अवमानना की है। उसके विरूद्ध मेरा विशेषाधिकार हनन का मामला है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, ठीक है, मैं कह रहा हूँ तो आप सुन तो लें।

श्री शिवरतन शर्मा :- नीतिगत रूप से कहा गया है कि जब सदन के सत्र का नोटिफिकेशन हो जाता है तो कोई भी सम्माननीय मंत्री नीतिगत विषयों पर सदन के बाहर घोषणा नहीं कर सकता। राजिम कुंभ मेला..........।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट, आप सुन तो लीजिये। मेरी व्यवस्था को सुन लीजिये। मेरी व्यवस्था सुन लीजिये। अभी 10 बजे सूचना दी है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने 9 बजे के पहले सूचना भेजी है। 9 बजे के पहले मेरी सूचना आ चुकी है।

अध्यक्ष महोदय :- 10 बजे आपकी सूचना प्राप्त हुई है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- मेरा पाईण्ट आफ आर्डर है। इन्होंने सूचना दी, आप उसका परीक्षण करेंगे। ये आप इसको पढ़ रहे हैं। आप उसको पढ़ नहीं सकते हैं। जब तक आप उसको मंजूर नहीं कर लेते, माननीय सदस्य उसको पढ़ नहीं सकते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- 9 बजे से पहले मेरा आदमी आया है। 10 बजे तक आपका स्टाफ नहीं था तो उसके लिए यहां दोषी नहीं है। 9 बजे के पहले हमारा स्टाफ आया है।

अध्यक्ष महोदय :- आपकी सूचना 10 बजे सचिवालय में प्राप्त हुई है, जो मैं विचार कर रहा हूँ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 10 बजे तक स्टाफ नहीं था। साढ़े आठ बजे से यहां बैठे थे। सूचना देने के पहले हमने कहा कि साढ़े आठ बजे से बैठे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर माननीय सदस्य अपने विषय पर कुछ कहना चाहते हैं तो आपको उसको सुनना चाहिए। निर्णय सर्वमान्य होगा। हम निर्णय को स्वीकार करेंगे। परन्तु सदन की अवमानना से संबंधित इतना महत्वपूर्ण विषय है, तो आप उसको सुन लें। सुनने के बाद आप जो निर्णय देंगे, उसको हम मानने के लिए तैयार हैं। हमें आपत्ति नहीं है। आप उनको सुन लें, सुनने के बाद आप जो निर्णय देंगे, हम उसे मानेंगे। परन्तु माननीय सदस्य पूरी बात कहना चाहते हैं कि विशेषाधिकार की सूचना क्यों दी है ?

अध्यक्ष महोदय :- अभी तक ऐसी कोई परम्परा नहीं रही है कि आप विचार करें।

श्री विनोद सेवन लाल चन्द्राकर :- विपक्ष पार्टी थोड़ा सा सुनिये। 15साल आपने कुछ काम नहीं किया, हमको काम करने दीजिये। आप लोग हर बात में आब्जेक्शन लगाकर के सदन को काम करने से वंचित कर रहे हो। शांति बनाए रखें,प्लीज।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप अपनी बात रखिये।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- वे खड़े ही रहेंगे, आप उधर बैठाईये।

अध्यक्ष महोदय :- आप शुरू करिये, वे बैठेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसको निरस्त कर दिया या स्वीकार कर लिया या कल बहस के लिए दे रहे हैं, कोई व्यवस्था नहीं आई। इसमें सिर्फ इतना कहा गया कि ......।

अध्यक्ष महोदय :- मैं निरस्त नहीं किया हूँ। मैं विचार कर रहा हूँ।

श्री अजय चन्द्राकर :- या बहस के लिए कोई समय निर्धारित कर रहे हैं, स्वीकार कर रहे हैं ? ....(व्यवधान)

.......श्री अग्रवाल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अग्रवाल\08-01-2019\b14\12.20-25 ....(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी को लग रहा है कि वे अभी भी संसदीय कार्यमंत्री हैं । पुराना ही याद कर रहे हैं । ....(व्यवधान)

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन नियम कानून से चलेगा, अब यहां कांग्रेस की सरकार है, बीजेपी की सरकार नहीं है ....(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मंत्री के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का मामला है ....(व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- चन्द्राकर जी को लग रहा है कि वे अभी भी मंत्री हैं। अब आप संसदीय कार्यमंत्री नहीं है, बैठ जाईए । संसदीय कार्यमंत्री इधर हैं । ....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आप ताकीद नहीं करेंगे तो यह सदन की अवमानना है और यह सदन की अवमानना से, सदन के सम्मान से जुड़ा हुआ मामला है क्योंकि ये सरकार नई-नई बनी है, अभी अनुभव नहीं है । मंत्री बाहर घोषणाएं कर रहे हैं ....(व्यवधान)

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- 60 सालों से हमारी सरकार है, इतिहास देख लीजिए, आप क्या बताओगे? ....(व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन जी, कांग्रेस पार्टी को 60 साल हो गए शासन में रहते हुए, उनको तो अभी 15 साल से ही शासन में रहे हैं, हमारी पार्टी, हमने तो 60 सालों से सरकार में रहे हैं, 60 सालों से राज कर रहे हैं... ....(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आप समय निर्धारित कर दीजिए कि हमारे विशेषाधिकार भंग की सूचना पर आप कब चर्चा कराएंगे ? ....(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष जी, इनको सबसे ज्यादा पीड़ा है कि किसानों का कर्जा क्यों माफ किया जा रहा है इसलिए इनको बर्दाश्त नहीं हो रहा है...(व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, कैसे माफ हो गया, ये पीड़ा है । इन लोग 15 साल रहे, परन्तु किसानों के लिए कुछ नहीं किया ....(व्यवधान)

श्री मनोज सिंह मण्डावी :- अध्यक्ष महोदय, खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे वाली बात है और कांग्रेस सरकार किसानों के हित में, मजदूर के हित में निर्णय लेना चाहती है, कर्मचारियों के हित में निर्णय लेना चाहती है तो इनको जलन हो रही है । ....(व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष जी, आसंदी की जो व्यवस्था होगी तो निश्चित रूप से हम उसको स्वीकार करेंगे, लेकिन मेरा आग्रह केवल यह है कि यदि माननीय सदस्य ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सूचना दिया है तो उनको बोलने का अवसर दिया जाए और हम आसंदी के बाहर थोड़ी हैं, आपके संरक्षण में ही हमको काम करना है । इसलिए माननीय सदस्य को बोलने का अवसर दिया जाए और आसंदी से आप जो व्यवस्था देंगे, उसको हम स्वीकार करेंगे तो माननीय सदस्य को आप अवसर दें ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, नेता जी, आपने जो तय किया है, वही तो कार्य योजना चल रही है ।

श्री सौरभ सिंह :- अध्यक्ष महोदय, कार्य योजना पर चर्चा नहीं हो रही है, विशेषाधिकार हनन की सूचना पर चर्चा हो रही है, उसको थोड़ा सा सुन लीजिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी विशेषाधिकार भंग की जो सूचना है...।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, इस बारे में यहां न तो आपका विशेषाधिकार स्वीकार हुआ है, आप उस पर चर्चा नहीं कर सकते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैंने नोटिस दिया है, मेरी बात तो सुन लीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- व्यवस्था आप भी समझें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, आप जो व्यवस्था देंगे, वह स्वीकार होगी ।

अध्यक्ष महोदय :- तो अभी नहीं सुन सकते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरी बात तो सुन लीजिए आप ।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, ऐसे नहीं सुन सकते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गंभीर विषय है.. ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी ।

श्रम मंत्री (डा. शिवकुमार डहरिया) :- अध्यक्ष जी को धमकाने का काम मत करो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हम सदन की अवमानना नहीं सहेंगे।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, हम शासन का विरोध करते हैं और सदन से बहिर्गमन करते हैं । ....(व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाते हुए सदन से बहिर्गमन किया गया)

समय :
12:22 बजे

<u>बहिर्गमन</u>

<u>भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा</u>

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(श्री धरमलाल कौशिक, नेता प्रतिपक्ष के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सदन से बहिर्गमन किया गया)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान विरोधी सब बाहर चले गए । (मेजों की थपथपाहट) किसान से कोई लेना-देना नहीं है । 15 साल तक के छत्तीसगढ़ के खजाने को खाली किए और जब किसानों के लिए देने की बात हो रही है तो सब बहिर्गमन करके चले गए ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, जो किसान विरोधी हैं, वे सदन छोड़कर जा रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी ।

समय :
12:23 बजे **<u>वित्तीय वर्ष 2018-19 के तृतीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा</u>**

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदया की सिफारिश के अनुसार प्रस्ताव करता हूं कि -

दिनांक 31 मार्च, 2019 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में अनुदान संख्या-1, 2, 3, 4, 6 ,7, 10, 12, 13, 14, 16, 17, 21, 23, 26, 27, 29, 30, 32, 33, 39, 41, 44, 58, 64, 66, 67, 69, 71, 80 एवं 81 के लिए राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदया को कुल मिलाकर दस हजार तीन सौ पन्चानबे करोड़, अन्ठावन लाख, पच्चीस हजार, चार सौ रूपये की अनुपूरक राशि दी जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ । डॉ. रमन सिंह ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, पहली बार बहिर्गमन किये हैं, अभी तो 30 साल ऐसे ही चलता रहेगा ।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सदन में वित्त मंत्री जी ने अनुपूरक बजट पेश किया और इस अनुपूरक को देखने के बादही स्पष्ट है कि सिर्फ आंकड़ों की कलाबाजी के सिवाय जितनी बड़ी-बड़ी बातें, जितनी बड़ी-बड़ी घोषणाएं चुनाव के दौरान...

जारी...श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\b15\12.25-12.30

जारी...डॉ.रमन सिंह :- जितनी बड़ी-बड़ी बातें, जितनी बड़ी-बड़ी घोषणायें, राजनांदगांव की गलियों में, मतदाता के सामने, नारे लगाकर और अपनी घोषणा पत्र के द्वारा किये गये । आज मैं देख रहा था,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जिसकी शुरूआत हुई है, शुरूआत में ही निराशाजनक रहा, बड़ी-बड़ी बात करने वाले अध्यक्ष महोदय, कुल बजट तृतीय अनुपूरक पेश किया गया है, जो 10,395 करोड़ का है । इस पर दोनों विषय राजस्व व्यय, पूंजीगत व्यय की तुलना करूं, यदि 10 हजार करोड़ को बायफरकेट करूं, 98.7 परशेंट राजस्व व्यय इसमें आता है । सिंहदेव साहब मुस्कुरा रहे हैं । पूंजीगत व्यय 181 करोड़ 1.074 परशेंट पूंजीगत व्यय है । अध्यक्ष महोदय, शुरूआत में मैं इसे बताने का प्रयास कर रहा हूं कि यह कैसी शुरूआत हो रही है और किस प्रकार मुख्य बजट में जब राजस्व आधिक्य 4445 करोड़ और वित्तीय घाटा 9997 करोड़ था, उस समय तक अध्यक्ष महोदय, जब तक यह सरकार काम करती रही, 14-15 साल में वित्त मंत्री की हैसियत से काम करने का अवसर मिला । मैंने पूरी इस वित्तीय प्रबंधन को आंख के सामने देखा है और खासतौर से राजकोषीय उत्तरदायित्व बजट प्रबंध अधिनियम इसके तहत हम कैसे वित्तीय प्रबंधन को बेहतर कर सकते हैं । स्टेट के आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए क्या-क्या उपाय किये जा सकते हैं, उस एफ.आर.बी.एम. एक्ट के तहत हमने लगातार कोशिश की है और उसी के तहत लगातार छत्तीसगढ़ सरकार को 0.5 परशेंट अतिरिक्त सीमा में कर्ज लेने की छूट मिली । यह पहली बार उपलब्धि है कि 1500 करोड़ अतिरिक्त बारोइंग का लाभ हमको मिला । अध्यक्ष महोदय, पहले दिन पहले साल से ही एफ.आर.बी.एम. के उल्लंघन के बाद उस पूरे के पूरे .5 परशेंट एडिशनल बारोइंग की क्षमता मिलती थी, जो 1500 करोड़ अतिरिक्त संसाधन जुटाने का अवसर मिलता था, वह समाप्त कर दिया गया है । मैं यहां से अपनी बात की शुरूआत कर रहा हूं और 3 परशेंट तक वित्तीय घाटा कितना होना चाहिये, यह एफ.आर.बी.एम. एक्ट में स्पष्ट रूप से लिखा गया है और इसको कोई वित्त मंत्री पहले दिन पढ़ ले, राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम, इसके तहत हम अपने वित्तीय प्रबंधन को बेहतर कर सकते हैं, अतिरिक्त राजस्व वृद्धि के लिए क्या-क्या उपाय किये जा सकते हैं, क्या-क्या कटौती हो सकती है, मगर पहले दिन ही समझ में आया अध्यक्ष महोदय, यह पूरा का पूरा मंत्रिमण्डल कन्फयूस्ड है । निर्णय के मामले में अलग-अलग मंत्रियों की बात सड़कों में सुनाई पड़ती है । अलग-अलग विचार देखने को मिल रहे हैं । एक छोटी सी बात कि हमने संसदीय सचिव के पद की स्थापना की, हमने छत्तीसगढ़ में संसदीय सचिव रखा, सबसे ज्यादा विरोध किसने किया, सबसे ज्यादा विरोध हमारे कांग्रेस के माननीय सदस्यों ने किया ।हाई कोर्ट में जाकर संसदीय सचिव के पद की समाप्ति कर दी कि अतिरिक्त व्यय होता है, वित्तीय प्रबंधन बिगड़ जायेगा और आज अध्यक्ष महोदय, जुमां-जुमां कितने दिन हुये हैं पता नहीं सरकार को? उसमें ही सरकार का एक मंत्री कहता है कि संसदीय सचिव के पद को फिर से पुनर्जीवित किया जायेगा, उनको संतुष्ट करने के लिए लाल बत्ती देने का काम होगा । जो नाराज है, जिनका मुंह फुला हुआ है, अब इसका खंडन करते हैं, मैं तो यही बोल रहा हूं अकबर साहब, इसका खंडन मुख्यमंत्री जी करते हैं....।

श्री मोहम्मद अकबर :- हम खंडन करने वाले नहीं है डॉक्टर साहब। खंडन करने वाले नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पहले आप बयान को समझिये । खंडन करने वाले नहीं है । हमने यह कहा कि हम हाई कोर्ट के आदेश का सम्मान करते हैं । यह बात आपने भी कहा कि हाई कोर्ट के आदेश का सम्मान करते हैं । माननीय हाई कोर्ट ने यह कहा कि संसदीय सचिव मंत्री के रूप में काम नहीं कर सकते । यही बात दोहराई गई है ।

डॉ.रमन सिंह :- पहले दिन से ही खंडन । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसीलिए बता रहा हू कि मंत्रियों के बीच कैसा तालमेल जोरदार चल रहा है । इतने दिन में ही कैसे अलग-अलग बिखर के काम कर रहे हैं, मुख्यमंत्री कुछ बोलते हैं, मंत्री कुछ अलग बोलते हैं ।

श्री मोहम्मद अकबर :- चिन्ता मत करिये, पूरा तालमेल है । कोई बिखर के नहीं चल रहा है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- कोई मंत्री इधर-उधर नहीं है, सब उसी के साथ काम कर रहे हैं । उसके पक्ष में काम कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, आज सारे समाचार पत्रों में मोहम्मद अकबर जी का स्टेटमेंट छपा है कि संसदीय सचिव बनाये जायेंगे और भूपेश जी का खंडन छपा है । पहले तो तय हो जाये कि सदन का नेता कौन है, भूपेश जी हैं कि मोहम्मद अकबर जी हैं ?

श्री मोहम्मद अकबर :- सदन के नेता तो भूपेश बघेल जी हैं । आप सुन तो लीजिए, आप हाई कोर्ट के आदेश का सम्मान नहीं करते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय सचिव बनाने का अधिकार आपको किसने दे दिया ?

श्री मोहम्मद अकबर :- हाई कोर्ट के सामने हमने अपने तर्क रखे । हाई कोर्ट ने कहा कि संसदीय सचिव मंत्री के रूप में काम नहीं कर सकते । हम हाई कोर्ट की बात को मान रहे हैं । क्या आप हाई कोर्ट की बात को नहीं मानते हैं ? हाई कोर्ट ने कहा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपका समाचार पत्र में स्टेटमेंट आया कि संसदीय सचिव बनायेंगे

......जारी.. .श्री मिश्रा

मिश्रा/08-01-2019/b16

जारी.. डॉ. रमन सिंह :- मैं तो यही बोल रहा हूं कि इसका खंडन मुख्यमंत्री जी करते हैं। एक मंत्री और मंत्रिमंडल के मुख्यमंत्री दोनों के बयान में विरोधाभाष!

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- हमने ये कहा कि हम हाईकोर्ट के आदेश का सम्मान करते हैं। ये बात आपने भी कहा कि हम हाईकोर्ट के आदेश का सम्मान करते हैं। माननीय हाईकोर्ट ने यह कहा कि संसदीय सचिव, मंत्री के रूप में काम नहीं कर सकते। यही बात दोहराई गई है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए बता रहा हूं कि मंत्रियों के बीच कैसा जोरदार तालमेल चल रहा है, इतने दिन में ही कैसे अलग-अलग बिखरकर काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री कुछ बोलते हैं, मंत्री कुछ और बोलते हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- चिन्ता मत करिये, पूरा तालमेल है। कोई बिखरकर नहीं चल रहा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कोई मंत्री, मुख्यमंत्री जी के इधर-उधर नहीं है, सब उनके साथ काम कर रहे हैं, सब उनके पक्ष में काम कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सारे समाचार पत्रों में मोहम्मद अकबर जी का स्टेटमेंट छपा है कि संसदीय सचिव बनाये जायेंगे और भूपेश जी का खंडन छपा है। पहले तो तय हो जाए कि सदन का नेता कौन है? भूपेश जी हैं या मोहम्मद अकबर जी हैं? आपका स्टेटमेंट सारे समाचार पत्रों में छपा है। संसदीय सचिव बनाने वाले आप कौन होते हैं?

श्री बृहस्पत सिंह :- यह तय करने की जवाबदारी आपकी हो गई क्या शर्मा जी?

श्री मोहम्मद अकबर :- सदन के नेता तो माननीय भूपेश बघेल जी ही हैं। मेरा यह बयान है। क्या आप हाईकोर्ट के आदेश का सम्मान नहीं करते? हमने हाईकोर्ट के सामने अपने तर्क रखे। हाईकोर्ट ने कहा कि संसदीय सचिव मंत्री के रूप में कार्य नहीं कर सकते। हम हाईकोर्ट की बात मान रहे हैं और क्या आप हाईकोर्ट की बात को नहीं मानते? हाईकोर्ट ने कहा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उसकी बात नहीं कर रहा हूं, मैं कह रहा हूं कि आपका समाचार पत्रों में स्टेटमेंट आया कि हम संसदीय सचिव बनायेंगे। आपको संसदीय सचिव बनाने का अधिकार कहां से मिल गया? संसदीय सचिव को शपथ मुख्यमंत्री जी दिलाते हैं, आप नहीं दिलायेंगे।

श्री मोहम्मद अकबर :- संसदीय सचिव को तो आपके मुख्यमंत्री जी ने अवैधानिक तौर से शपथ दिलायी थी। उसका कहीं कोई प्रावधान नहीं है। कहीं भी प्रावधान नहीं है। आप बता दीजिए कि कहां प्रावधान है? इललीगल काम तो आप करते हैं। सारे संसदीय सचिवों को मुख्यमंत्री जी ने अपने बंगले में शपथ दिलाई थी। कौन सी किताब में है? कहीं नही है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अधिकार है। हाईकोर्ट ने इसको स्वीकार किया, हाईकोर्ट ने हमारे पक्ष में निर्णय दिया।

श्री मोहम्मद अकबर :- हाईकोर्ट ने कोई स्वीकार नहीं किया, हाईकोर्ट का कहना है कि मंत्री के रूप में कार्य नहीं करेंगे और मंत्री के रूप में काम नहीं करेंगे तो फिर कहता हूं कि बनाये जा सकते हैं, इसमें क्या दिक्कत वाली बात है? लेकिन यदि मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अभी विचाराधीन नहीं है तो कहां विरोधाभास है। आप तो इसी बात में खुश हो जाईये कि आपस में तालमेल नहीं है। विरोधाभास है बस इतने में संतुष्ट रहिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल तक उसी फार्मूले में काम करते रहे, लड़ाने का काम। डॉ. साहब, अब वह फार्मूला काम में नहीं आयेगा।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, हमारा फार्मूला 15 साल एकजुट रहकर हमारे पूरे मंत्रिमंडल के साथियों ने काम करके हिन्दुस्तान की जनता को दिखाया कि कैसे बेहतर काम हो सकता है। 15 दिन हुए नहीं कि संतरे के छिलके जैसे दूर होते हैं वैसा हो रहा है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आधे साफ हो गये, कितने लौटकर आये?

डॉ. रमन सिंह :- महाराज, आपकी पीड़ा जानते हैं। आपको जब तक मंत्री नहीं बनायेंगे तब तक आपकी दिक्कत रहेगी।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप मेरी पीड़ा को छोड़िए, आपकी पीड़ा को मैं जान रहा हूं। बृजमोहन जी को छोड़कर चन्द्राकर जी कैसे आ गये मैं नहीं जानता और शिवरतन कैसे आये इसका भी इतिहास मैं जानता हूं लेकिन आपके आधे लोग लौटकर नहीं आये हैं।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, कैसा तालमेल चल रहा है उसके दो छोटे-छोटे उदाहरण। एक उदाहरण मैंने पहले दिया, एक उदाहरण दे रहा हूं। एक अधिकारी का ट्रांसफर हो जाता है, उसको जांच अधिकारी बना दिया जाता है, उसकी पोस्टिंग हो जाती है। गृहमंत्री जी का बयान आता है कि मुझे मालूम ही नहीं कैसे इसकी पदस्थापना हो गई। गृहमंत्री को नहीं मालूम और आई.पी.एस. स्तर का अधिकारी। मंत्री के पेपर में बयान आते हैं कि उसकी पदस्थापना कैसे हो गई। मंत्रियों के बीच ये तालमेल कि मंत्री क्या कर रहे हैं और मुख्यमंत्री क्या कर रहे हैं किसी की जानकारी किसी को नहीं होती। पेपर के माध्यम से एक दूसरे के साथ डॉयलॉग होता है यह स्थिति छत्तीसगढ़ में है।

श्री प्रमेश

प्रमेश\08-01-2019\b17\12.35-12.40

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरे नाम का उल्लेख है इसलिए मैं आपसे अनुमति चाहकर बोल रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय:- बोलिए, बोलिए।

श्री ताम्रजध्वज साहू :- गृहमंत्री कह रहे थे, तो गृहमंत्री क्या बृजमोहन अग्रवाल है, ताम्रजध्वज साहू नहीं है तो (मेजों की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपका नाम किसी ने नहीं लिया।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- ताम्रजध्वज साहू गृहमंत्री है। छत्तीसगढ़ की जनता और भारतवर्ष में आ चुका है। मेरे नाम का उल्लेख किया गया, गृहमंत्री जी कहते हैं मुझे मालूम नहीं। मैंने कहीं पर भी ये नहीं कहा है कि जो आदेश हुआ है उसकी मुझे जानकारी नहीं है। मैंने कल भी यहां पर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

टी.वी में स्पष्ट कहा कुछ विभाग सामान्य प्रशासन के अंदर में आते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी का विशेषाधिकार है। जब-जब ट्रांसफर पर बैन रहता है उस समय समन्वयन जाता है और माननीय मुख्यमंत्री जी पूरा ट्रांसफर करते हैं। जब बैन ओपन होता है उस समय विभागीय मंत्री अपना बनाते हैं ये मैंने कहा है। मैंने कहीं पर ये नहीं कहा है कि मेरी जानकारी में नहीं है।

डॉ. रमन सिंह :- आपने अपनी सफाई यहां देने की जरूरत समझी। सफाई घर में जा के दिये थे उतना ही पर्याप्त है।

श्री अजय चंद्राकर:- आपके बारे में तो पुन्नी मेला में आया था। पुन्नी मेला में बोलिए बोलना है तो ।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- मुझे कहीं कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है। हां हां मैं कहीं भी नहीं बोला।

श्री अजय चंद्राकर:- पुन्नी मेला में बोले थे उसमें।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- मैं कहीं भी नहीं बोला।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके प्रिवलेट को पढ़ लीजिए।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- हां पढ़ लूंगा। कहीं पर कोई सफाई देने की मुझको जरूरत नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा कल तक कल्लूरी XX[1] था, XX[2] था। आज महात्मा कैसे हो गया ये बता दो।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय आप सरकार को काम करने देंगे कि नई देंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके इस सदन के नेता का बयान कल्लूरी के बगल में था। आपका बयान आपकी पार्टी का बयान पूरा पंच नई देते। कहां बोले हो, कहां नई बोले हो। रोज अराजकता की स्थिति है। कभी संसदीय सचिव बनायेंगे बोल रहे हो, कभी नई बनाएंगे बोल रहे हो बयान देने का खोज रहे हैं। बयान दो बस बयान दो।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, ए.सी.बी का प्रमुख इसलिए हमने बनाया है जो काला धन छिपा के रखे हैं 15-15 साल उनकी जांच करने के लिए ए.सी.बी प्रमुख बनाया है।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी बैठिए। XX[3] शब्द को विलोपित करें ।

---

[1] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

[2] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

[3] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी कल्लूरी अच्छा है करके बोल दीजिए न गृहमंत्री जी कल्लूरी बहुत अच्छे अधिकारी हैं इतना तो बोल दो। सदन में यह मांग कर रहे हैं।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- सदन में यहां खड़ा हूं मैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कल्लूरी बहुत अच्छे अधिकारी हैं हमने जो कहा था गलत कहा था। इतना बोलने में क्या तकलीफ है।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रवीन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल इस कुर्सी में विराजमान थे। अनुपूरक में जिन बातों का उल्लेख है थोड़ी बातों किसानों की, थोड़ी बातें गरीबों की कहीं पहुंचिये ने आप किस अधिकारी की चर्चा कर रहे हैं उसका नाम ही नहीं आना चाहिए इस सदन में। ये व्यवस्था है सरकारें तो आपने भी चलाई। आपने भी आदेश किया इधर से भी आदेश हुआ उस पर चर्चा करो। हमने जिन किसानों के बारे में कुछ उल्लेख किया है उसमें आइये डॉ. साहब (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा:- मैं आ रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- कल तक अधिकारी इनके खास हुआ करते थे आज निष्ठा बदल गई है इसलिए बड़े चितिंत हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- 4 महीने पहले के स्टेटमेंट से परिवर्तित हो रहे हैं उसका उल्लेख कर रहे हैं। जिस अधिकारी की चर्चा डॉ. साहब कर रहे हैं उसके प्रति आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने क्या-क्या शब्दों का उपयोग किया है वो बता दें।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय शिवरतन जी आप फ्रंट में आइए अगली बार पसीना निकल जाएगा।

श्री अजय चंद्राकर :- संदर्भ शाखा से आपका बयान सबका बयान निकाल करके पटल पर रख दीजिए। (व्यवधान) मानव अधिकार कार्यकर्ता नहीं मालूम उनके बयान में है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आदरणीय चंद्राकर जी संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं और जब बोल रहे हैं तभी डिस्टर्ब कर रहे हैं।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल के बाद तो किसानों के हित में निर्णय लिया जा रहा है। 15 साल तक तो आपने निर्णय नहीं लिया। किसान आत्महत्या करते रहे और सरकार काम कर रही है तो आपके पेट में क्यों दर्द हो रहा है। चंद्राकर जी पेट में दर्द मत कीजिए डॉ. शिव डहरिया जी बैठे हुए हैं।

श्री अमरजीत भगत :- किसानों का मामला आ रहा है तो आप इधर उधर की बातें कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप इन सबको संसदीय सचिव बनाइये मुख्यमंत्री जी क्योंकि ये खड़े हो रहे हैं बार बार इनको संसदीय सचिव बनाइये नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी। (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ.शिवकुमार डहरिया) :- अजय भैया इतना ज्यादा उत्तेजित मत हुआ करो। स्वास्थय मंत्री नहीं हो। कोई तबीयत खराब हो जायेगा तो ईलाज कौन करेगा।

श्री अमरजीत भगत :- 15 साल तक इतना माल खाए हो आवाज भी नहीं निकल रही है। नारा भी नहीं लगा पा रहे हो।

डॉ. रमन सिंह :- संसदीय सचिव में जो नहीं मानने वाले लोग हैं उनके लिए ही आज एक चर्चा विधानसभा में रखी गई है। प्रधानमंत्री जी से आग्रह करना जो संभव ही नहीं है सिर्फ और सिर्फ 15 से 5 प्रतिशत बढ़ाने के लिए लालीपाप दिखाया जा रहा है कि आपका मुंह फुलाना बंद करिये 5 प्रतिशत और लिया जाएगा। 18 किया जाएगा।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- जरूरत नहीं है संतुष्ट हैं सब ।

डॉ. रमन सिंह :- संतुष्ट करने के लिए साहू जी दुखी हैं सुखी हो जाये। सत्यनारायण के चेहरे में खुशी आ जाये।

श्री अरूण वोरा :- डॉ. साहब हमारे मुख्यमंत्री है। हम सब अपने आपको मुख्यमंत्री मानते हैं। इसलिए आप उसकी चिंता मत करिये।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- अच्छा गाल किसका फूला है अभी देख लीजिए। श्री शिवरतन शर्मा जी का श्री अजय चंद्राकर जी का माननीय डॉ. रमन सिंह का इधर तो गाल अभी दबा दबा है। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने 15 साल में, जो किसानों की बात श्री रवीन्द्र चौबे जी कर रहे थे। 15 साल में जो किसानों के लिए, कांग्रेस के उस 15 साल के पहले के कार्यकाल और 15 साल की कार्यकाल की तुलना करें अध्यक्ष महोदय, मैं दावे के साथ कह सकता हूं किसानों के लिए 10 गुना ज्यादा काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किसानों के लिए किया है। जीरो इंटरेस्ट देने का काम भारतीय जनता पार्टी ने शुरू की 16 प्रतिशत ब्याज दर से कम करते करते किसानों की स्थिति को बेहतर करने का का काम किया। साढ़े 7 हजार यूनिट तक किसानों को नि:शुल्क बिजली देने, धान खरीदी की व्यवस्था ....।

श्री प्रेमसाय सिंह :- जो 15 साल में किया वो तो 10 दिन में कर दिया हमारे मुख्यमंत्री जी ने।

गृहमंत्री (श्री ताम्रजध्वज साहू) :- हमारे 15 साल होने के बाद आंकलन करेंगे न अध्यक्ष जी हमारा तो 15 दिन का है अभी। 15 साल हमारा भी हो तब आंकलन होगा। ये तो 15 दिन है।

श्री अजय चंद्राकर :- क्या है आप बोलने के लिए बहुत अच्छे हैं क्योंकि किस्मत के धनी आपसे ज्यादा कोई है नहीं। वो बाल-बाल बचा आपके कारण तो आप तो बोल सकते हो। किस्तम के धनी सबसे ज्यादा हो आप।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री गुरूदयाल सिंह बंजारे :- किसान मन ला अब्बड़ ठगेव गा याद हे ह मन ला। 300 रूपए बोनस देबो करके कतका ठगेव । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- इसके बाद भी कितना बुरा हाल है कितने गिनती में आ गये आप लोग 15 साल में 15 लोग। श्रीमती सविता

सविता\08-01-2019\b18\12.40-12.45

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी, क्यों नहीं बैठे हैं, आप ये बताईये? क्या अभी तक फैसला नहीं हो पाया? आधा पक्ष इधर लगता है आधा पक्ष उधर लगता है।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस अनुपूरक के बाद इसमें दो गुने से ज्यादा वित्तीय घाटे की स्थिति में होगी और वित्तीय घाटा है 3 प्रतिशत से बढ़कर 7 प्रतिशत हो जाएगा। ये एक चिन्ता का विषय है राजस्व आधिक्य 4 हजार, 445 करोड़ के स्थान पर इस अनुपूरक में लाये गए राजस्व व्यय पर 10 हजार, 214 करोड़ के कारण लगभग 6 हजार करोड़ के राजस्व घाटे की स्थिति निर्मित हो जाएगी और मुख्य बजट के आते-आते 2 अनुपूरक पेश किये गये थे, उसके बाद भी हमने वित्तीय प्रबंधन को ठीक रखने का प्रयास किया और आज मैं ये कह सकता हूँ कि आज जो स्थिति इस अनुपूरक में किसानों के लिए बड़ी-बड़ी बात कही गई थी, उसका क्या हुआ? सब किसान का कर्जा माफ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान के कर्ज माफी में मैं देख रहा था, अल्पकालीन ऋण 3 हजार करोड़ का, लघु और सीमांत किसानों के लिए 1 हजार, 223 करोड़ का, 4 हजार, 223 करोड़ का कर्ज माफ हुआ है। ये 4 हजार, 223 करोड़ के बाद कम से कम छत्तीसगढ़ की सरकार को मध्यप्रदेश से सबक लेना चाहिए। मध्यप्रदेश सरकार ने न केवल ग्रामीण बैंक, सहकारी बैंक के आदेश जारी करके, पहले दिन ही राष्ट्रीयकृत बैंक और निजी बैंक के ऋणों को कर्जा माफी का प्रावधान कर दिया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको भी पहले कलम में इसको करना चाहिए। नेशनलाईज बैंक के कर्ज माफी की बात नहीं की, लघु शार्ट टर्म, मीड टर्म और लॉन्ग टर्म, सिर्फ लघु अवधि के बैंकों के कर्ज माफी की बात की गई यानी किसानों को सिर्फ और सिर्फ झूठे वायदे और झूठे विश्वास करके दिया गया और ये पता नहीं, राष्ट्रीयकृत बैंक के लिए जानकारी मंगाई जा रही है। जानकारी मंगाने की जरूरत नहीं होती, कर्जा माफी की घोषणा हो जाती। बैंक से रिपोर्ट आ जाती है एक घण्टे में सारी रिपोर्ट आ सकती है, मगर किसानों को भ्रम में रखने की स्थिति है इसलिए घोषणा पत्र के अनुसार न इसमें कर्ज की व्यवस्था है सिर्फ और सिर्फ सहकारी और ग्रामीण बैंक से 30 नवम्बर, 2018 तक के अल्पकालीन ऋण 6 हजार, 161 सौ करोड़ में 3 लाख, 54 हजार किसान के कर्ज माफ किये जाएंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हम लोग उधर बैठते थे और ये विपक्ष में बैठते थे तो किसानों की संख्या बोली जाती थी 15 लाख, 20 लाख, 25 लाख और आज 3 लाख, 56 हजार अतिरिक्त किसानों

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

की क्या स्थिति होगी ? राष्ट्रीयकृत बैंक से जिन्होंने कर्ज लिया है उनकी स्थिति क्या होगी ? इसके बारे में कोई न प्रावधान है और न सोच। आज किसान ठगा महसूस कर रहा है। किसानों को ये लगता है कि सिर्फ चुनाव और वोट की राजनीति के लिए बड़े-बड़े वायदे किये गये, बड़े-बड़े विश्वास दिलाये गये और विश्वास में आज 10 प्रतिशत किसानों को ही लगता है कि उनके साथ न्याय हुआ और बाकी लोगों के साथ स्थिति है कृषि ऋण माफी 1 हजार, 223 करोड़ का प्रावधान, माननीय अध्यक्ष महोदय, ये कौन सा 1 हजार, 223 करोड़ है ? ये 1 हजार, 223 करोड़ रूपये वही राशि है जो किसानों ने अपनी राशि लेते समय बैंक में कर्ज को वापस करने के लिए पैसा जमा किया था। वही पैसे को समायोजित किया गया और बड़े-बड़े बातें की जा रही है, बड़े-बड़े नारे लगाए जा रहे हैं, 1 हजार, 223 करोड़ रूपये वही पैसा है जो लिकिंग पर किसान अपना धान सोसायटी में लाता है, बेचता है और उसकी राशि काट ली जाती है उसी को समायोजित करने का प्रयास हुआ है । सिर्फ ये हुआ है बड़ी-बड़ी बातें, बड़े-बड़े वायदे किये गये कि हमने किसानों का कर्ज माफ कर दिया। जब तक किसानों की वह राशि बैंकों के पास न पहुँच जाए, कागज और स्लिप देने से कर्ज माफ नहीं होता । जब राज्य के बजट से उस बैंक में जाकर पैसा जमा होगा, फिर उसकी कैपेसिटी बोरोइंग की बढ़ेगी, तब वह कर्ज दे सकता है। नहीं तो किसान को कर्ज माफी की बात सिर्फ कागजी ही होगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि हमको स्थाई उपाए के बारे में सोचना चाहिए। बड़ी-बड़ी बातें और बड़े-बड़े काम और चुनाव जीतने के लिए बड़ी-बड़ी घोषणाएं हुईं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या आने वाले समय के लिए हमने ऐसी कोई व्यवस्था सोची है कि एग्रीकल्चर सेक्टर में किसानों को अपने पैर में स्वावलंबी बनाने के लिए क्या-क्या कदम उठाये जा सकते हैं? एक बार कर्ज माफी, शार्ट टर्म लोन करने से क्या स्थाई रूप से किसानों के जीवन में परिवर्तन आएगा, हम किसानों के सिंचाई की बेहतर व्यवस्था कैसे कर सकते हैं ? हम भविष्य में उसके लिए संसाधन की व्यवस्था कैसे कर सकते हैं? आने वाले समय में किसानों की उन्नति के लिए क्या कर सकते हैं, उनके कृषि यंत्रों में कैसे हो सकता है ? हार्टिकल्चर, फ्लोरीकल्चर में हम क्या-क्या काम कर सकते हैं? किसान को स्वावलम्बी और अपने पैरों पर खड़े करने के लिए क्या नीति बन सकती है इस विषय पर बात होनी चाहिए। ये विषय न होकर सिर्फ और सिर्फ छोटी-मोटी घोषणा करने से किसानों की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं घोषणापत्र देख रहा था, घोषणापत्र में दो बिन्दु....।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ.शिवकुमार डहरिया) :- डॉ. साहब, आपका घोषणापत्र....।

डॉ. रमन सिंह :- आपको जब बोलना होगा, बोल दीजिएगा। मैं अभी खड़ा हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, ...

जारी श्री चौधरी

चौधरी\08-01-2019\b19\12.45-12.50

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पूर्व जारी... डॉ. रमन सिंह :- मैं अभी खड़ा हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं घोषणा पत्र देख रहा था, पूरे घोषणा पत्र को देखने के बात ये बात स्पष्ट समझ में आई कि इस पूरे चुनावी घोषणा पत्र के सिर्फ 2 बिन्दु का क्रियान्वयन किया गया है। इस पूरे अनुपूरक में 2 बिन्दु का क्रियान्वयन हुआ है। आज मैं कह सकता हूं, यह प्रश्न छत्तीसगढ़ की जनता पूछना चाहती है। अध्यक्ष महोदय, 10 लाख युवकों को 2500 रुपये भत्ता देने की बात है, इसके लिए कौन सी कार्ययोजना बनेगी? इसमें 250 करोड़ रुपया लगेगा, वित्तीय प्रबंधन कहां से होगा? सिंहदेव साहब मुस्कुरा रहे हैं, वित्त विभाग इनके पास नहीं है, इसलिए मुस्कुराहट बढ़ रही है, मगर इसका वित्तीय प्रबंधन करना पड़ेगा। इस पूरे का हिसाब लगाने के बाद 35 हजार करोड़ रुपये की व्यवस्था करनी पड़ेगी। छत्तीसगढ़ के आम आदमी के जीवन में आपने जितना घोषणा पत्र गांव-गांव में घूमकर बनाया, चुनाव जीत गये, यह अच्छी बात है। मगर चुनाव जीतने के बाद अब जनता उसी चौक, चौराहे, क्षेत्र में सवाल पूछेगी। आपने शिक्षाकर्मियों के लिए दो साल का वादा किया, उसके लिए आपको तत्काल व्यवस्था करनी पड़ेगी। वृद्धावस्था पेंशन 60 साल, 75 साल का वादा किया, विधवा पेंशन का वादा किया। आपने ऐसे-ऐसे वादे, ऐसी-ऐसी घोषणाएं की है, आपने कभी बैठकर इसके वित्तीय प्रबंधन का हिसाब किया? मुख्यमंत्री जी ने कभी कागज पेन लेकर इस बात का हिसाब लगाकर देखा। दो साल के बोनस का कहीं पता नहीं है। कब होगा, कितने साल बाद होगा, कब आयेगा? यदि ये बोनस आता है, 70 लाख मेट्रिक टन, 70 लाख मेट्रिक टन, दोनों का मिला दिया जाये तो साल का 600 रुपया रुपया और करीब-करीब 4200 करोड़ रुपये की अतिरिक्त व्यवस्था करने की तत्काल जरूरत पड़ेगी, यदि किसान को दो साल का बोनस देने की तत्काल जरूरत पड़ेगी, ये व्यवस्था करनी ही पड़ेगी। आपने बड़ी-बड़ी फोटो छपाई हैं, सड़कों में घूमकर घोषणायें की हैं, बड़े-बड़े नारे लगाये हैं और सबका वोट दिलाने का काम हुआ है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, खाद्यान्न सुरक्षा में 35 किलो चावल, चूंकि उसके पूरे के पूरे पी.डी.एस. सिस्टम को मैं जानता हूं, हमने कैसे इसकी वयवस्था को बेहतर किया, 35 किलो चावल की परिवार की यूनिट बनाने की ताकत आपमें कितनी है, आप किसको यूनिट मानते हैं? इसको यदि चार गुना कर देंगे तो इसके लिए आपको अतिरिक्त 1600 करोड़ रुपये की व्यवस्था करनी पड़ेगी। मैं इसलिए आपको सचेत कर रहा हूं कि सड़कें नहीं बन रही हैं। मुख्यमंत्री की ओर से सभी जगह एक आदेश चला गया, जितने काम चल रहे हैं सारे काम बंद कर दिये जायें। जितना भी पैसा है उस पैसे को रोक लिया जाये। यानि आने वाले साल, दो साल में सड़क, पुल, पुलिया, स्कूल, अस्पताल के ये सारे काम ठप्प कर दिये जायेंगे। विकास के सारे काम रूक जायेंगे, क्योकि इनके पास पैसे की कमी है, पैसे नहीं हैं। आज पूरे छत्तीसगढ़ में पी.डब्ल्यू.डी. और एरिकेशन के जितने भी काम चल रहे थे, पंचायत में भी हालत खराब है। मैं कल कसडोल विधानसभा का पलायन की स्थिति के संबंध में पेपर में एक समाचार पढ़ रहा था, हजारों लोगों का पलायन शुरू हो गया है। जांजगीर-चांपा जिले से खबर आ रही हैं कि हजारों की

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संख्या में लोग पलायन कर रहे हैं। वहां रोजगार के अवसर नहीं हैं। छोटे-मोटे सड़क के काम, गांव के काम, पंचायत के काम, दूसरे काम जितने चल रहे थे, वह सारे काम से पैसा वापस ले लिया गया है। अच्छे-अच्छे निर्माण के कार्यों में जितनी काम में गति आई थी, जितना 14-15 सालों में हमने विकास को एक दिशा देने का काम किया था, जितनी गति के साथ विकास को आगे बढ़ाने का काम किया था, वित्तीय प्रबंधन नहीं होगा तो ऐसा न हो कि आने वाले समय में पूरे छत्तीसगढ़ में एक अराजकता की स्थिति हो जाये। छत्तीसगढ़ में विकास के नाम से हम फिर से पीछे हो जायें। 15 साल से जिस छत्तीसगढ़ को सजाया गया, संवारने का काम किया गया, एक-एक गांव में विद्युत पहुंचाने का काम काम किया। रोड कनेक्टीविटी, रेल कनेक्टीविटी, एयर कनेक्टीविटी, इन कामों के लिए फंड की व्यवस्था चाहिए।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. साहब ऐसा नहीं लग रहा है कि आप डरवा रहे हैं।

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\c10\12.50-12.55

डॉ. रमन सिंह :- अभी आपको समझ नहीं आयेगा । रेल कनेक्टिविटी के लिये जिस पी.पी. मॉडल पर हिंदुस्तान में जिसकी चर्चा हुई थी, जिस चर्चा के अनुसार छत्तीसगढ़ में आज 3 हजार किलोमीटर रेल लाईन बिछाने का काम हमने तैयार किया था । मुझे शंका है कि ऐसी योजनाएं जो छत्तीसगढ को आने वाले इक्कीसवीं सदी में उंचाईयों तक पहुंचायेगी ।

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- डॉ. साहब लगता है कि आप बजट वाला मुख्य भाषण पढ़ रहे हैं, आज अनुपूरक वाला नहीं है ।

डॉ. रमन सिंह :- इसी बजट में है, इसी प्रावधान की चर्चा कर रहा हूं । महिला स्वास्थ्य सहायता समूह को कर्जा माफ कर देंगे । मैं तो पूरे पन्ने पलटा रहा था कि कहां पर कर्जा माफी....।

पंचायत मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय डॉ. रमन सिंह जी को इस बात का धन्यवद तो जरूर देना चाहूंगा कि आपने घोषणा पत्र पूरा पढ लिया । (मेजों की थपथपाहट) यह भी बता दें कि चुनाव के पहले पढ़ा था कि चुनाव के बाद पढ़ा था ?

डॉ. रमन सिंह :- छत्तीसगढ की जनता यही घोषणा पत्र लेकर आपके पास आयेगी और वही घोषणा पत्र आपको दिखायेगी कि आपने 15 साल यदि विपक्ष में रहकर 15 साल यदि आपने पीड़ा झेली है तो कैसे-कैसे वायदे किये थे जिस वायदे को पूरा करने की आपकी ताकत नहीं थी उसके बाद भी छत्तीसगढ़ को दिवालिया बनाने की स्थिति में लाने की साजिश आपने की है इसलिये छत्तीसगढ़ की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जनता आपको माफ नहीं करेगी । मैं जहां तक समझता हूं को शिक्षाकर्मियों को वायदा, एक बहुत बडा वायदा किया था । यू टर्न कैसे लेती है यह सरकार, यू टर्न के सारे उदाहरण मैं ढूंढ रहा था कि 15-20 दिन में कैसे यू टर्न लेती है, बड़े-बड़े वायदे और चुनाव जीतने के लिये इन्होंने सबसे बड़ी बात कही, शराबबंदी को लेकर गांव-गांव में महिलाओं के पास गये, पुरूषों के पास गये, गांव में गये, शराबबंदी के बड़े-बड़े बोर्ड लगे, पूरे गांव में बोर्ड लगे । आज चुनाव जीतने के बाद सबसे बड़ा यू टर्न हुआ कि शराबबंदी हम नहीं करेंगे । ठेकेदार और कौचिये के हाथ में छत्तीसगढ को छोड़ दिया जायेगा । यह क्या स्थिति है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- कुछ दिन और इंतजार कर लीजिये अभी तो शुरू है, 5 साल बाकी है । अभी से कुछ विचार कर लीजिये ।

श्री अमरजीत भगत :- अभी आप इतनी बातें बोल रहे हैं, अभी श्री कवासी लखमा जी नहीं हैं इसलिये बोल लीजिये ।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह साजिश है । यह छत्तीसगढ को फिर से उस दौर में ले जाने की साजिश है ।

परिवहन, आवास एवं पर्यावरण मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- आपकी टीम शराबबंदी की रिपोर्ट देने गयी थी और रिपोर्ट देती है कि काउंटर बढ़ाओ, डबल करो, बीयर को बढ़ावा दो, ऐसा होना चाहिए जिसमें बीयर को बढावा मिले । कमेटी आप भेजते हैं शराबबंदी के लिये और रिपोर्ट आता है कि काउंटर बढ़ाओ, डबल मंजिल करो।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी कमेटी के रिपोर्ट में चुनाव नहीं लड़े थे, आप अपने घोषणा पत्र में चुनाव लड़े थे इसलिये अब क्रियान्वयन की जवाबदारी आपकी है । क्रियान्वयन की जवाबदारी सरकार की है, क्रियान्वयन की जवाबदारी मुख्यमंत्री की है । क्या आप भारतीय जनता पार्टी के घोषणा पत्र में चुनाव लड़े थे ? अगली बार लड़ लेना ।

श्री मोहम्मद अकबर :- सरकार का फैसला तो था । आप समिति बनायेंगे किसी काम के लिये, रिपोर्ट उल्टा देंगे तो कैसे होगा ?

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय, धान की कीमत और 300 रूपये बोनस किसने कहा था ?

डॉ. रमन सिंह :- नीति बनाईये, नीति का क्रियान्वयन करिये ।

श्री अमरजीत भगत :- इसीलिये तो जनता ने उधर बैठा दिया ।

श्री मोहम्मद अकबर :- आपने हर आदिवासी परिवार को गाय देने की घोषणा पत्र के साथ चुनाव लड़ा था, 15 साल हो गये उसका क्या हुआ ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय डॉ. साहब 15 साल किसानों के लिये बहुत बढ़िया नीति बनाये और 15 सीट में आकर सिमट गये । इतनी तकलीफ क्यों हो गयी, हमको तो अभी पूरा चलना है । आप लोग किसानों की चिंता क्यों नहीं करते थे ? देखिये ऐसी स्थिति हो गयी है ।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बड़ा वायदा बेरोजगारों के लिये, युवकों के लिये रोजगार के अवसरों का सृजन होगा । रोजगारों के लिये बेहतर काम होगा ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शराबबंदी की बात किये हैं। जो पहली कैबिनेट की बैठक हुई थी उसमें समिति का गठन हो गया है कि शराबबंदी के लिये निर्णय लेंगे । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- कैबिनेट मंत्री आप हैं क्या ? जो कैबिनेट की बैठक के बारे में बात कर रहे हो ।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नोटबंदी वाला जो निर्णय लिया गया था अचानक से उठाकर केंद्र सरकार के द्वारा जिसमें कितने लोग मर गये, शराबबंदी भी यानी जब तक उसका सेंटर पूरे जिले स्तर पर नहीं बनेगा.... (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- नोटबंदी की बात यहां पर मत कीजिये, आप पहली बार चुनकर आये हैं । शराब नीति की अभी घोषणा नहीं हुई है, आप अभी बैठिये । (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि सदन के अंदर बैठने का और अपनी बातें कहने का अवसर मिल रहा है और हम लोग सदन के अंदर इस भाव से आये हैं कि इस सदन में आकर छत्तीसगढ़ की आम जनता के लिये बात करेंगे और उसकी बढ़ौत्तरी के लिये बात करेंगे और जिस तरीके का रवैया सम्माननीय सदस्य का है कि बैठ जाईये यह शोभा नहीं देता । मेरा निवेदन है कि सदन की गरिमा बनाये रखें ।

................श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\c11\12.55-12.60

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- भाई साहब, जो भाव आपका है, वही भाव लेकर हम यहां आए हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कुछ कहना चाह रहा हूं, दो मिनट सुनिये ना । मैं इसी संबंध में कहना चाह रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- सुन लेते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वे पूर्व मुख्यमंत्री हैं, वरिष्ठ नेता हैं । वे बोल रहे हैं, मैं गिन रहा था उनके भाषण में कम से कम 50 बार बीच-बीच में इंटरप्ट कर रहे हैं । यह बहुत ही आपत्तिजनक है । अगर यही परम्परा कायम करना चाहते हैं तो फिर जब मुख्यमंत्री जी बोलेंगे तो इधर से लोग व्यवधान डालेंगे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तो फिर बुरा नहीं लगना चाहिए । कुछ लोग इंटेंशनली खड़े हो रहे हैं । अरे, उनकी वरिष्ठता और उनके अनुभव का सम्मान करिये । यह आप आसंदी से निर्देश दें कि इतने वरिष्ठ नेता जब बोल रहे हैं तो उधर के वरिष्ठ नेता बोलें । इतना तो सम्मान करना चाहिए, ये खड़े होकर उनकी बात को काटने लगते हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, ये 15 साल मुख्यमंत्री रहे हैं, अपनी घोषणा को याद करें ना । अभी जुमा-जुमा दो दिन पहले ही सदन चालू हुआ है और आप घोषणा पत्र की याद करा रहे हैं । इन्होंने 2100 रूपए धान की कीमत और 300 रूपए बोनस के लिए कहा था, उसकी याद करवा दीजिए ना । आप अभी की घोषणा के बारे में बता रहे हो, पूर्व की घोषणा की याद दिलवा दीजिए ना । वरिष्ठ की गरिमा वरिष्ठ की तरह रखिए ना ।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, मैं धर्मजीत भइया की बात को समझता हूं । चूंकि चुनाव भी सहयोग-असहयोग से मिलकर लड़े हैं तो अभी सदन में भी सहयोग की भावना रखे होंगे । लेकिन सदन की गरिमा बनाए रखने का कर्तव्य हर एक सदस्य का है । जिस तरह आरोप-प्रत्यारोप की बात हो रही है इससे सदन नहीं चलेगा, निर्णय पर बात होनी चाहिए, विषय पर बात होनी चाहिए, किसानों की बात होनी चाहिए । किसानों को छोड़कर बाकी सभी विषयों पर पर सम्माननीय सदस्य बोल रहे हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं भारतीय जनता पार्टी को चुनाव में हराकर यहां आया हूं और कांग्रेस की जमानत जप्त कराकर आया हूं । (मेजो की थपथपाहट) मुझे आपकी सलाह की जरूरत नहीं है ।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, ये जिन लाखों युवकों की बात करते हैं, आज उन युवकों की निगाह भी इस सरकार के कार्यकलापों पर है । क्या इस पर निर्णय लेते हैं, इस पर क्या क्रियान्वयन करते हैं । आपने युवकों का विश्वास जीता, आपने बड़े बड़े वायदे किये, युवकों को ढाई हजार रूपए का वायदा करके, आपने उनसे वोट लिया । उन्होंने आपको इतना बड़ा समर्थन किया, अध्यक्ष महोदय, अब वे इंतजार करेंगे कि उन्हें ढाई हजार रूपया महीना कब से मिलना शुरू होगा । आपको तारीख बताना पड़ेगा, आपको तारीख की घोषणा करनी होगी । आपने युवकों से ढाई हजार का वायदा किया था । आपने शराबबंदी का वायदा किया था । आपको उस वायदे को पूरा करना पड़ेगा । आपने किसानों के सारे कर्जे माफ करने की बात की थी । यह काम किश्तों में नहीं हो सकता । राष्ट्रीयकृत बैंकों के शॉर्ट टर्म, मिड टर्म और लॉग टर्म लिए गए लोन को माफ करना पड़ेगा ।

अध्यक्ष महोदय, मैं बजट में देख रहा था । बजट के प्रावधान देख रहा था, ऊर्जा विभाग में बिजली के लिए 32 करोड़ का प्रावधान किया गया है । अध्यक्ष महोदय, मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ । बिजली के लिए 32 करोड़ रखा गया है । आपने कहा है बिजली बिल हाफ, यदि बिजली बिल हाफ करना है तो छत्तीसगढ़ के किसानों को, छत्तीसगढ़ के मजदूरों को, गरीबों का बिजली बिल माफ होता है तो कम से कम बिजली का पूरा बिल 14 हजार करोड़, 15 हजार करोड़ आता है, इंडस्ट्री को छोड़कर। अगर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आपने बिजली बिल हाफ करने की बात कही है तो आपको कम से कम 4 हजार करोड़, 5 हजार करोड़ का प्रावधान करना चाहिए था । 32 करोड़ रखकर आप बिजली बिल हाफ की बात को पूरा नहीं कर सकते । ये छोटी छोटी बातें रखकर, 30 करोड़, 32 करोड़, 50 करोड़ रखकर, छत्तीसगढ़ की वित्तीय स्थिति ऐसी पहुंचने वाली है । मैं अभी से चेताना चाहता हूं कि 7 प्रतिशत वित्तीय घाटा होने वाला है । लोन की, कर्जे की इन पर लायबिलिटी बढ़ने वाली है, लोन का इंट्रेस्ट रेट बढ़ने वाला है, वित्तीय घाटा बढ़कर 7 प्रतिशत की ऊंचाई तक जाएगा । इस 7 प्रतिशत के घाटे पर कर्ज की लायबिलिटी दिन पर दिन बढ़ती जाएगी और आज जो विकास के कामों की कल्पना छत्तीसगढ़ ने की थी । छत्तीसगढ ने निर्माण में 2000 से 2018 की यात्रा में उस विकास के लिए मील के पत्थर बनाए थे । सिर्फ चुनावी वायदों में ये तहस नहस न हो जाए । मैं चाहता हूं कि कम से कम हमने जो वित्तीय प्रबंधन 15 सालों तक कायम रखा । एफआरबीएम एक्ट का उल्लंघन नहीं होने दिया । कर्ज की सीमा को सीमित रखा । विकासमूलक कामों में, अनुसूचित जाति, जनजाति के क्षेत्रों में उतने प्रतिशत के आधार पर, 45 प्रतिशत बजट की राशि का प्रावधान किया । गरीबों के लिए योजना बनाई.............................जारी

--- श्री ठाकुर -

ठाकुर\08-01-2019\c12\01.00-01.5

...........जारी डॉ. रमन सिंह :- 45 प्रतिशत बजट राशि का प्रावधान किया। गरीबों के लिए योजना बनाई । मैं यही आग्रह करूंगा अध्यक्ष महोदय, आपने ठीक है आज 10 हजार करोड़ की राशि मांगी है। अध्यक्ष महोदय, बजट में बाकी लंबी चर्चा हम करेंगे पर मैं कहना चाहूंगा कि छत्तीसगढ़ की जनता, छत्तीसगढ़ के आम आदमी और जितने उम्मीद और विश्वास के साथ कांग्रेस को वहां बिठाया है अध्यक्ष महोदय इस 10 हजार करोड़ के बजट के बाद अध्यक्ष महोदय पहले दिन से ही विश्वास उखड़ना शुरू हो जाएगा। छात्रों का विश्वास, युवकों का विश्वास और महिलाओं को खासतौर से जिनके कर्जा माफी और नशाबंदी की बात उन्होंने कही थी। जिन्होंने किसानों को भ्रम में रखकर अध्यक्ष महादेय वोट लिया था। इसलिए मैं आज से ही सचेत कर देना चाहता हूं, आज से ही बता देना चाहता हूं, यदि आपने घोषणा पत्र बनाई है उसके लिए वित्तीय प्रबंधन की चिंता करिए। यदि आपने घोषणा पत्र बनाई है, उसके 1-1 बिंदु और क्रियान्वयन की चिंता करें और जब तक ये नहीं होगा अध्यक्ष महोदय छत्तीसगढ़ की जनता बहुत की जल्दी सबक सिखाएगी और आने वाले लोकसभा में ही अध्यक्ष महोदय ये इनके सारे घोषणाओं की पोल खुल जाएगी और 11 में 11 लोकसभा सीट जीतकर हम बताएंगे अध्यक्ष महोदय कि भारतीय जनता पार्टी ने 15 साल बेहतर काम किया। धन्यवाद (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय:- सत्यनारायण शर्मा।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा:- सत्तू भैय्या। एक मिनट सत्तू भैय्या। सत्यनारायण की कथा शुरू कर रहे हैं, सत्य बोलना।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- आपकी तो पुरानी आदत है। फस्ट लाइनर से सेकण्ड लाइन में पहुंच गये हो। अगली बार सेकण्ड लाइनर से थर्ड लाइन में चले जाआगे। आप हायर सेकेण्डरी में थर्ड डिवीजन में पास नहीं कर पाए।

श्री अजय चंद्राकर:- आप यहां से वहां नहीं बोल पाए आप। आप जहां बोलेंगे पंडित जी वहां बैठ जाएंगे लेकिन हमारी इच्छा है कि आप उधर बैठे जाएं। हमको जहां भेजना है वहां भेज दीजिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- आप जो है जमीन में बैठ जाएं।

श्री अजय चंद्राकर:- बिल्कुल-बिल्कुल बैठ जाएंगे। लेकिन आप उधर बैठ जाइए।

श्री अजय चंद्राकर:- आप उधर बैठ जाइए प्लीज।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- आपको जमीन में बैठाना हमारा काम है। चिंता मत करिए। आपके पास बचा ही क्या है बहिष्कार और जमीन में बैठना। नारेबाजी करना। क्या बचा है आपके पास।

श्री शिवरतन शर्मा:- और आपके पास सिर्फ कथा करना बाकी है।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में पूर्व मुख्यमंत्री माननीय डॉ रमन सिंह जी की बात हम सुन रहे थे।बड़े-बड़े समझाइश दे रहे थे हमको। वो ठीक से अगर काम किये होते तो वहां नहीं पहुंचते। (मेजों की थपथपाहट) जनता की, किसानों की चिंता नहीं थी माननीय अध्यक्ष महोदय उनको। किसानों का बोनस कब दिया उन्होंने और कितने साल का नहीं दिया। इसको किसान अच्छी तरह से जानता है माननीय अध्यक्ष महोदय। माननीय अध्यक्ष महोदय, चुनाव 2018 विधानसभा चुनाव के पहले हमारे आदरणीय साथियों ने माननीय टी.एस. सिंहदेव साहब ने गांव-गांव जाकर के एक-एक जगह जाकर के लोगों से विचार-विमर्श किया उनके सुझाव लिये और उसके बाद सब लोगों से बातचीत करने के बाद ये हमारी पार्टी का घोषणा पत्र तैयार हुआ। माननीय अध्यक्ष महोदय ये घोषणा पत्र जो है, ये कोरा कागजी दस्तावेज मत समझिए इसको। ये जनता की आकांक्षा का आइना है। ये जनता की आकांक्षाओं का पहचान पत्र है माननीय अध्यक्ष महोदय। मैं बताना चाह रहा हूं इनका भ्रम टूट गया और भ्रम टूटेगा। अगर ये किसानों के हितैषी होते तो आज किसानों की बात की जो चर्चा हो रही है अनुपूरक बजट में। किसानों को लाभ मिलने वाला है, उसका विरोध नहीं करते। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सबसे बड़ी इनकी नीयत यहीं से झलकती है कि इस किसानों के हित के बात के लिए जब सदन में कोई प्रस्ताव आता है तो उसका विरोध करते है, उसका बहिर्गमन करते हैं। आज डॉ. रमन सिंह जी ने पहली बार बर्हिगमन किया है। कैसा लग रहा है उनको शिवरतन जी, बृजमोहन जी कैसा लगा आपको।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर:- हमने बर्हिगमन जो है किसानों के लिए नहीं किया। सदन की परंपरा के लिए किया है।

बृजमोहन अग्रवाल:- सत्तू भैय्या। हमको अच्छा लग रहा है और अच्छा लगता आप इधर बैठते तो।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- आप मेरी चिंता छोड़िए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- हम पंडितों का सम्मान करते हैं, बाम्हणों का सम्मान करते हैं।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- बस, इसी में आपका कल्याण है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- और इसलिए आप उधर बैठते तो और अच्छा लगता। आज प्रधानमंत्री जी ने 10 प्रतिशत आरक्षण दिया है पंडितों को। उसका आप स्वागत करिए। उसके बात आप कहिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- वो प्रधानमंत्री जी।

श्री अजय चंद्राकर:- उस आरक्षण को छोड़िए आप इधर आ जाइए कम से कम।

श्री सत्यनारायण शर्मा:- वो वहीं प्रधानमंत्री हैं जो आपके कारण टेबल के नीचे घुस गये थे।

श्री टी.एस. सिंहदेव:- प्रधानमंत्री जी ने ये जानते हुए अध्यक्ष महोदय आरक्षण दिया कि सुप्रीम कोर्ट उसको नकार चुकी है।

श्री अजय चंद्राकर:- राजा साहब, एक बात बताइए आप मैं खड़ा हूं। सदमे से आप बाहर आ गये। सदमे से आप बाहर आ गये हो।

श्री टी.एस. सिंहदेव:- कौन से सदमे से ?

श्री अजय चंद्राकर:-वो छप रहा है।

श्री सत्यनारायण शर्मा:-बृजमोहन अग्रवाल जी प्रधानमंत्री की दुहाई दे रहे हैं वो वाक्या भुल गये जो उनको टेबल के नीचे घुसना पड़ा था। उसको भी याद कर लीजिए। वो छोड़िए सब बातें, अब जनता ने आपको आदेश दिया, जनादेश दिया है, विपक्ष में बैठने का, केवल गला फाड़िये।

.........श्री अरविंद

अरविंद\08-01-2019\c13\01.05-01.10

.........श्री सत्यनारायण शर्मा :- अब जनता ने आपको विपक्ष में बैठने का आदेश दिया है, जनादेश दिया है, केवल गला फाड़िये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बैठे हैं।

श्री दीपक बैज :- सत्तू भैय्या, अभी उधर वही स्थिति होने वाला था।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अभी आप गला फाड़िये, नारे लगाईये, जमीन पर बैठिये, बहिर्गमन करिये। इसके अलावा कुछ नहीं। जनता ने आपको इसी लायक समझा है। यहां बैठा दिए हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप नारा लगाते थे, गांधी प्रतिमा के पास जाते थे तो तुरन्त चाय-पानी का इंतजाम करता था या नहीं ? यह बताईये। आपका इंतजाम पता था या नहीं ?

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- आप भी जाओ न, हम करेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपको कौन सा पानी चाहिए ?

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- अजय भाई, आपका पूरा इंतजाम करेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपको कौन सा पानी चाहिए ? (हंसी) अध्यक्ष जी, उनको हमेशा इस पानी की तलाश रहती है। (हंसी) हमारी सरकार में लखमा जी, आपको जरूरत पड़ेगी तो लखमा जी जरूर उपलब्ध करा देंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सरकार आपका ख्याल नहीं रख रही है। आपसे खाली भाषण करवा रही है। आप किस रूप में भाषण दे रहे हैं ? आप प्रत्याशा में भाषण दे रहे हैं क्या ? आप मंत्री बनने वाले हैं, उसकी प्रत्याशा में भाषण दे रहे हैं ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इसकी आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप पिछली बार नेता प्रतिपक्ष बनना चाहते थे, पिछली बार भी वंचित किया गया, इस बार भी वंचित किया गया, आप उधर बैठेंगे तो मैं आपके लिए तुरन्त पानी भेजूंगा। आप धरना में बैठिये।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपको कैसे मालूम ?

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- ये दोनों पीड़ा व्यक्त कर रहे हैं। उधर नहीं पहुंच पाये।

श्री सत्यनारायण शर्मा :-आपको कैसे मालूम कि क्या बनना चाहते थे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री जी ने एक पद में मंत्री पद का शपथ नहीं दिलाया है। क्योंकि एक अनार और सौ बीमार इधर बैठे हैं। सबको एक-एक बार दिखाते रहते हैं तो रात को टेलीविजन में भी जाते है, दिन में बोलते हैं। अमरजीत भाई भी अभी लौटकर अम्बिकापुर नहीं गए हैं। वोरा जी कहां गए, गायब गए हैं। राजिम के मठाधीश, पता ही नहीं है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- हम लोग पहले भी एक थे, आज भी एक हैं और आगे भी एक रहेंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- और किसी दांव की तारीफ करें या ना करें, लेकिन आपकी एक लॉलीपाप, एक अनार और सौ बीमार की तारीफ हम जरूर करेंगे। सब चुप रहेंगे, आप उसको बनाना भी नहीं। (हंसी) ये तभी तक बोलते रहेंगे। ये तभी तक लेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप लोगों ने तो दर्शक मंडल बना दिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री विनोद सेवन लाल चन्द्राकर :- शिवरतन भैय्या, हम लोग आप लोगों की तकलीफ समझ रहे हैं। 15 साल तक राज किए हैं, आप बाहर बैठे हैं, तकलीफ समझ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आप अपनी बात कहिये, इनको छोड़िये।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक-एक सायकल और एक-एक मोटर सायकल देकर फुर्सत करिये।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आप अपनी बात कहिये।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये किसानों की पीड़ा क्या समझे ? ये किसानों की पीड़ा को क्या जानेंगे, जो किसानों को बोनस देने के लिए तैयार न होते हों ? किसानों के बोनस पर डाका डालने वाले लोग किसान की क्या पीड़ा समझेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है कि आपकी पीड़ा को माननीय मुख्यमंत्री जी नहीं समझते हैं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपने किसानों को पानी तक नहीं दिया। बृजमोहन जी, आपने किसी भी फसल में किसानों को पानी तक नहीं दिया और मध्यप्रदेश में गंगरेल का जो डेड वाटर था, जो रिजर्व वाटर था, प्लेट काटकर किसानों को पानी दिया गया। किसानों का दर्द आप क्या समझेंगे ? किसान की पीड़ा को आप क्या समझेंगे ? किसी भी फसल में किसानों को आपने पानी नहीं दिया। किसान उस पीड़ा से आज तक भुक्तभोगी हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने अपने शासनकाल में घोषणा कर दी थी कि रबी के लिए पानी देंगे। आपकी सरकार ने अभी तक घोषणा नहीं की है। किसान रबी का पानी मांग रहे हैं। पर्याप्त पानी है, आप पानी क्यों नहीं दे रहे हैं ? आप किसानों को पानी दीजिये आप क्यों चुप हैं ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप चिंता मत करिये। वह सारी कमियां पूरी कर ली हैं। आपने तो केवल घोषणा की है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने कहा था कि पानी है, पानी क्यों नहीं दे रहे हो। पानी दो जरा।

श्री विनोद सेवन लाल चन्द्राकर :- मंत्री जी, आप आसान तरीके से पानी नहीं दिए थे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अब आपको किसानों की चिंता करने की जरूरत नहीं है। किसानों की चिंता करने वाले हमारे मुख्यमंत्री जी बैठे हैं, रविन्द्र चौबे जी बैठे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- किसान की चिंता करेंगे और हम आपकी भी चिंता जरूर करेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :-आप इसी गलतफहमी में जिंदा रहिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा आपके साथ धरना देने चलेंगे मुख्यमंत्री निवास के सामने, कि आपको मंत्री बनाया जाये।

श्री अजय चन्द्राकर :- जैसे भाटो ने किया, वैसे ही आप करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- शिवरतन जी, आपका ख्याल तो मोहम्मद अकबर साहब करेंगे। आप चिंता मत करिये। आप कहां थे, कैसे थे, क्यों थे और कैसे हो गए हो, इसकी चिंता अब मोहम्मद अकबर साहब करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप चाहे कुछ भी बोलिये, लेकिन हम लोग आपकी चिंता करेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अच्छा ठहरिये। आप हमारी चिंता में जहर खा लीजिये, जाईये। जहर खाईये (हंसी) आप हमारी चिंता में जहर खाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कुछ भी बोल लो। हम लोग आपकी चिंता जरूर करेंगे।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप अपने मकान की मंजिल से, मकान के छत से कूद पड़िये।

श्री अजय चन्द्राकर :-आप हमारी चिंता का विषय है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप पेट्रोल लेकर आग लगा लीजिये। (हंसी) आप कुछ नहीं कर पायेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कुछ दिन रूक जाईये। अपन भाटो के साथ प्रदर्शन करेंगे। भाटो पिछली बार किये थे, वैसा।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अगर आपने पेट्रोल लेकर आग लगाई, तो वही पुलिस को कभी आपका हुकुम मानती थी, वही पुलिस आपको आत्मदाह करने के आरोप में आपको अरेस्ट भी कर लेगी।

........श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\c14\1.10-15

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, साला-भाटो के चक्कर में सदन का समय बरबाद हो रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, आप अपने समय का ध्यान रखें ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, (विपक्ष की ओर इशारा करते हुए) इनको समझाइए । ये लोग समझ जाएं तो सब काम ठीक चलेगा । मैं भारतीय जनता पार्टी के साथियों को बताना चाहता हूं कि अब हमारे घोषणा-पत्र को केवल आप कागजी दस्तावेज मत समझिए, जनता ने इस दस्तावेज पर मोहर लगायी है, जनता ने हमारे घोषणा-पत्र पर मोहर लगाकर ये साबित कर दिया कि कांग्रेस की सरकार आज है और उन लोगों ने कांग्रेस सरकार को इस लायक समझा कि कांग्रेस पार्टी की सरकार यहां राज करे और जनता को सारी सहुलियतें दें और इसलिए आपको अब कुछ करने का मौका नहीं है । माननीय बृजमोहन जी, आपका मौका हाथ से निकल गया, उस वक्त आप किसी की सुनते नहीं थे, विपक्ष की परवाह नहीं करते थे और इतना भ्रष्टाचार करते थे, इन्होंने भ्रष्टाचार के अलावा कुछ किया ही नहीं। (हंसी) मैं बताना चाहता हूं, पूर्व मुख्यमंत्री जी पी.डब्ल्यू.डी. की बात कर रहे थे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, अभी तक बजट के ऊपर में सत्यनारायण जी ने एक

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

शब्द भी नहीं बोला, खाली कथा कह रहे हैं । अध्यक्ष जी, आप उनको बोल दें कि वे बजट के ऊपर बोलें । वे बजट के ऊपर तो बोल ही नहीं रहे हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके पूर्व मुख्यमंत्री जी ने क्या बोला, बजट के ऊपर बोला क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनको सत्तारूढ़ दल की ओर से बजट के बारे में लिखकर ही नहीं दिया गया है, वित्त मंत्री जी ने उनको लिखकर ही नहीं दिया है तो वे कैसे बोलेंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, और कथा के लिए दूसरे स्थान हैं, हम उसकी व्यवस्था कर देंगे । सत्यनारायण जी, आप कथा कहना चाहते हैं तो आपके लिए पंडाल हो जाएगा, व्यास पीठ हो जाएगी । आपकी कथा सुनने के लिए हम लोग आएंगे, पर आप विधान सभा में तो कथा मत कहिए ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अब आप मण्डलेश्वर नहीं रहे, बैठ जाईए । जिन लोगों ने आपको मण्डलेश्वर का पद दिया था, उन्होंने ये पद छीन लिया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, सत्यनारायण जी के लिए बाबा रामदेव से बात हो चुकी है, हरिद्वार में उनका इंतजाम हो जाएगा । (हंसी) अब ये मुख्यमंत्री के ऊपर है कि वे उनको हरिद्वार भेजना चाहते हैं या अपने पीछे बैठाना चाहते हैं (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, तीन घंटे का समय निर्धारित है, ज्यादा टोका-टोकी न करें । आप सबसे निवेदन है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष जी, आप उन पर नियंत्रण करिए ।

अध्यक्ष महोदय :- उन्हीं को कह रहा हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, रामदेव बाबा से क्या चर्चा हुई है, जैसा कि सदन में सूचना दी गई है, उसको सारा सदन जानना चाहता है कि धर्मजीत जी ने माननीय सत्यनारायण जी के बारे रामदेव बाबा से क्या चर्चा की है या हुई है? संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, माननीय बृजमोहन जी संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं, माननीय अजय जी संसदीय कार्यमंत्री रहे हैं, माननीय शिवरतन जी सचेतक रहे हैं, हमारे पक्ष के सबसे वरिष्ठतम सदस्यों में से सत्यनारायण जी एक हैं । उनको कहने दीजिए । अब हर लाईन में आप टोका-टाकी करेंगे । अध्यक्ष जी, फिर इनको आप प्रताड़ित करिए, उनको बोलने दीजिए । (हंसी)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, हमारे घोषणा-पत्र के हर वादों को अमलीजामा पहनाने की जिम्मेदारी हमारी है, आपकी नहीं है और क्या आपके डा. रमन सिंह जी ने बजट पर भाषण दिया था ? वे सड़कों की बात कर रहे थे । अब उनको चिन्ता हो गई कि जो कमीशन है, उसका रिफंड वाऊचर बनाना पड़ेगा । जो ले चुके हैं, वह वापस करना पड़ेगा । (हंसी) उसकी चिन्ता है इसलिए सड़कें

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

याद आ रही हैं । हम लोग कहा करते थे कि हमारे क्षेत्र में सड़क बनाईए, लेकिन सड़क नहीं बनी। वे सड़क छोड़कर स्काई वाक बनाएंगे, स्काई वाक बना डाला । इसका क्या उपयोग है, रमन सिंह जी बताएं । अपने मंत्रियों को खुले हाथ से जनता के पैसे को बरबाद करने के लिए छोड़ रखा था, छुट्टा छोड़ रखा था । एक्सप्रेस वे बन रहा है, उसकी क्या हालत है, उसको भी देखिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने एसआईटी की मांग की है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- वह भी पता लग जाएगा कि मैंने क्यों मांग की है? मैंने बताया कि रिफंड वाऊचर बनाना पड़ सकता है इसलिए आपको तकलीफ हो रही है कि सड़कों का काम रोक दिया। आपने जो गलत काम किये हैं, वह सब गलत काम सरकार रोकेगी । क्योंकि उसके पीछे जनहित की आपकी कोई भावना नहीं थी । केवल लूट-खसोट की भावना थी, कमीशन खोरी की भावना थी । (मेजों की थपथपाहट) इसलिए आपके तत्कालीन मुख्यमंत्री ने कहा था कि कम से कम एक साल तो कमीशन खोरी बंद कर दो, इस पर आप चुनाव लड़ रहे हैं । ये आपके चुनाव के वायदे हैं, आप क्या बात करेंगे ? कोई बजट की बात नहीं है, वित्तीय प्रबंधन की बात बताएंगे । वित्तीय प्रबंधन की बात रमन सिंह बताएंगे, उनसे आपको सीखना पड़ेगा कि वित्तीय प्रबंधन क्या होता है ?

माननीय अध्यक्ष जी, विधान सभा का सबसे बड़ा, बजट के आकार में देखिए, 10395 करोड़, 58 लाख, 25 हजार, 400 रूपए ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\c15\01.15-01.20

जारी....श्री सत्यनारायण शर्मा :- 10,395 करोड़ 58 लाख 25 हजार 400 रूपये । आपकी तरह 420 रूपये हमने नहीं लिखा, 400 रूपये लिखा है । आप बजट को देख लीजिए । आपका कोई फिगर देखे, अंत में 420 लिखा रहता था । अब आप हेराफेरी बंद करिये, जनता ने आपको सही जगह बैठा दिया । अब आप जनता की आवाज को सुने । माननीय अध्यक्ष जी, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने और मंत्रिमण्डल के साथियों ने किसानों के दर्द को समझा और हमारे घोषणा पत्र में यकीन किया, भरोसा किया । माननीय अध्यक्ष जी, ये हर वख्त कांग्रेस के घोषणा पत्र की नकल किया करते थे । कांग्रेस का घोषणा पत्र जारी हुआ....!

श्री शिवरतन शर्मा :- सत्तू भईया, मुख्यमंत्री जी ने आपके दर्द को नहीं समझा । आपके दर्द को समझ लेते तो ठीक हो जाता ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- शिवरतन भईया, मोहम्मद अकबर साहब का रिफरेंस दिया, उसके बाद भी आपको समझ में नहीं आ रहा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- पूरा समझ है । पूरी की पूरी समझ है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- खूब पैसा बांटकर बच गये हो । उसका हिसाब-किताब है इधर । इसलिए मुझसे उलझने की कोशिश मत करो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बजट-वजट में जैसे नहीं बोले ना.....

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अरे भईया, तुम तो इसमें ही डूबे रहो । क्या करना है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- जैसे बजट में नहीं बोले हो ना ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- हो गया ना आपका फैसला ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप मुख्यमंत्री जी की.......।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आस से अधिक संपत्ति के मामले में हाई कोर्ट ने आपको छोड़ दिया । हाई कोर्ट ने आपको दोषमुक्त कर दिया । अब क्या बीच में बोल रहे हो । अब अंदर की बात को अंदर रहने दो भईया ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ज्यादा टोका-टाकी मत करो, पब्लिक सब समझ गई ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :-माननीय अध्यक्ष जी, हमारे घोषणा पत्र की नकल करने वाले लोग, हमारा घोषणा पत्र पहले जारी होता था, थोड़ा सा बढ़ाकर जनता के बीच में ला देते थे । इस बार आपको मौका नहीं मिला । हमारे टी.एस.सिंहदेव साहब ने हर वर्ग से, हर समूह से, हर जगह-जगह जाकर, हमारे मुख्यमंत्री जी ने सब जगह राय लेकर, सब जगह बातचीत करके, हमारे घोषणा पत्र को तैयार किया । इसके 36 बिन्दु हैं । छत्तीसगढ़ के लोगों ने हमारे घोषणा पत्र के 36 बिन्दुओं पर मुहर लगाई है । अब आपको इस बात की आगे चिन्ता करनी है । यह आपकी जिम्मेदारी नहीं है, यह हमारी जिम्मेदारी है । हमारी सरकार की जिम्मेदारी है कि हम अपने वादों को कैसे पूरा करें और जरूर करेंगे । आप बिजली के बिल के हाफ की बात कर रहे थे, आप देखते जाईये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे आपको एक बात बताऊं, यह शराबबंदी और कर्जा माफी आप पार्टी ने की थी । लेकिन आप पार्टी में मुहर नहीं लगी । आप बात को समझ रहे हैं । भूपेश बघेल जी में मुहर लगी, इसके चक्कर में जीत गये । नहीं तो आप जय श्रीराम थे । आपको बधाई हो, माननीय मुख्यमंत्री जी नहीं बनाये, ठीक किये ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अभी पांच मिनट पहले तो कुछ और बोल रहे थे । आप तुरन्त पासा पलट दिये ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इस बार का हमारा जो घोषणा पत्र है, जो हमारे जनता से वादे हैं, उसकी चिन्ता इनको करने की नहीं है । पिछले विधानसभाओं में, पिछले सत्रों में हम लोग इनके तीन सत्रों के घोषणा पत्रों को दिखाते थे । कहते थे कि कोई वादा तो पूरा कर दो ? नहीं कर पाये, जिसके कारण यह हालत हुई है । आपने जो जनता से वादाखिलाफी की, उसके कारण जनता ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आपको उधर बिठा दिया । अब शांति से हमारा प्रवचन सुनिये और आर्शीवाद लीजिए, इसी में आपका कल्याण है । शिवरतन शर्मा जी, चन्द्राकर जी, अब आप लोग शांति से हाथ जोड़िये, इसी में आपका कल्याण है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपका भी कल्याण हो ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप चिन्ता मत करिये, मेरे कल्याण की चिन्ता करने की जिम्मेदारी आपकी नहीं है । माननीय अध्यक्ष जी, हमने यह घोषणा पत्र जनता को प्रलोभन देने के लिए, जनता को गुमराह करने के लिए तैयार नहीं किया है, बल्कि जनता को राहत देने के लिए किया है । इसलिए आप मानकर चलिये कि हमारे घोषणा पत्र के सभी वादों को पूरा करेगी । आप प्रतीक्षा तो करिये । आप इंतजार नहीं करना चाहते । माननीय मुख्यमंत्री जी ने किसानों के लिए जो काम किये हैं, अभी तृतीय अनुपूरक बजट में जो प्रावधान रखे हैं, उसमें सबसे बड़ा यह है कि किसानों को उनकी फसल का ढ़ाई गुना मूल्य वृद्धि हो चुकी है । वर्ष 2018 में प्रदेश के किसानों को खरीफ फसल में 2500 रूपये प्रति क्विंटल धान खरीदने का निर्णय लिया है । इतिहास में यह सबसे बड़ा निर्णय है । किसानों के प्रति हमदर्दी हमारी है । आप तो कुछ कर नहीं पाये । माननीय अध्यक्ष जी, मैं बताना चाहता हूं कि नई राजधानी में इन लोगों ने किसानों की जमीनों को खरीद डाला है । किसानों को घर से बेघर कर दिया । उनकी छत छीन ली । उसके बाद भी कभी साढ़े पांच लाख, कभी सात लाख मुआवजा दिया और उस जमीनों को..........

जारी ....श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\c16\.-.5

जारी.. श्री सत्यनारायण शर्मा :- उसके बाद भी कभी 5.5 लाख, कभी 7.0 लाख रूपये मुआवजा दिया और उन जमीनों को 50-50 लाख रूपये में, वर्गफुट पर बेचने की इनकी तैयारी चल रही थी, अब सारे काम धराशायी हो गये। सारे कामों पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने रोक लगाकर आपको सबक सिखाने का काम भी किया। 2018-19 में भारत सरकार द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य धान ग्रेड-ए के लिए 1770 रूपये तथा सामान्य धान के लिए 1750 रूपये के न्यूनतम समर्थन मूल्य के अतिरिक्त हमारी सरकार द्वारा 300 रूपये से बढ़ाकर धान ग्रेड-ए के लिए 730 रूपये प्रति क्विंटल तथा सामान्य धान के लिए 750 रूपये प्रति क्विंटल धान उत्पादन प्रोत्साहन राशि बोनस के रूप में दिये जाने का निर्णय लिया है। यह एक ऐतिहासिक निर्णय है। किसान इस निर्णय से काफी प्रसन्न हैं। इस बात की चिन्ता करने की आपको जरूरत नहीं है। आप न तो पहले किसान के हमदर्द थे, न आज हैं, न कल रहेंगे, इस बात को आप नोट कर लीजिए। व्यवसाय करना आपका काम है, व्यवसाय करते रहिए, माल बटोरते रहिए। हर जगह, कोई क्षेत्र आपने डाका डालने में छोड़ा है? हर जगह डाका डाला है। किसानों को पहले की तुलना में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ढाई गुना अधिक दर से उनका मूल्य मिल रहा है और उन्हें प्रोत्साहन राशि प्राप्त होगी। यह निर्णय कांग्रेस की सरकार में हमारे साथियों और माननीय मुख्यमंत्री जी ने लिया है। बढ़ी हुई राशि का लाभ खरीफ 2018 के धान की खरीदी के लिए मार्कफेड में पंजीकृत सभी 17 लाख किसानों को मिलेगा। ये बात भी बहुत स्पष्ट हो गई है। इसी तरह से लाभान्वित होने वाले कृषकों में 2 लाख 13 हजार महिला किसान, 1 लाख 87 हजार अनुसूचित जाति किसान तथा 4 लाख 7 हजार अनुसूचित जनजाति वर्ग के किसान परिवार भी शामिल हैं। हमारी सरकार द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य 750 रूपये प्रति क्विंटल की दर से बोनस दिये जाने के लिए तृतीय अनुपूरक बजट में 3070 करोड़ 10 लाख रूपये के अतिरिक्त राशि का प्रावधान रखा है। ये अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। अध्यक्ष महोदय, कर्जमाफी की बात मैं बताऊं। किसानों को कर्जमाफी के लिए 4233 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। जिसमें 3 हजार करोड़ रूपये सहकारी बैंकों एवं शेष 1233 करोड़ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के लिए किया गया है। अल्पकालीन ऋण माफी के अलावा धान उत्पादन प्रोत्साहन राशि योजना पर 3084 करोड़ रूपये का प्रावधान रखा गया। दलहन, तिलहन को भी समर्थन मूल्य पर खरीदी के लिए 100 करोड़ रूपये का इसमें प्रावधान है। परंपरागत किसान विकास योजना के लिए 249 करोड़ का प्रावधान इस तृतीय अनुपूरक बजट में रखा गया है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में कितना भ्रष्टाचार हुआ है ये तो जांच करने पर पता लगेगा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में एक कंपनी को लाभ पहुंचाने के लिए अलग-अलग राशि दी गई। राजस्थान में प्रीमियम की दर कुछ और है, यहां कुछ और है और मध्यप्रदेश में कुछ और है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में इतना भ्रष्टाचार किया गया, इसके लिए भी 1 करोड़ 27 लाख की राशि रखी गई है। मुर्गीपालन विकास योजना के लिए 1 करोड़ 27 लाख रूपये की राशि, कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए 167 करोड़, दुग्ध उत्पादन एवं अधोसंरचना के लिए 86 लाख रूपये, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए 1 करोड़ 53 लाख रूपये का प्रावधान इस तृतीय अनुपूरक बजट में रखा गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी जो सरकार थी, वह केवल बातें करती थी, लुभावने सपने दिखाती थी। हमारी सरकार ने ये प्रावधान करके यह साबित कर दिया कि ये सरकार किसानों की सरकार है। यह किसान और नौजवानों की सरकार है और ये सरकार गरीब लोगों की सरकार है। हम लोगों ने जो विद्युत माफी की बात की, आप धीरज रखिए, कुछ समय बीता है, उसकी भी तैयारी चल रही है। बिजली का बिल भी आधा माफ होगा। इसकी चिन्ता करने की आपको जरूरत नहीं है। चूंकि आपके पास इसका कोई अधिकार बचा नहीं रहा, केवल विपक्ष की भूमिका निभाईये। अपना रचनात्मक सहयोग सत्ता पार्टी को करते रहिए, जो काम अच्छे लगें कम से कम उसका समर्थन करिये। यही मैं आपको बताना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, आपने तीन घंटे का हवाला दिया है, आपने मुझे अवसर दिया है, मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री प्रमेश

प्रमेश\08-01-2019\c17\01.25-01.30

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं नहीं और बोलिए सुनेंगे सत्यनारायण भैया ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- और बोलेंगे तो पुरानी बातें ले आये।

श्री शिवरतन शर्मा :- ले आओ ले आओ ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- देखिए आपको तकलीफ होगी फिर बोलूंगा तो। अरे पांडे जी आपके लिए तो यही बहुत है। समझते हैं इसको, चलिए धन्यवाद ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अभी तो ट्रांसफर हो गया न । अध्यक्ष महोदय, पांचवी विधानसभा का अनुपूरक बजट का आज लगभग 10 हजार 3 सौ 95 करोड़ का बजट का अनुमान उपयोग करने के लिए अनुपूरक बजट आया है। इसपे मैं अपनी चर्चा कर रहा हूं कि जैसे आज पूरे बजट को इस देखने से लगभग मांग संख्या इनकी 24,35 और 24,01, 24025 और 2801 इसमें 2 मुख्य बातें आएंगी कि किसानों का कर्जा माफ होना चाहिए और प्रोत्साहन राशि देना चाहिए और बिजली का बिल आधे रखना चाहिए। इस बार इन्होंने जो अपने घोषणा पत्र को आयना बताते हैं अध्यक्ष महोदय, और आयना उस दल का विचार का की छत्तीसगढ़ को किस तरीके से ले जाना है, किस तरीके से विकास की प्रगति में ले जाना है वो उसका ये आयना के रूप में ये प्रस्तुत कर रहे हैं और ये जो पूरा बजट है। इस बजट में कुछ बातें तो इतनी भ्रामक बातें हैं जो छत्तीसगढ़ की जनता के साथ में, उसको छल कहा जाए या उसके छत्तीसगढ़ की जनता के प्रति केवल एक भ्रम का वातावरण बनाने का कहा जाए ये है। इसमें जो कर्जा माफी वाली बात आई है, अब इसपे कर्जा जो है। लघु सीमांत जबकि पूरे किसानों का कर्जा माफ करने की बात आई है। उसमें ये बात शामिल किया गया कि लघु किसान सीमांत किसान और उसमें अल्पकालीन ऋण ऐसे शब्दों का प्रयोग करके किसानों का कर्जा माफ जो है। कर्जा तो जैसे भी हो अध्यक्ष महोदय चाहे वो ट्रैक्टर के लिए कृषि कार्य के लिए जो कुछ भी हो, कृषि कार्य के लिए हो या ड्रीप एरिगेशन के लिए हो या अन्य तरीके से उसने किसानों से चाहे राष्ट्रीयकृत बैंक से लिया हो, या ग्रामीण बैंक से लिया हो या सहकारी सोसायटी से लिया हो किसी तरीके से लिया हो वो कर्ज उसकी माफ होनी चाहिए। परंतु उसमें किन्तु परंतु लगा करके वह जो किसानों के प्रति जो कर्ज की स्पष्टता होनी चाहिए थी वह स्पष्टता दिख नहीं रही है। ऐसा लगने लगा है कि किसानों की ये भ्रम की स्थिति पैदा कर दी है। अध्यक्ष महोदय, अभी जो बिजली के उदय योजना के अंतर्गत जो 32 करोड़ का प्रावधान करके रखे हैं, आने वाले समय में करेंगे, आने वाले समय में भी बिजली का बिल माफ करेंगे लगभग वो 4 हजार के आस पास अतिरिक्त भार पड़ेगा और इस तरीके से ये जो हम किस तरीके से बजट की व्यवस्था करेंगे तो हमारे पास वित्तीय भार जो है माननीय मुख्यमंत्री जी डॉ. रमन सिंह जी ने कहा कि लगभग 7

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रतिशत की ये वृद्धि अतिरिक्त भार पड़ेगा और इन भारों के लिए स्थिति ऐसा है इस ओर तो न जाएं हम जब तक जीये सुख से जीये कर्ज ले करके घी पीये इस अवधारणा की ओर न जाने कि ताकि छत्तीसगढ़ का जो छत्तीसगढ़ हो बढ़ाना चाहते हैं, छत्तीसगढ़ को गढ़ना चाहते हैं और वो छत्तीसगढ़ कर्ज में डूब न जाए इस बात की चिंता करनी पड़ेगी क्योंकि ....!

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मोबाईल बांटने से छत्तीसगढ़ नई डूब रहा था किसानों के कर्जा माफी करने से डूब रहा है छत्तीसगढ़ ।

डॉ. कृष्णमूति बांधी :- किसानों के कर्जा माफी से नहीं डूबेगा। किसानों के लिए जो भ्रम स्थिति अगर किसान ने ट्रैक्टर अपने कृषि कार्य के लिए लिया है तो उसका माफ होना चाहिए कि नहीं अगर ड्रीप एरिगेशन लगाया है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अभी जो किसानों का कर्जा माफ हुआ है उससे सहमत हैं या नहीं। हां या ना बोलिए।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- मध्यम कालीन दीर्घकालीन का जो कर्ज है इस पर कर्ज के माफ होने चाहिए या नहीं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय जी, 11 करोड़ जा मोबाईल पड़े हैं उसका क्या होगा। यहीं रिफंड बाऊचर बनाना पड़ेगा। सुंदरानी जी की कंपनी से खरीदा आपने वो नहीं आज। ये मोबाईल सुंदरानी को भी खा गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 11 करोड़ छत्तीसगढ़ की आबादी नहीं है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- मोबाईल किसका किसका रूक गया आपके।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बताओ न आप सरकार में हो आप बताओ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ये मोबाईल की जरूरत क्या थी आपको ।

श्री अजय चंद्राकर :- वो जनसंख्या ऐसे बढ़ गई। सुनिये तो वह जनसंख्या ऐसे बढ़ गई सत्तू भैया ऐ पेपर में हमने पढ़ा कि अफसरों को नई राजधानी के जनसंख्या बढ़ाने के निर्देश दिये गये हैं करके ये भी काम अब अफसरों को मिलने लगेगा कि अफसर अब जनंसख्या बढ़ाएंगे।

अध्यक्ष महोदय :- बांधी जी का भाषण जारी रहेगा। सभा की कार्यवाही अपराह्न 3:02 बजे के लिए स्थगित ।

(1:30 से 3:02 बजे तक अंतराल)

सविता\08-01-2019\c18\03.00-03.5

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

3:02 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय :- माननीय बांधी जी।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- डॉ. साहब, पहले दिन ही ये दुर्गति।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- पहले दिन ही यह हाल है।

श्री रविन्द्र चौबे :- न प्रथम पंक्ति, न द्वितिय पंक्ति कहां गायब हो गए? वैसे भी जनता ने गायब कर दिया, कुछ बचा है ?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- वैसे पर्याप्त संख्या में है, देखिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- कहॉं है ?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- ये देखिए आ गये।

(माननीय सदस्य श्री शिवरतन शर्मा जी के सदन में आने पर)

श्री रविन्द्र चौबे :- अच्छा आ गये। शिवरतन आ गये, मतलब सब आ गये। चलिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप सबका जवाब देने में इतने लोग सक्षम है।

श्री केशव चन्द्रा :- शिवरतन भईया एक आगे बढ़ जाईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं। अभी जनता ने यहां बैठाया है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय शिवरतन जी, हमने सोचा नहीं था कि ऐसी हालत हो जाएगी। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- हम तो सोचे थे कि आप वहां बैठेगे, लेकिन आपको उस लायक नहीं समझा गया, ये बड़े आश्चर्य की बात है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- बहुत लोगों को नहीं समझा गया।

श्री केशव चन्द्रा :- वे जाएंगे, बोल रहे हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, जो कर्ज माफी की गई है जो सीमान्त, लघु किसान और वृहद किसान हैं, उस कर्ज माफी में कुछ लोगों को छोड़ा गया है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय डॉ. साहब, वृहद किसान नहीं होते, बड़े किसान होते हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति महोदय, लघु, सीमान्त, मध्यम सब हैं। मैं तो बोला कि जो किसानी कार्य के लिए अपना ट्रेक्टर लेते हैं, ड्रिप एरीगेसन्स लगाते हैं और जो किसान अपने रोटोबेटर्स, कृषि उपकरण लेते हैं क्या ऐसे किसानों को भी कर्ज माफी में छूट दी गई है ? अगर छूट नहीं दी गई है तो निश्चित तौर पर उसको उसमें शमिल करना चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, जो दूसरी चीज है और जो बिजली कनेक्शन के लिए बात की गई है, करीब 23 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। लगभग इस पर जो छूट देने की बात है, उसका

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रावधान नहीं बनता और मेरा यह कहना है कि इस तरीके से केवल किसानों में एक भ्रम की स्थिति बनी हुई है। जो कर्ज माफी है, बिजली माफी है और घोषणापत्र में जो वायदा किया गया है वह पूर्णत: अभी की स्थिति में केवल एक हवा-हवाई बात दिख रही है। केवल किसानों का समर्थन मूल्य की बात है हम उसके लिए बधाई देते हैं कि आपने समर्थन मूल्य पर बेहतर ढंग से अच्छा सा निर्णय है, वह उस पर है, लेकिन बाकी मामलों पर किसान, युवाओं की स्थिति बिल्कुल भ्रम की स्थिति पैदा करके रखे हैं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- माननीय श्री अमरजीत भगत जी।

श्री केशव चन्द्रा :- माननीय भईया जी, उधर बदल गये हैं न ।

श्री चौधरी

चौधरी\08-01-2019\c19\03.05-03.10

सभापति महोदय :- देखिये अनुपूरक बजट में चर्चा हेतु 3 घंटे का समय निर्धारित है और दोनों दलों के प्रथम वक्ता काफी सविस्तार से अपनी बात कह गये हैं इसलिए मैं आप सबसे निवेदन करता हूं कि 5-5 मिनट में अपनी बात कहें तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री अमरजीत भगत (सीतापुर) :- माननीय सभापति महोदय, 5 मिनट में कैसे होगा?

सभापति महोदय :- 3 घंटे का समय निर्धारित है, इसलिए मैंने बात कही है। आप जो अपनी बात कहना चाहें, वह कहें।

श्री केशव चन्द्रा :- आपको प्रशंसा ही करना है, खामी को तो बताना नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, मैं वर्ष 2018-2019 के तृतीय अनुपूरक अनुमान की राशि दस हजार तीन सौ पन्चानबे करोड़, अन्ठावन लाख, पच्चीस हजार, चार सौ रुपये का अनुमोदन करने का सभा से निवेदन करता हूं। माननीय सभापति महोदय, इस नये वर्ष में पहली विधानसभा के इस सत्र में किसानों के लिए कर्ज माफी जैसे विषय आना वास्तव में अपने आप में महत्वपूर्ण है। मैं इस सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को भी धन्यवाद देता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अमरजीत जी, असत्य कथन मत करना, सत्यनारायण की कथा बोलो तो सत्य बोलो, असत्य मत बोलो।

श्री अमरजीत भगत :- जी शर्मा जी, आप तो पुराने साथी हैं। माननीय सभापति महोदय, सरकार में बैठने के कुछ घंटे बाद ही पहली दस्तखत किसानों के लिए किया। मैं उनको धन्यवाद देता हूं जिन्होंने प्रदेश के किसानों की दशा और दिशा को सुधारने के लिए ये पहल किया। (मेजों की थपथपाहट) मैं हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी जी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जो छत्तीसगढ़ दौरे पर आये और घूम-

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

घूम करके देखा कि किसानों की स्थिति दयनीय थी। किसान कर्ज में डूबे हुए थे, जगह-जगह आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे थे।

श्री भीमा मंडावी :- क्या कर्नाटक वाला बता रहे हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, उस डिप्रेशन से निकालने के लिए माननीय राहुल गांधी जी ने कहा कि हमारी सरकार जिस दिन बनेगी, मुख्यमंत्री कोई भी होगा, लेकिन उसको 10 दिन के अंदर कर्ज माफ करना पड़ेगा। मैं माननीय भूपेश बघेल जी को बहुत धन्यवाद देता हूं। हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने तो 10 दिन का टाइम दिया था, लेकिन हमारे मुख्यमंत्री जी ने 10 घंटे के अंदर कर्ज माफ करके ऐतिहासिक कदम उठाया है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति महोदय, ऐसे क्रान्तिकारी कदम वही व्यक्ति उठा सकता है जो उसको जानता हो, भोगा हो, उस परिवेश में रहा हो।

माननीय सभापति महोदय, पूर्व मुख्यमंत्री माननीय डॉक्टर रमन सिंह जी अपना भाषण दे रहे थे, हम उनका भाषण सुन रहे थे। उन्होंने किस प्रकार से लोगों को डराने की कोशिश की कि खाजाना खाली हो गया है, कुछ बचेगा नहीं, यहां अराजकता आ जायेगी। जैसे छोटे बच्चों को डराते हैं, वह वाला काम कर रहे थे। सभापति महोदय, यहां बैठे हुए लोग बहुत दृढ़-इच्छा शक्ति वाले हैं और अपनी दृढ़-इच्छा शक्ति के कारण ही इस पार आये हैं। माननीय राहुल गांधी जी ने तो 10 दिन का समय दिया था, माननीय बघेल जी ने 10 घंटे के अंदर उसको कर दिखाया। उधर डॉक्टर साहब जो बोल रहे थे, मेरे ख्याल से वह नाम के डॉक्टर हैं, छत्तीसगढ़ की जनता के नब्ज को नहीं पकड़ पाये कि उनका मर्म, दर्द क्या है ? जिसको बुखार थी, उसको सिरदर्द की दवा दे दिये .... (जारी)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\d10\03.10-03.15

जारी.........श्री अमरजीत भगत :- छत्तीसगढ़ की जनता की नब्ज को नहीं पकड़ पाये कि उनका मर्म क्या है, उनका दर्द क्या है ? जिसको बुखार था उसको सिरदर्द की दवा दे दिये और स्थिति क्या हुई आपके सामने है ।

श्री अजय चंद्राकर :- 10 घंटे क्यों बोल रहे हो, 10 पल ऐसा बोलो तो शायद सीट इधर मिल जाये । थोड़ी फ्लिर्टिंग करना है तो अच्छी फ्लिर्टिंग करो, हल्की-फुल्की फ्लिर्टिंग से काम नहीं चलेगा ।

श्री अमरजीत भगत :- आप अवसर तो दीजिये ।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आपने देखा न कि खाता में पैसा पहुंच गया है । इस्तीफा देने की बात किये थे लेकिन कुछ कर ही नहीं रहे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- जो बोले थे उस पर तो कायम रहना चाहिए ।

श्री अजय चंद्राकर :- फ्लटरिंग करो तो अच्छी करो ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- माननीय चंद्राकर जी, यह उचित नहीं है । बैठिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भैया आप इस्तीफा कब देंगे ?

सभापति महोदय :- माननीय चंद्राकर जी, आप संसदीय कार्यमंत्री हैं । आप बैठे-बैठे मत बोलें । जरा मेहरबानी करिये, शांत रहिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, हाथ जोड़कर एक निवेदन है।

सभापति महोदय :- माननीय सदस्य को बोलने दीजिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं आपसे हाथ जोड़कर निवेदन कर रहा हूं ।

सभापति महोदय :- मैं भी आपसे हाथ जोड़कर निवेदन कर रहा हूं । बैठिये ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- श्री अजय चंद्राकर भैया, मैं आपसे पूछ रहा था कि आप इस्तीफा कब देंगे ? कब देंगे भैया ? भले ही इधर से हम लोग अस्वीकृत करा देंगे लेकिन आप दे तो दें, अपना वायदा तो पूरा करिये ।

सभापति महोदय :- श्री अमरजीत जी, आप अपनी बात जारी रखिये ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, मैं यह कह रहा था कि भारतीय जनता पार्टी के लोगों की कथनी और करनी में बहुत अंतर है । झूठ बोलने में बहुत माहिर हैं और इधर वाले दिल से राजनीति करते हैं । उधर वाले तो मन की बात सुनते हैं, मन की बात करते हैं, इधर वाले दिल की बात करते हैं और जो काम किया है माननीय भूपेश बघेल जी ने वह दिल से काम किया है । (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति महोदय, मैं इन लाईनों के साथ अपनी बात कहना चाहूंगा कि - जाके पैर न फटे बेवाई, वो का जाने पीर पराई । (मेजों की थपथपाहट)

ये लोग राजनीति करते हैं बड़े लोगों के लिये, उद्योगपतियों के लिये, पूंजीपतियों के लिये और इधर वाले राजनीति करते हैं किसानों, मजदूरों, यहां के छत्तीसगढ़ के निवासियों के लिये । माननीय सभापति महोदय, उधर के डॉ. साहब नब्ज नहीं पकड़ पाये, सही ईलाज नहीं कर पाये, इधर के असली मामले में तो मैं श्री भूपेश बघेल साहब को और माननीय राहूल गांधी जी को मैं डबल डॉक्ट्रेट की उपाधि देता हूं जिन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता के नब्ज को पकड़ा, उनको क्या जरूरत है उसको पकड़ा और आज छत्तीसगढ़ में उसका नजारा और असर दिख रहा है । पिछले सत्र में जब बात चल रही थी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, जो व्यक्ति सदन का सदस्य नहीं है उसका बार-बार नाम का उल्लेख कैसे हो रहा है ? सदन की परम्परा रही है कि सदन के बाहर के व्यक्ति का नाम नहीं लिया जाता ।

श्री बृहस्पत सिंह :- श्री शिवरतन जी, जैसे आप पहले लिया करते थे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, यह व्यवस्था नहीं है । आसंदी से व्यवस्था आयी है कि जो सदन का सदस्य नहीं है उसके नाम का उल्लेख नहीं होना चाहिए, यह आसंदी की व्यवस्था है । उसको विलोपित किया जाता रहा है ।

श्री अमरजीत भगत :- अभी तो मैं मोदी जी पर भी आ रहा हूं आप देखिये तो।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसको विलोपित करना चाहिए ।

सभापति महोदय :- उन्होंने कोई आपत्तिजनक बात तो कही नहीं है ।(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, आखिर वह सदन का सदस्य तो नहीं है न । फिर हम आलोचना करेंगे तो आप बोलेंगे । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- रिकॉर्ड देखकर के जो उचित होगा वह किया जायेगा । रिकॉर्ड देखने के बाद किया जायेगा । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आसंदी से कई बार इस विषय पर व्यवस्था आयी है ।

श्री अजय चंद्राकर :- यह क्या परम्परा है ? आज मैंने एक व्यक्ति का नाम लिया तो आपने कहा कि वह परंपरा नहीं है (व्यवधान) मैंने वापिस ले लिया । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- परंपरा तो आपने बनायी है । (व्यवधान)

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- पिछले 5 सालों में मैंने देखा है कि आपके भाषण शुरू होते ही सबसे पहले श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का और मोदी जी का नाम आता था । आपने ही परंपरा शुरू की है । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- कोई आरोपात्मक बात नहीं कही गयी है । आरोपात्मक बात कही गयी हो तो बात समझ में आती है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आज सुबह मैंने कहा था जब आपने आपत्ति उठायी, हंसे, मैंने कोई आरोपात्मक बात नहीं कही थी, मैंने सिर्फ नाम लिया था ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- हमारे श्री अजय भाई बहुत विद्वान हैं। मैं आपकी ही बात कर रहा हूं । आज लंच के पहले एक पूर्व संसदीय मंत्री के सामने दूसरे संसदीय कार्यमंत्री बैठे हुए थे..................जारी

..........श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\d11\03.15-03.20

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, हमारे अजय भाई बहुत विद्वान हैं । आज लंच के पहले एक पूर्व संसदीय कार्य मंत्री के सामने दूसरे संसदीय कार्यमंत्री बैठे हुए थे । उन्होंने दिल्ली में सवर्ण समाज के आरक्षण में किसका नाम लिया था।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रधानमंत्री का ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अच्छा, आप नाम ले सकते हैं और हम नहीं ले सकते ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह विषय नहीं है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- बिल्कुल यही विषय है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, आप ट्विस्ट कर रहे है । मेरा विषय यह है कि यदि नाम लिया जा सकता है तो लेंगे । ऊपर से व्यवस्था आ जाए कि नाम ले सकते हैं तो लेंगे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं आप ही से कह रहा हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप प्रशंसा करते हुए नाम ले सकते हैं तो फिर आलोचना भी कर सकते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसमें किसी तरह की व्यवस्था आ जाए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- केवल उसी संदर्भ में नाम नहीं लिया जा सकता कि उसको जवाब देने का अवसर नहीं मिलता । अगर किसी फैसले के सम्मान में उन्होंने नाम लिया तो नाम यहां भी लिया जा सकता है और यह छत्तीसगढ़ के किसानों के सबसे बड़े हित का निर्णय लेने वाले हमारे नेता आदरणीय राहुल जी हैं (मेजो की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने किसानों को धोखा देने वाली बात की है कौन सा हित का निर्णय किया है । पूर्ण कर्जा माफी की बात थी ।

श्री बृहस्पत सिंह :- देखो, आपके हल्ला करने के कारण कितना अच्छा फैसला सुनाया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम किसी के विरोधी हैं या समर्थक हैं, यह दूसरी बात है । यदि इस कारण से कि किसी व्यक्ति को स्पष्टीकरण देने का अवसर नहीं मिलता है इसलिए किसी का नाम नहीं लिया जा सकता । आज सुबह जब मैंने केवल नाम लिया था और कोई ऐसी बात नहीं की थी तो आपने आपत्ति उठाई, तब मैंने वापस लिया । अभी ऐसी कौन सी परिस्थिति या कौन सी बात हो गई जिसके कारण एक व्यक्ति का 100-100 बार नाम लिया जा रहा है । हर भाषण में, हर दूसरी लाईन में उल्लेख हो रहा है । (व्यवधान)

डॉ. शिव डहरिया :- एक हजार बार उल्लेख किया जाएगा, आपको मिर्ची क्यों लग रही है । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- चलिए, सदन की कार्यवाही चलने दीजिए । अमरजीत जी अपना भाषण जारी रखें ।

श्री लालजीत सिंह राठिया :- हजार बार नाम लिया जाएगा ।

सभापति महोदय :- ऐसी कोई चर्चा न करें जिससे उनको आपत्ति हो ।

डॉ. शिव डहरिया :- जिसने किसानों के लिए काम किया उसका नाम क्यों नहीं लेंगे ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अरूण वोरा :- मैं माननीय पूर्व संसदीय कार्यमंत्री जी से पूछना चाहता । पिछले सत्र में भी मैंने कहा था कि हम लोग 2018 में यहां बैठेंगे । 2019 में राहुल गांधी जी देश के प्रधानमंत्री बनेंगे, फिर आप क्या करेंगे ? (मेजो की थपथपाहट) आप ये बताइए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा है सभापति महोदय, इतने बड़े भविष्यवक्ता हैं तो खुद कब बनेंगे ये बता दें ?

सभापति महोदय :- आप भाषण जारी रखिए।

श्री अमरजीत भगत :- ये लोग बोलने देंगे तब तो बोलूंगा । जिस प्रकार से सीनियर सदस्य यहां व्यवधान कर रहे हैं, क्या यह शोभनीय है?

डॉ. शिव डहरिया :- अजय भाई, हमारी उम्र देख लो, अभी 30साल यही रहेंगे। आप सुबह से शाम तक केवल बहिर्गमन करने का काम करना ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, अमरजीत भगत जी बार-बार मांग कर रहे थे कि राहुल गांधी जी को डॉक्टोरेट देना चाहिए । हमसे मांग क्यों कर रहे हो, सीधे दे दोना डॉक्टोरेट । राहुल गांधी को डॉक्टोरेट, पीएचडी, फॉरेन रिटर्न जो भी करना कर, आप कर दीजिए (मेजो की थपथपाहट)।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भइया, 2019 में हमारे देश की जनता उनको डॉक्टोरेट की उपाधि देगी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- फिर यहां मांग मत करो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राहुल गांधी जी बार-बार थाईलैंड क्यों जाते हैं बताओ जरा ?

सभापति महोदय :- आप अपने विषय तक सीमित रहें और चर्चा जारी रखें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और वह भी पट्टाया जाते हैं, क्यों जाते हैं, यह बताओ ?

श्री अरूण वोरा :- पट्टाया की जानकारी आपको कैसे है, पट्टाया में होता क्या है ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय मंत्री जी भी वहां जाते हैं, इसलिए पता है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, हम नाम ले तो गलत है और वे नाम लें तो अच्छा है । ऐसा क्यों लगता है आपको ? बहुत से लोगों को तो ऐसा लग रहा है कि वे अभी भी मंत्री है । भई सरकार बदल चुकी है, सूबे का मुखिया बदल चुका है। अब आपको भी अपनी मानसिकता बदलनी पड़ेगी । जिस अंदाज से आप लोग बात कर रहे है ।

सभापति महोदय :- बृजमोहन जी ठीक कहते हैं, धीरे-धीरे आदत छूटेगी ।
अभी तो 15 दिन ही हुए हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, आपको तो 10 साल, 15 साल बाद भी लगता था कि आप मंत्री हैं । हमको तो अभी 15 दिन ही हुए हैं, थोड़ा इंतजार तो कर लो । (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- ठीक कह रहे हैं आप । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति जी, हमको लग रहा है या नहीं लग रहा है यह अलग विषय है । लेकिन उनको क्या लग रहा है, उनका क्या होगा ?

श्री अमरजीत भगत :- सभी साथियों को मैं साधुवाद ज्ञापित करता हूं । आप सभी ऐसे विषय पर चर्चा करने के लिए उपस्थित हैं, जहां किसानों के भविष्य के बारे में ....जारी

-----श्री ठाकुर-

ठाकुर\08-01-2019\d12\03.20-03.25

जारी.............श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, सभी साथियों को मैं साधुवाद ज्ञापित करता हूं कि आप लोग ऐसे विषय में चर्चा करने के लिए यहां उपस्थित हैं। जहां किसानों के भविष्य के बारे में, दिशा के बारे में, दशा के बारे में आप यहां आबंटन जारी करने वाले हैं। आप लोगों को बहुत भगवान सद्बुद्धि दे कि आप जब-जब बात किये तो बड़े उद्योगपतियों के बारे में बात किये आपने जब-जब बात किया तो अदानी और अंबानी के बारे में बात किया और हम जब बात करते हैं, हमारे मुखिया जब बात करते हैं या काम करते हैं तो किसानों के बारे में बात करते हैं। किसानों के कर्जा माफी के बारे में बात करते हैं। उनके धान का कीमत बढ़ाने की बात करते हैं। हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि बजट का एलोकेशन कहां से होगा, इतना आबंटन कहां से आयेगा? छत्तीसगढ़ का खजाना खाली हो जाएगा। माननीय डॉ. रमन सिंह जी आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है। आपको बहुत मौका मिला था। 15 साल का मौका जनता ने दिया था लेकिन इन 15 सालों में आपने उल-जुलुल का, एक-दूसरे को फंसाने का काम, एक-दूसरे को उलझाने का काम इसी में पूरा समय गंवा दिया। आपके सरकार की तरफ से एक योजना चली थी पिछली सरकार में कि डीजल नहीं खाड़ी से अब डीजल निकलेगा बाड़ी से। स्लोगन देने में सरकार बहुत माहिर थी और पूरा विभाग, पूरी सरकार जितने डिपार्टमेंट हैं सब केवल एक ही काम में लगे थे। बाड़ी से पेट्रोल निकालने में, डीजल निकालने में। माननीय सभापति महोदय, यह कहते हुए बहुत दुख होता है कि अरबों रूपये इस छत्तीसगढ़ के खून-पसीने का पैसा, गाढ़ी कमाई का पैसा, किसानों का पैसा को इन्होंने पानी में फूंक दिया। भ्रष्टाचार का भेंट चढ़ा दिया। केवल कमीशनबाजी, केवल भ्रष्टाचार, एक बुंद के हिस्से का डीजल या पेट्रोल निकला हो तो बता दें। हमको तो कहीं नहीं दिखा। माननीय सभापति महोदय, काठ की हांड़ी एक बार ही चढ़ता है, बार-बार नहीं चढ़ता है। ये लोग झूठ बोले, जनता की आंखों में धूल झोंकने का काम किया और अंतिम विधानसभा सत्र में जिस अंदाज से पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने भाषण दिया था कि इस चुनाव के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बाद अपनी संख्या वहां तक गिनवाये थे बोले कि दो लाइन में सीमित हो जाएंगे। यहां की जनता दो लाइन में सीमित तो करी लेकिन भारतीय जनता पार्टी के लोगों को।

श्री बृहस्पत सिंह:- दो लाइन भी नहीं है।

श्री अमरजीत भगत:- उनको उनका सही जगह कहां होना चाहिए बता दी। आज भी जब चर्चा शुरू हुई, पूरे भाषण में कहीं किसानों का जिक्र नहीं किया उन्होंने। किसानों के लिए उन्होंने एक लाइन नहीं कहा। किसानों के प्रति उनका लगाव ही नहीं है। उन्होंने कभी खेती-किसानी किया ही नहीं है। आज उन लोगों से पूछिये जिनके खाते में सीधे पैसा पहुंच रहा है। जिनके ऊपर बैंक के कर्जा वसूली का दबाव रहता था। जो मानसिक रूप से परेशान रहते थे। कभी तहसीलदार का नोटिस, तो कभी बैंक का नोटिस। आज छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए लगभग 16 लाख 85 हजार से अधिक किसानों का।

सभापति महोदय:- अमरजीत से 20 मिनट हो गये हैं। जरा संक्षेप में करिए बात।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय सभापति महोदय, 2500 रूपये क्विंटल धान की कीमत देने का निर्णय और तो और माननीय सभापति महोदय।

श्री अजय चंद्राकर:- माननीय सभापति महोदय, एक मैं अपने सदस्य साथी से कह रहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी जिस मुद्रा और जिस वेशभूषा में आते हैं, आप देख लीजिएगा हू-ब-हू **(XX)**[4] की तरह लगते हो।

श्री डॉ. शिव डहरिया:- अरे सभी का नाम क्यों ले रहे हो भैय्या। अभी माननीय सभापति जी इन्होंने कहा था कि जो आदमी नहीं है इस सदन में उसका नाम नहीं लेना चाहिए। एक मिनट में उसको भुला दिया इसने। अब आप भैय्या कब इस्तीफा दे रहो हो उसको पहले बताओ, बाकी को बाद में बात करता हूं।

सभापति महोदय:- डहरिया जी, विलोपित कर दिया। चलिए।

श्री अमरजीत भगत:- माननीय सभापति महोदय, इस प्रदेश में छोटे खाताधारी लोग, छोटे भूखण्ड के जो किसान थे, आसामी थे..............................

...........जारी श्री अरविंद

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

[4] **(XX) अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।**

अरविंद\08-01-2019\d13\03.25-03.30

........जारी श्री अमरजीत भगत :- जो छोटे भूखण्डधारी किसान थे, आसामी थे, जिनकी 5 डिसमिल से कम जमीन की रजिस्ट्री नहीं हो रही थी, जिसका नामान्तरण नहीं हो रहा था तो वे लोग परेशान थे। यह सरकार ने उनके लिए निर्णय लिया है। आज छोटे किसान, मध्यमवर्गीय लोग जमीन लेकर मकान बना सकते हैं। मैं उसके लिए भी माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ।

सभापति महोदय :- अमरजीत जी, समाप्त करिये। 20 मिनट से ज्यादा समय हो गया है।

श्री अमरजीत भगत :- आधा समय तो ये हमारे उस पार के साथी लोग ले लिए।

सभापति महोदय :- उसको निकालने के बाद भी 20 मिनट से ज्यादा समय हो रहा है। 3 घंटा समय निर्धारित है, आप इतना ख्याल रखिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अमरजीत जी, हम आपसे दोस्ती निभा रहे थे और आप बोल रहे हैं कि समय ले लिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, यह सरकार लगातार एक से बढ़कर एक निर्णय जनहित में ले रही है, यहां के किसानों के हित के लिए ले रही है। बस्तर के लोहण्डीगुड़ा में 17 सौ हैक्टेयर जमीन किसानों से टाटा संयंत्र के लिए लिया गया था। संयंत्र नहीं खुला, जमीन अधिग्रहण शर्त के अनुसार 10 साल पहले ही वापिस कर देना था। लेकिन यह सरकार केवल समाचार-पत्रों मे, भाषण में ही शेखी बघारती रही है। लेकिन हमारे मुख्यमंत्री कुर्सी में बैठने के बार जो कैबिनेट की बैठक हुई, उसमें उन किसानों का लगभग 5 हजार एकड जमीन वापिस कर ऐतिहासिक कदम उठाया है। (मेजों की थपथपाहट) सभापति महोदय, इसको बोलते हैं किसानों के प्रति प्रेम और लगाव।

सभापति महोदय :- अमरजीत जी, आप केवल बजट पर सीमित रहिये और एक-दो मिनट में खत्म करिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, यहां कर्मचारी हैं, यहां काम करने वाले लोग हैं, उनके वेतन के लिए, जो काम चल रहा है, उसके लिए राशि की आवश्यकता है। पिछली सरकार ने तो बस्तर और सरगुजा जैसे वनांचल में जो वन उपज एकत्र करते हैं, उसका भी रेट माननीय मोदी जी ने घटा दिया था। मैं हमारे इस सदन के नेता हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि जो आदिवासी लोग वनोपज एकत्रित करते हैं, उसका दर, उसका रेट बढ़ाने के लिए जो क्रान्तिकारी कदम उठाया है, मैं उसके लिए भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूँ। माननीय सभापति महोदय, बोलने के लिए बहुत सारा विषय था। समय अभाव के कारण मैं ज्यादा न कहते हुए इतना ही कहूंगा कि सब मिलकर इस अनुपूरक को सर्वसम्मति से पारित करे। धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा लाए गए

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तृतीय अनुपूरक मांगों पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। इस पूरे वित्तीय वर्ष में इस अनुपूरक को मिलाकर करीब-करीब हमारा जो बजट होगा, एक लाख करोड़ रूपये का होगा। यह जो अनुपूरक है, वह 10,395 करोड़ रूपये का है। जो मेजर खर्च है, वह कर्जमाफी और धान बोनस के लिए है। कुछ शिक्षाकर्मियों के लिए भी किया गया है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे अपने भाषण में बतायेंगे कि शिक्षाकर्मियों के अनुदान है तो क्या-क्या है, कैसा-कैसा है, किन शिक्षाकर्मियों के ऊपर दिया गया है।

श्री बृहस्पत सिंह :- किसानों को मिलना चाहिए या नहीं, यह भी स्पष्ट कर दीजिये।

श्री सौरभ सिंह :- मैं बोल रहा हूँ, किसानों के लिए भी बोल रहा हूँ। समस्या यह है कि एक लाख करोड़ रूपये का बजट है। अभी आचार संहिता लगा था, पैसा आ गया था, आचार संहिता के कारण पैसे का वितरण नहीं हो रहा था। बहुत सारे ऐसे काम है, जिनको रोक दिया गया था और उससे पैसे का वितरण किया जा रहा है। सरकार है, सरकार की अपनी प्राथमिकताएं हैं। सरकार अपने हिसाब से पैसा खर्च करती है। परन्तु इस सदन का सदस्य होने के नाते और जनता कहना चाहता हूँ कि जो एक लाख करोड़ रूपये का बजट है, उस पैसे के बारे में जब आपका मेन बजट आयेगा, उसमें हम आपकी घोषणाओं के बारे में बात करेंगे कि उसमें कितनी घोषणाएं शामिल हुई है। यह अनुपूरक है। जब उसको मेन बजट में समायोजित किया जायेगा, तो फिर प्रदेश कैसे चलेगा, एक लाख करोड़ रूपया बजट में कहां से आयेगा ? माननीय टी0एस0 सिंहदेव जी, जो जी0एस0टी0 को देख रहे हैं, वे बोल चुके हैं कि जी0एस0टी0 की क्या पोजिशन है। तो हमारे पास पैसा कहां से आयेगा ? किस ढंग से यह सरकार चलेगी, किस ढंग से आगे पांच साल चलेगा। आपको पांच साल चलाना है, सरकार को मेन्डेट दिया है। तो पांच साल कैसे चलेगा, ये सबसे बड़ी परिकल्पना का विषय है।

.........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\d14\3.30-35

जारी...श्री सौरभ सिंह :- 5 साल कैसे चलेगा, ये सबसे बड़ी परिकल्पना का विषय है। मैं कहीं पर ये नहीं बोल रहा हूं कि किसान के कर्जमाफी की बात है करके । हमारे छत्तीसगढ़ में तीन तरह के किसान हैं । एक जो बड़े किसान हैं, इस सदन के बहुत सारे सदस्य किसान हैं, जिनको मैं बोलना चाहूंगा कि गौटिया किसान है । कुछ खेती करते हैं, कुछ लोगों को खेती करने के लिए देते भी हैं । दूसरे तरह के किसान जो हैं, जो सामान्य किसान हैं, जिनकी संख्या छत्तीसगढ़ में बहुत ज्यादा है । वे ऐसे किसान

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हैं, जो एक्चुअली खेती करते हैं ढाई एकड़, तीन एकड़, चार एकड़, पांच एकड, छः एकड़ का उनका रबका होता है, वे खेती करते हैं और तीसरे तरह के जो किसान होते हैं, जो किसी की जमीन लेकर खेती करते हैं, जिनको अगर हम शब्दों में प्रयोग करें तो लैण्ड लेस लेबर होते हैं, जो किसी और की खेती लेकर काम करते हैं । ये पूरी कर्ज माफी और पूरे धान खरीदी के बोनस में इन लैण्ड लैस लेबर को कुछ नहीं मिलेगा । उनके प्रति क्या होगा, उनको कुछ नहीं मिलने वाला है क्योंकि जो कर्ज है, वह उसी का कर्ज है, जिनके पास जमीन है, जिसका पंजीयन है, उसकी धान खरीदी हो रही है और बोनस भी उसी को मिलेगा, 25 सौ रूपये भी उसी को मिलेगा, जिसकी जमीन है, जिनके नाम पर पर्ची है और जिसके नाम पर है, उस किसान का क्या होगा, जो लैण्डलेस है, वह भी प्रदेश का किसान है, वह भी खेती करता है ।

मानननीय सभापति महोदय, मेजर थ्रस्ट एग्रीकल्चर के ऊपर है । कर्जमाफी की बात कर रहे थे । हमारे छत्तीसगढ़ में जो सिस्टम था, सहकारिता का जो सिस्टम चल रहा था, जितने पंजीकृत किसान थे, हम सारे लोग अपनी धान को बेचते थे, खाद के लिए, केसीसी के लिए और फर्टीलाईजर के लिए और बीज के लिए हम शार्ट टर्म लोन लेते थे । जब हम धान बेचते थे तो उस शार्ट टर्म लोन को हमारे खाते में समायोजित कर दिया जाता था, इस साल यह हुआ है कि जो शार्ट टर्म लोन था, उसा शार्ट टर्म लोन को समायोजित करके उसको कर्जमाफी कर दिए । अभी जो किया गया है, वह सहकारिता बैंकों में किया गया है, ग्रामीण बैंक में किया गया है । हमारा यह कहना है कि राष्ट्रीयकृत बैंक, जहां सबसे ज्यादा कर्ज है, सबसे ज्यादा केसीसी किसान का राष्ट्रीयकृत बैंक में कर्ज है, उस राष्ट्रीकृत बैंकों के लिए क्या होगा । आज जितना भी लोन है, न केवल हम जो धान की खेती करते हैं, उसका कर्ज ही नहीं, जो एलाइड खर्च है, डेयरी के लिए जो लोन दिया गया है, उसके बाद फिशरीज के लिए लोन दिया गया है, ट्रेक्टर के लिए लोन दिया गया है, खेत एम्प्रूवमेंट के लिए लोन दिया गया है, वह मैक्सिमम लोन नेशनलाइज्ड बैंक के थ्रू दिये गये हैं । वह जो बैंक के लोन हैं, उनके लिए क्या होगा । पूरे प्रदेश में ये भ्रम की स्थिति है कि कर्जमाफी है तो कितनी कर्जमाफी और किस किसान तक कर्जमाफी है । माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन है कि अपने उद्‌बोधन में इस बात को स्पष्ट करेंगे कि कितने दूर तक और कहां तक कर्जमाफी होगी, किस स्तर के किसान की कर्जमाफी होगी । मध्यप्रदेश में कहा गया है कि इतने लाख का किसान, इसके पास पेन कार्ड है, उसकी कर्जमाफी होगी, जो पेन कार्ड वाला किसान है, उसकी कर्जमाफी नहीं होगी करके । किस स्तर तक के किसान की कर्जमाफी होगी । इस पर कृपा करके स्पष्टीकरण आये ।

माननीय सभापति महोदय, धान खरीदी पर सरकार ने 450 रूपये अतिरिक्त दिया है । सरकार ने इस साल 85 लाख मेट्रिक टन धान खरीदी करने का एक लक्ष्य निर्धारित किया है । 85 लाख मेट्रिक टन में 53 लाख मेट्रिक टन की खरीदी हो गई है । पिछले वर्ष 58 लाख मेट्रिक टन की खरीदी हुई थी । सभापति महोदय, मैं ये जानना चाहता हूं कि अतिरिक्त धान कहां से आयेगी । हमारे यहां 25 सौ रूपये में धान बिक रही है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सौरभ सिंह जी, आपका कितना कर्ज माफी हुआ, ईमानदारी से बताइए ।

श्री सौरभ सिंह :- मेरा कोई कर्जा माफी नहीं हुआ ।

श्री अमरजीत भगत :- लोन नहीं लिए थे ।

श्री सौरभ सिंह :- मेरे खाते में पैसा नहीं आया है।

श्री अमरजीत भगत :- लोन लिए थे कि नहीं ।

श्री सौरभ सिंह :- मैं कर्ज लिया था, लेकिन मेरे खाते में पैसा नहीं आया है ।

श्री अमरजीत भगत :- आप अपना खाता चेक नहीं करवाये हो ।

श्री मोहन मरकाम :- सिंह साहब, छत्तीसगढ़ में 1 लाख, 20 हजार मेट्रिक टन धान उत्पादन होता है, हमने मात्र 85 हजार खरीदने का लक्ष्य निर्धारित किया है, ये आपको जानकारी होनी चाहिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भैया, तै ट्रेक्टर के लिए लोन ले होबे और तै भाजपा में आगे तो पूरा अकाल ही पड़ गे, जिहां जाथस, तिहां अकाल ही पड़ जाथे, बड़ा दिक्कत हे ।

श्री सौरभ सिंह :- ले ना भैया, तोर जो प्रत्याशी रिहीसे, तेकर का होइस, ओकर अकाल पड़ गे । तोर जो प्रत्याशी मोर लिखाफ चुनाव लड़े रिहीसे तेकर । मैं प्रदेश के हित की बात करथौं ।

सभापति महोदय, पिछले साल 58 लाख मेट्रिक टन धान खरीदा गया था, अगर बम्फर फसल भी होगी तो कितना लाख मेट्रिक टन बढ़ जाएगा । 58 से 85 लाख मेट्रिक टन । बगल के राज्यों में उड़ीसा से यहां धान आयेगा, मध्यप्रदेश से यहां धान आयेगा और आज ऐसी स्थिति बनी हुई है कि जो खाद्य अधिकारी हैं, वे वहां जा-जाकर छापामारी कर रहे हैं, छोटे किसानों के यहां छापामारी कर रहे हैं । जो व्यापारी हैं, उनसे व्यवस्था मिल जा रही है तो चल दे रहे हैं । जो व्यापारी है, वह छोटे व्यापारी है । मैं सीमांत किसानों की बात कर रहा था । जिसके पास पंजीयन नहीं है, जिसके पास...

श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\d15\03.35-03.40

जारी.....श्री सौरभ सिंह :- मैं सीमांत किसानों की बात कर रहा था, जिसके पास पंजीयन नहीं है, जिसके पास पर्ची नहीं है, वह अपना धान कहां बेचे ? वह तो गांव में छोटे व्यापारी के पास बेचता है । साल भर वह उससे कर्जा लेता है, फसल का होता है तो वह उसी व्यापारी को बेचता है, गांव में छत्तीसगढ की व्यवस्था है । उसके पास जा रहे हैं, उसको तंग कर रहे हैं, उसको भी कुछ मिल जा रहा है, उसके बाद वहां से चले जा रहे हैं, हमारे एक खाद्य विभाग के अधिकारी हैं, कुजूर । अकलतरा में वह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जगह-जगह घूम रहे हैं । छोटे व्यापारियों को तंग करने के बाद बड़े किसानों के घर पहुंच जा रहे हैं । कोठार म अतका कन धान कहां हे ? वह पर्ची दिखा रहे हैं । अतका कन मोर कोठार में धान हे करके पर्ची दिखा रहे हैं । इन परिस्थितियों से निपटने का प्रयास होना चाहिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह छत्तीसगढ़ के बाहर के प्रदेशों का धान आ रहा है । हमने पंजीयन किया हुआ है, हम पंजीकृत किसानों से धान खरीदेंगे ना ? अभी 1 लाख 20 मीट्रिक टन बता रहे थे, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या पंजीयन 1 लाख 20 हजार मीट्रिक टन का हुआ है ? जो पंजीकृत किसान है, उतना ही तो खरीदेंगे ना ? जब पंजीकृत नहीं हुआ है तो क्यों बढ़ाया जा रहा है ? यह राज्य सरकार का पैसा है, छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए पैसा है, यह उड़ीसा और मध्यप्रदेश के किसानों के लिए पैसा थोड़े ही है ? अगर चेकिंग करना है तो छोटे किसानों के घर में क्यों चेकिंग की जा रही है ? अगर चेकिंग करना है तो राईस मिलों में चेकिंग हो, जहां पर ट्रकों से धान आता है । वहां समझ आयेगा कि धान कहां से आ रहा है । छोटे व्यापारियों को तंग करने से क्या मिलेगा ? माननीय सभापति महोदय,इस बजट में बहुत सारी बातें हैं । शिक्षाकर्मियों के लिए भी कुछ बजट में किया गया है । जंगल सफारी के लिए 12 करोड़ रूपया दिया गया है । जंगल सफारी के लिए 12 करोड़ रूपया की जरूरत क्या पड़ गई ? देना था तो हाथी लोगों के लिए देना था, जो रोज घर में घुस जा रहे हैं और तोड़-फोड़ मचा रहे हैं । माननीय सभापति महोदय, मेरा यही निवेदन है कि ....।

श्री दीपक बैज :- 15 साल से हाथी भी तो आप ही पाले थे ।

श्री सौरभ सिंह :- भईया, एक बार हम इस विधान सभा में हाथी पर चढ़ कर आये थे, इस बार हाथी को पछाड़कर आये हैं । माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- माननीय श्री बृहस्पत सिंह जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 10 सेकण्ड कहा है, 10 पल । उधर बैठते ही कर्जा माफ हो गया । चांस बन गया है, उधर जाने का । चमचागिरी ठीक से करना । हल्का-फुल्का नहीं होना ।

श्री बृहस्पत सिंह (रामानुजगंज) :- सभापति महोदय, आज हम लोग छत्तीसगढ़ की इस पवित्र सदन में उस बात को लेकर अनुपूरक बजट में हम लोग चर्चा कर रहे हैं.....।

श्री अमरजीत भगत :- चन्द्राकर जी ला का होगे हे रे भई ? कुछ काटी-वाटी तो उसमें नहीं है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, इस पवित्र सदन में आज किसानों की चर्चा के लिए हम लोग खड़े हुये हैं, जो खून-पसीना बहाता है, आये दिन सदन में चर्चा होती थी कि इतने किसानों ने आत्महत्या कर ली, उस पर हम चर्चा के लिए खड़े हुये हैं । अध्यक्ष महोदय, यह अनुपूरक बजट इसलिए आया है, मैं यहां के मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं राहुल जी को धन्यवाद देता हूं कि किसानों का दर्द समझा । लगातार हम लोग इसी सदन में चिल्लाते थे, इस पवित्र सदन में इनके मंत्री जवाब देते थे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि सिर्फ इतने किसानों ने ही आत्महत्या किया है । इसी सदन में चर्चा होती थी और लगातार बहिगर्मन भी होता था । उस सारे दर्द को हमारे प्रदेश के मुखिया आदरणीय भूपेश बघेल जी ने किसान पुत्र होने के नाते, किसानों का दर्द समझा और किसानों का कर्जा माफ करने का काम किया है । सभापति महोदय, हिन्दुस्तान ही नहीं, पूरी दुनिया का पहला ऐसा राज्य है, जहां 20 रूपया किलो चावल बिकता है और 25 रूपये किलो धान बिकता है । सभापति महोदय, बाजार की बात कर रहा हूं। खुले बाजार में 20 रूपये किलो चावल बिकता है और 25 रूपये किलो चन्द्राकर साहब कांग्रेस की सरकार धान खरीद रही है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरे से बार-बार इस्तीफे की मांग हो रही है। मैं कल उसमें बोलूंगा । लेकिन अभी भाषण रोक कर मेरे साथ किसी सोसायटी में चलो, किसी का पेमेंट 25 सौ रूपये हुआ है क्या ? अभी भाषण रोक कर मेरे साथ चलिये, कौन से सोसायटी में चलोगे ? कौन से सोसायटी में चलोगे ?

श्री बृहस्पत सिंह :- चन्द्राकर साहब, आपको जनता ने मौका दिया, 15 साल में 2100 रूपये नहीं दे पाये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरी गाड़ी में बैठकर जो सोसायटी में चलना है, आज की डेट में 2500 रूपये भुगतान हो रहा है क्या ? (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- 15 साल में 2100 रूपये नहीं दिये । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके ऊपर विशेषाधिकार बनता है । मैं फिर वही बात कह रहा हूं। मेरे साथ सोसायटी चलो । व्यवधान माननीय सभापति महोदय, यह असत्य कथन है, यह सदन की अवमानना है । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- पूर्व संसदीय मंत्री को इतनी तकलीफ क्यों हो रही है ।

सभापति महोदय :- भाषण जारी रखिये ।

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\d16\.-.5

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, ये असत्य कथन है सदन की अवमानना है कि 2500 रूपये क्विंटल का भुगतान हो रहा है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, पूर्व संसदीय मंत्री चन्द्राकर जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, अभी मेरे साथ दुर्ग जिले की किसी सोसायटी में चलो, पाटन विधानसभा की किसी सोसायटी में चलो और 2500 रूपये का भुगतान बता दो। भाषण छोड़ों, चलो चलते हैं, 2500 रूपये पाटन की किसी सोसायटी में दिखा देना।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, कृषि समग्र विकास एवं किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार तथा कृषि क्षेत्र में रोजगार सुनिश्चित करने के लिए सरकार का मुख्य लक्ष्य राज्य में उपलब्ध संसाधन नरवा, गरवा, घुरूआ और बारी को महत्व देना है। आज बढ़ती आबादी, घटती जोत, रकबे के जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र को अनेक विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में अधिक उत्पादन की आवश्यकता के दबाव में रसायन व कीटनाशकों का उपयोग बढने लगा है। धरती मां की उर्वरा शक्ति क्षीण होने लगी है। उपजाऊ भूमि बंजर, ऊसर में परिवर्तन से पोषक तत्व असंतुलित हो गया है। इसके प्रभाव से कई प्रकार की बीमारियों ने अपना स्थान बना लिया है। इसी प्रकार असंतुलित प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से सूखा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं बढ़ने लगी हैं। मानव की मूल आवश्यकताओं की सहज रूप से प्राप्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का समुचित और संतुलित प्रबंधन अति आवश्यक है। खेती से अधिक उत्पाद के साथ गुणवत्तायुक्त उत्पादन महत्वपूर्ण है। कृषि आदानों की बढ़ती कीमत से खेती की लागत बढ़ती जा रही है। अत: शासन की मंशा अनुरूप मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतु परंपरागत कृषि विकास योजना अंतर्गत कृषक हितार्थ प्रमाणित जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु क्लस्टर के कार्यक्रम लिये जा रहे हैं। इसके माध्यम से गौवंश, कामधेनु से प्राप्त गोबर, गौमूत्र का उपयोग जैविक खाद के रूप में किया जायेगा। इससे भूमि की उर्वरता में वृद्धि से अधिक उत्पादन प्राप्त होगा एवं रासायनिक उर्वरकों की निर्भरता में कमी के साथ संसाधनों की संरक्षा सुरक्षित होगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- पिछले कार्यकाल तक तो मेल थी, अब ये पैसेंजर कैसे हो गई भाई? बृहस्पति जी, इतनी जल्दी परिवर्तन कि 15 दिन में गति धीमी हो गई। सरकार का असर है कि मेल, पैसेंजर में आ गई। गति बदल गई।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ के लाखों किसानों का कर्ज माफ होने से विपक्ष के साथियों के पेट में दर्द होने लगा है, क्योंकि किसानों का दर्ज इन्होंने समझा नहीं। इनको तो उद्योगपति दिखते थे, बड़े-बड़े उद्योगपतियों के होर्डिंग दिखते थे। भूपेश बघेल की सरकार क्योंकि वे किसान पुत्र हैं, उन्होंने किसानों के दर्द को समझा है, राहुल जी ने किसानों के दर्द को समझा है इसलिए यह हिन्दुस्तान का पहला राज्य है कि मुख्यमंत्री जी के शपथ ग्रहण होने के 02 घंटे के अंदर छत्तीसगढ़ के किसानों का कर्ज माफ किया गया है। आपको दर्द हो रहा है? अगर दर्द हो रहा है तो बताईये ना। छत्तीसगढ़ हिन्दुस्तान का पहला राज्य है जहां खुले बाजार में 20 रूपये किलो चावल बिकता है और छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार 25 रूपये किलो में धान खरीदती है। आपके पेट में दर्द हो रहा है क्योंकि आप कभी किसानों के दर्द के साथ रहे नहीं, इसलिए आप भाषण दे रहे हैं। आप एक लाईन में बोलिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ना कि किसानों के कर्जमाफी से आप सहमत नहीं हैं। आप 2500 रूपये क्विंटल धान खरीदी से सहमत नहीं हैं। आप खुलकर बोलिए, जनता टी.वी. चैनलों के माध्यम से देख रही है। आप लंबे -लंबे भाषण देते रहे।

श्री शिवरतन शर्मा :- किस किसान का 25 रूपये किलो में धान बिका है यह मुझे बता दो। मैं आपको चुनौती देता हूं।

श्री प्रमेश

प्रमेश\08-01-2019\d17\03.45-03.50

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, आपके जैसे मोबाईल बांटने का काम नहीं कर रहे हैं। आप कई करोड़ का मोबाईल बांटे, बात नहीं है। सभापति महोदय, 2 मिनट का समय लूंगा।

सभापति महोदय :- समय का ध्यान रखिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- पूरे छत्तीसगढ़ के किसानों का सवाल है। किसानों की धान खरीदी की बात है। किसानों की कर्जा माफ की बात है और निश्चित ही सरकारें माफ कर रही है। इसलिए इस बात का हम लोग समर्थन कर रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- आपसे प्रार्थना है कि उनको उदारता से समय दीजिए। अवसर में कार्य.........

सभापति महोदय :- समय का ध्यान रखना पड़ता है।

श्री बृहस्पत सिंह :- मुख्यमंत्री ने 10 हजार 3 सौ 95 करोड़ 58 लाख 50 हजार का बजट लाया है उसको समर्थन करते हैं और साथियों से भी इस सदन से भी निवेदन करता हूं कि इसको सर्वसम्मति से पारित किया जाए। ऐसा निवेदन करता हूं और जहां तक हमारे चंद्राकर साहब मैं तो सोचा एक का उपचुनाव होगा, आप रिजाईन दे दिये होंगे लेकिन फिर आप दिख रहे हैं इसलिए धन्यवाद। सदन में आप इस तरह से हल्ला करते रहें, हल्ला करने का जनादेश आपको मिला है। आपने बोलने को समय दिया सभापति महोदय धन्यवाद ।

माननीय देवरथ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ़ की इस विधानसभा में माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो अनुदान की मांगे रखी है। मैं उन मांगों को बहुत ही अपर्याप्त मानता हूं। इसलिए अनुदान की राशि को अपर्याप्त मानते हुए मांगों की चर्चा में उसका विरोध करता हूं। छत्तीसगढ़ के निर्माण के पश्चात दो वर्ष तक माननीय अजीत जोगी की सरकार रही। उसके बाद 15 वर्षो तक के लगातार भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही। इस चुनाव के पहले पूरे प्रदेश में लगातार किसान आत्महत्या कर रहे थे। पूरे देश का ध्यान छत्तीसगढ़ की तरफ किसान की आत्महत्याओं के लिए किया गया। तरह तरह की बातें राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ को ले के भारतीय जनता पार्टी ने भी कही, कांग्रेस

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ने भी कही लेकिन माननीय सभापति महोदय जो कर्जमाफी का निर्णय था इसके लिए सबसे पहले किसी ने जनता का ध्यान आकृष्ट किया तो जो माननीय अजीत जोगी जी को जो शपथ पत्र था, जिसे फरवरी 2018 में बिलासपुर के हाईकोर्ट में शपथ पत्र दे के, न केवल किसानों की कर्जमाफी बल्कि 2500 रूपये क्विंटल धान देने की बात हुई। ये अलग बात है कि जनता ने अपना निर्णय जनादेश एक विशाल जनादेश कांग्रेस पार्टी को दिया। शायद हम अपनी बात को समझा नहीं पाये लेकिन ये जो जनादेश आया है।

श्री मोहन मरकाम :- चांदी की भी सड़क की बात हुई थी तो इसलिए जनता ने आप पर विश्वास नहीं किया।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, इस विशाल जनादेश का तो हम लोग नतमस्तक हैं कि जनादेश आया। किसान ने बड़ा बहुमत यहां पर दिया लेकिन चाहे भारतीय जनता पार्टी की 15 साल की सरकार को हम लोगों ने देखा। योजनाएं अच्छी बनती हैं, नीतियां अच्छी बनती है लेकिन क्रियान्वयन के मामले में जो कुछ हम लोगों ने देखा उस सरकार में 4 मंत्री थे जिनकी चलती थी और बाकी 8 मंत्री शांत रहते थे और 4 अधिकारी पूरे सरकार को चलाया करते थे। माननीय मुख्यमंत्री जी अभी नहीं है, उनका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा कि बजट में अनुपूरक में आपने प्रावधान तो कर दिया है लेकिन क्रियान्वयन के स्तर पर किसकी जिम्मेदारी बनेगी ।

श्री अजय चंद्राकर :- देवरथ जी क्रियान्वयन और चलती है। ये बात करते हैं अभी सहकारिता मंत्री बैठे हैं। पूछ लीजिए किसान के घोषणा पत्र में क्या लिखा है और कितने पैसे की व्यवस्था उसको मालूम होगा तो पूछ लीजिए।

स्कूल शिक्षा मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- अभी पास तो करो उसको।

श्री अजय चंद्राकर :- बजट प्रावधान कौन कौन से एड में कितना है फिर चलने और नई चलने की बात ....।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस की जो जन घोषणा पत्र है। मैं समझता हूं कि ये जन घोषणा पत्र जो है। इसका छत्तीसगढ़ के किसान, छत्तीसगढ़ के आम आदमियों में जो प्रभाव है। इस प्रभाव के चलते एक विशाल जनादेश प्राप्त हुआ और मैं ये कहना चाहूंगा कि आज इसकी स्थिति एक धर्मग्रंथ की स्थिति में है, इसको पालन करना न केवल इस सरकार की अनिवार्यता है बल्कि एक नैतिकता है लेकिन माननीय जब हम बात कर रहे हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपने जो शपथ पत्र दिया था चांदी की सड़क बनाएंगे उससे प्रभावित नहीं हुआ क्या ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- आप हर बात पे उठोगे तो कैसे बनेगा। पूरे विधानसभा को आप व्यवधान कर रहे हो। हर बात पे आप ही उठते हो। 80 लोग तो बैठे हैं। आप ही बस उठते हो।

श्री सविता

सविता\08-01-2019\d18\03.50-03.55

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आज जो अनुपूरक की मांगे आई हैं, उसमें कहीं इस बात का प्रावधान नहीं है कि छत्तीसगढ़ का जो किसान बाड़ी की खेती करता है, जो टमाटर की खेती करता है, आपको बता दूँ कि दुर्ग जिले में, मुख्यमंत्री जी के जिले में, राजनांदगांव जिले में लगभग 40 से ऊपर किसानों ने पिछले वर्ष जो आत्महत्या की थी, उसमें 33 किसान ऐसे थे, जिनका कर्ज था जो सब्जी बाड़ी में टमाटर, शिमला मिर्च की खेती करते थे। यदि किसानों ने आत्महत्या की तो सबसे अधिक ऐसे किसान थे, जिनके ऊपर के.सी.सी. और के.जी.सी. के लोन थे और लोन की अदाएगी नहीं हुई और जब फसल खराब हुई तो उन्हें आत्महत्या करना पड़ा। चाहे राहुल गांधी कर्ज माफी का कॉन्सेप्ट लेकर आएं या नरेन्द्र मोदी लेकर आएं, उसमें किसान की आत्मा को लेकर बात है कि किसानों को सुरक्षित करने की बात है। लेकिन कहीं पर भी आपकी अनुदान मांगों में इस प्रकार का कोई प्रावधान नहीं दिख रहा है। धान, गेहूँ और चना के अलावा किसी भी खेती पर किसी प्रकार की न तो कर्ज माफी कर रहे हैं और न ही उसको कोई प्रोत्साहन की बात हो रही है।

माननीय सभापति महोदय, मैं यहां पर एक बात में ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा कि 6 हजार करोड़ रूपये के कर्ज माफी की बात आ रही है जितने किसान जिनकी जिला सहकारी बैंक और जिनके सोसायटिज में कर्ज थे, वह आपने माफ करने की बात की, उसके लिए आपने अनुदान राशि मांगी है आज विधान सभा से वह आपको प्राप्त हो जाएगा। लेकिन केवल 6 हजार करोड़ की बात है और केवल अगर आप 6 हजार करोड़ माफ करेंगे तो छत्तीसगढ़ के जो बहुसंख्यक किसान हैं, जो सब्जी की खेती करते हैं, जो दलहन की खेती करते हैं, जो पपीते, केले की खेती करते हैं उनको भी एक बड़ी राहत मिलेगी और छत्तीसगढ़ में यही वह वर्ग है, जिसने 10 वर्ष के अंदर में, माननीय ताम्रध्वज साहू जी इस बात में सहमत होंगे कि ये वे किसान हैं जिन लोगों ने छत्तीसगढ़ की कृषि को बहुत आगे बढ़ाया है। मैं यहां कहना चाहूंगा कि हमारे बीच में दलेश्वर साहू जी बैठे हैं। मैं मानता हूँ कि छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े प्रगतिशील किसानों में उनकी चर्चा होती है, लेकिन आज आप उनसे दर्द पूछिएगा कि जिन लोगों ने 2-3 सालों में टमाटर की खेती की, जिन्होंने सब्जी की खेती की। आज वे कर्ज से लद गये हैं जमीनें बिक रही हैं लेकिन आपकी अनुदान की मांगों में उस वर्ग के लिए कहीं कोई चर्चा नहीं है।

माननीय सभापति महोदय, जो के.सी.सी. की बात आती है, एक किसान को कितना ऋण मिल जाता है ? के.सी.सी. में 50 हजार प्रति एकड़ तक के ऋण मिलता है, सहकारी समितियों में तो कर्ज है

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

ही नहीं। यदि आपमें इतनी बडी सहृदयता है तो मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि आपने अनुपूरक अनुमान में इसका प्रावधान नहीं किया। आप मुख्य बजट में प्रावधान करके, 6 हजार करोड़ जो अन्य किसानों के के.सी.सी. और अन्य है, उसको प्रावधान करके राशि को दें।

मानवीय सभापति महोदय, मैं अपने उद्‌बोधन को कृषि तक के ज्यादा सीमित करना चाहूंगा। हम किसान की बात कर रहे हैं धान के रेट की बात कर रहे हैं, पर क्या हो रहा है ? अजय चन्द्राकर जी, जिस बात को कह रहे थे, सौरभ सिंह जी ने उस बात को कहा। मैं आपको प्रमाण सहित ये बताना चाहूंगा कि हमारे राजनांदगांव जिले में दो राज्य के बॉर्डर लगते हैं। आज ये स्थिति हो गई है कि छुरिया, बागनदी, बोरतलाव और आगे सालेवारा वहां की धान खरीदी केन्द्रों में जो 1 जनवरी को आवक थी, वह पिछले समय से लगभग डेढ़ गुना अधिक आवक हो चुकी है और मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के जो बिचौलिए थे वहां पर आकर किसानों के पर्चे पर धान खरीदी करवाना चालू कर दिए हैं। यह पहले भी होता था और जो पहले होता था तो 1200-1300 रूपये क्विंटल या 1100 रूपये क्विंटल में धान आता था, आज वह रेट 1500-1600 रूपये हो गए, क्योंकि 2500 रूपये मिलने वाला है। इसको रोकने के लिए सरकार क्या करेगी ? क्या किसानों को लाभ मिलेगा ? निश्चित रूप से यदि आप 2500 रूपये दे रहे हैं तो लाभ मिलेगा। आपने अनुदान में कहा है कि आप देंगे, लेकिन इस चीज को रोकने के लिए क्या प्रयास हो रहा है ?

माननीय सभापति महोदय, अभी छत्तीसगढ़ में कृषि की बात हो रही है। आपके जन घोषणा पत्र में आपने कहा है कि आपने जो रेट निर्धारित किये हैं इसमें आपने मक्के का रेट, चने का रेट, चने का रेट 4700 रूपया प्रति क्विंटल का रेट कहा गया है। आप सोयाबीन का रेट 3500 रूपया क्विंटल कह रहे हैं। मैं सदस्यों ने निवेदन करना चाहूंगा कि आप पता करके देख लीजिए कि सोयाबीन उत्पादन करने वाले किसानों की स्थिति क्या है? इस बार नवंबर, दिसंबर, जनवरी में 2600 रूपये क्विंटल में सोयाबीन बिका है, लेकिन आप 3500 रूपये क्विंटल का रेट दें, इसके भावांतर की क्या योजना है ? जो अंतर आएगा उसको कौन देगा? सरकार ने अनुपूरक अनुदान में तो ये मांग रखी नहीं है और आदिवासी क्षेत्रों में मक्के का रेट 1700 रूपये क्विंटल खरीदी की, आप बात कर रहे हैं। यदि 1100-1200 रूपये मक्के का रेट मिल गया तो बहुत मिल गया ?

माननीय सभापति महोदय, एक विषय की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा......

जारी श्री चौधरी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चौधरी\08-01-2019\d19\03.55-03.60

पूर्व जारी.. श्री देवव्रत सिंह :- एक विषय की तरफ सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा, छत्तीसगढ़ में कृषि नीति कौन बना रहा है? हम लोगों ने यह देखा है कि पिछले 10 वर्षों में छत्तीसगढ़ में कौन सा किसान क्या खेती करेगा, क्या फसल बोयेगा, उसे एक उद्योगपति तय करता था। राजनांदगांव में एक उद्योगपति है वह यह तय करते थे कि यदि किसान सोयाबीन की फसल लगायेगा तो कौन सा बीज लगेगा। रविन्द्र चौबे जी सोयाबीन की खेती करते हैं, वह अभी नहीं हैं। जे.एस.- 335 सोयाबीन का दाना लगभग बाहर हो गया है, क्यों? क्योंकि उसमें से तेल ज्यादा नहीं निकलता था, वजन रहता था। छत्तीसगढ़ का सोयाबीन राजनांदगांव से बाहर नहीं जा सकता था, इसलिए कभी उसका रेट नहीं मिला। आप इन्दौर का रेट पता करिये, एक उद्योगपति तय करता था कि सोयाबीन कितने में बिकेगा। मक्के का रेट, हम 1700 रुपये की बात कर रहे हैं, जन घोषणा पत्र में दिया हुआ है, मक्के का रेट 1100, 1200 रुपये से ज्यादा बढ़ता नहीं था।

श्री अजय चन्द्राकर :- उस उद्योगपति का कांग्रेस सरकार के पक्ष में पूरे पेपर में बड़े-बड़े विज्ञापन हैं।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय सभापति जी, मैं यही कहना चाहूंगा कि किसान क्या फसल लगायेगा, कौन सा दाना, बीज लगायेगा, अगर यह भी निर्धारण उद्योगपति करेगा तो कैसे होगा? अभी यह स्थिति है कि किसान सोयाबीन का जो जे.एस.-335 बीज राजनांदगांव, कवर्धा, दुर्ग, बेमेतरा, बालोद में लगाता था, वह बीज गायब हो गया और दूसरी वेरायटी का बीज आया। वह जो बीज आया, वह बीज केवल केटलफीड बनाने के काम आता है। सभापति महोदय, मेरा यह निवेदन है कि पिछला जो कुछ हुआ, क्या आगे भी वैसे ही चलेगा? माननीय अजय चन्द्राकर जी ने कहा कि उद्योगपति का विज्ञापन आ रहा है, ठीक है उद्योगपति तो जिसकी सरकार होती है, उसके होते हैं। लेकिन यह हमको तय करना पड़ेगा, मुझे भरोसा है रविन्द्र चौबे जी सारी स्थितियों को जानते हैं, उन्होंने 15 वर्षों से देखा है। यदि इस विधानसभा से हम अनुदान की मांगो में कृषि विभाग को राशि दी जा रही है तो उस राशि का संरक्षण करने का अधिकार सरकार का है। जब-जब ये नहीं होगा तो किसान की लड़ाई तो हम लड़ेंगे। माननीय सभापति महोदय, मैं अपनी बात समाप्त करने के पहले एक और विषय आपके ध्यान में लाना चाहता हूं। अभी माननीय मुख्यमंत्री जी यहां पर नहीं हैं।

सभापति महोदय :- देवव्रत जी, समाप्त करिये। आपके नेता को भी बोलना है।

श्री देवव्रत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, एक महत्वपूर्ण विषय है। पूर्व मुख्यमंत्री जी ने एक बात कही कि एक रेलवे लाईन चल रही है, पब्लिक प्राइवेट सेक्टर के तहत में रेलवे लाईन का निर्माण कार्य प्रारंभ होना है, जो बिलासपुर के पास से मुंगेली, कवर्धा, खैरागढ़ होते हुए जायेगी। उस

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ज्वाईन्ट बेन्चर के अंदर में छत्तीसगढ़ सरकार ने कितना पैसा लगाया, रेलवे का कितना पैसा लगा है, किसी को जानकारी नहीं है। रेलवे की समाचार पत्रों में एक पेपर कटिंग है जिसमें कि भूमि अधिग्रहण के खसरे नंबर दिये हुए हैं। रेल कंपनी के ठेकेदार लोग रोज जाकर चूना मारते हैं, लाईन मारते हैं। न कहीं पैसे का प्रावधान है, न कोई ठिकाना है। न एस.डी.एम. और न कलेक्टर कुछ बता सकता है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि अगर वह ज्वाईन्ट बेन्चर के अंदर कोई प्राइवेट पार्टनरशिप में रेलवे लाईन बना रहे हैं तो उसमें अधिग्रहण के पैसे का क्या प्रावधान है? वहां पर इस बार किसानों को फसल नहीं लगाने दी गई। पुलिस से लेकर अधिकारी, कर्मचारी तक कोई यह बताने की स्थिति में नहीं है कि अगर जमीन का अधिग्रहण हो रहा है तो किस मद में पैसा मिलेगा। मेरा निवेदन है कि अनुदान मांगों में तो उसका कहीं प्रावधान नहीं है, क्या सरकार ने इस योजना को ड्राप कर दिया है? क्या वह जे.बी. एग्रीमेन्ट खत्म हो गया है? किसानों को कम से कम बता दें। सभापति महोदय, अनुदान की मांगों को हम लोग अपर्याप्त मानते हैं। के.सी.सी. के लोन से लेकर, धान खरीदी का जो रेट है, वह मिलना चाहिए। तभी जा करके यह छत्तीसगढ़ का जन घोषणा पत्र का जो प्रावधान है, सफल हो पायेगा। आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री दीपक बैज (चित्रकोट) :- माननीय सभापति महोदय, वर्ष 2018-2019 के तृतीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा हो रही है, दस हजार तीन सौ पन्चाबने करोड़, अन्ठावन लाख, पच्चीस हजार, चार सौ रुपये की अनुपूरक राशि की मांग की गई है। माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ प्रदेश में ऐतिहासिक फैसला हुआ है वह फैसला कांग्रेस की सरकार के माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया है। कांग्रेस ने कर्ज माफी की घोषणा की थी, 16 लाख 65 हजार किसानों को कर्ज माफी का लाभ मिलने जा रहा है।

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\e10\04.00-04.5

श्री अजय चंद्राकर :- यह मिलने जा रहा है कि मिल गया है ?

श्री दीपक बैज :- मिल गया है, 12 सौ 48 करोड़ मिल गया है । 12 सौ 48 करोड़ कर्जा माफी का पैसा मिल गया है बाकी मिलना अभी बाकी है, मिल रहा है ।

श्री अजय चंद्राकर :- वे सब ऋणमुक्त हो गये हैं ?

श्री दीपक बैज :- आप चिंता मत करिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, तो क्या वे सब ऋणमुक्त हो गये हैं ?

श्री दीपक बैज :- आज के बाद मुक्त हो जायेंगे ।

सभापति महोदय :- श्री चंद्राकर जी बैठिए । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- आप इस्तीफा कब दे रहे हैं वह बताईए ? (व्यवधान) आप घोषणा करके मुकर जाते हैं । पहले आप अपने इस्तीफा के बारे में बताईये ।

श्री दीपक बैज :- आप तो 15 साल के बाद मुक्त हो गये हो । आज के बाद किसान भी मुक्त हो रहे हैं, आप चिंता मत करिये ।

माननीय सभापति महोदय, 16 लाख 65 हजार किसान 6100 करोड़ कर्जा माफी और आज के बजट में 4223 करोड़ 47 लाख रूपये का प्रावधान है । माननीय सभापति महोदय, मैंने इस सरकार को 15 सालों से देखा कि यही किसान तरशते थे धान के बोनस के लिये, यही किसान तरशते थे 2100 रूपये समर्थन मूल्य के लिये लेकिन भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने इन किसानों की कभी चिंता नहीं की । उसी का नतीजा है कि यह सरकार आज 49 से 15 सीट में आकर सिमट गयी है और आज ये किसान की बात करते हैं । आज आप इनकी छटपटाहट देखिये बार-बार उठ रहे हैं, ऐसा लग रहा है कि उनकी सीट पर खूंटी लगी हुई है । छटपटा लीजिये कुछ नहीं होने वाला है, अब आपके हाथ में कुछ नहीं है, सब निकल गया है । पूरे 15-20 साल बाद आप सोचिएगा और तो और 10 दिन में 1248 करोड़ रूपये 3 लाख 57 हजार किसानों के खाते में जमा हुए हैं और तो और किसानों को प्रोत्साहन राशि समर्थन मूल्य का 3 हजार 84 करोड़ रूपये का प्रावधान है । मुझे अच्छे से याद है कि जब पिछले चुनाव की बारी आयी थी तो यही भारतीय जनता पार्टी के लोग, उस समय उत्तरप्रदेश के चुनाव हो रहे थे । इनके प्रधानमंत्री जी जाकर भाषण देते हैं वहां पर कि हमारी सरकार आयेगी तो हम किसानों का कर्जा माफ करेंगे वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार आयी तो क्या हुआ, कितने किसानों का इन्होंने कर्जा माफ किया । किसानों का केवल 100 रूपये कर्जा माफ हुआ है, छत्तीसगढ़ की कांग्रेस की सरकार ने, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने अनलिमिटेड जितना भी अगर किसानों का कर्जा माफ होगा, कोई 100 रूपये, कोई 2 लाख, कोई 5 लाख रूपये सभी किसानों का कर्जा माफ हुआ है । यह मजबूत सरकार का निर्णय है और तो और आप उसका उल्टा देखिये कि पंजाब में कांग्रेस की सरकार ने वायदा किया था, कर्नाटक में वायदा किया था कि किसानों का कर्जा माफ करेंगे तो पंजाब में कर्जा माफ हुआ है । कर्नाटक में कर्जा माफ हुआ है, छत्तीसगढ़ में भी कर्जा माफ हुआ है इससे बड़ा उदाहरण आपको और क्या मिलेगा, आप ही बताईये । आज 2500 रूपये समर्थन मूल्य देने वाला छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है । इसका सीधा-सीधा श्रेय कांग्रेस की सरकार और मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल को जाता है । यह ऐतिहासिक फैसला है । मैंने देखा है जब कांग्रेस की सरकार बन रही थी, मुख्यमंत्री जी शपथ ग्रहण कर रहे थे, शपथ ग्रहण के 3 घंटे के अंदर, आज तक देश के इतिहास में मुझे नहीं लगता कि छत्तीसगढ़ के इतिहास में 3 घंटे के अंदर वह भी आपके जैसे कैबिनेट के पूरे 13 मंत्री नहीं, 3 कैबिनेट मंत्रियों ने फैसला लिया कि किसानों का कर्जा माफ करेंगे और 2500 रूपये समर्थन मूल्य देंगे । (मेजों की थपथपाहट) यह एक ऐतिहासिक फैसला है । छत्तीसगढ़ के किसानों ने 15 सालों तक देख लिया, लाठियां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खाई, गोलियां खाई, तरशते थे आपसे कि बोनस दे दो, समर्थन मूल्य दे दो लेकिन आपने क्या दिया बोनस के नाते अरे चुनाव आने दो फिर बोनस दे देंगे, 4 साल निकल गये, 5 साल निकल गये, एक साल भी आपने बोनस दिया ? एक साल निकल गया तो आपने समर्थन मूल्य बढ़ा दिया । आपने 3 बार धोखा दिया, छत्तीसगढ के किसान और जनता ने ठान लिया था कि चौथी बार धोखा नहीं खायेंगे । अभी लोकसभा में जाईये, यह 11 है न, इन 11 में आप एक भी नहीं बचा पायेंगे । यह है किसान की सरकार । आत्महत्या, इन 5 सालों में लगभग 1300 किसानों ने आत्महत्या की । हम विपक्ष में उधर बैठकर पूछते थे कि हमारे किसान आत्महत्या कर रहे हैं, बोनस दे दीजिये, 2100 रूपये समर्थन मूल्य दे दीजिये, यही सरकार के लोग इधर बैठकर बोलते थे अरे किसान तो दारू पीकर मर गया । किसान तो पारिवारिक झगड़े से मर गया, आज जाकर किसान को पूछिए । अभी इस सरकार को बने हुए एक महीना भी नहीं हुआ है और हमने इतना बड़ा फैसला किया । ....जारी

श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\e11\04.05-04.10

जारी.........श्री दीपक बैज :- आज किसानों से जाकर पूछिये । अभी इस सरकार को बने हुए एक महीना भी नहीं हुआ है और हमने इतना बड़ा फैसला किया । सभापति महोदय, किसान गद्‌गद हैं । वे कांग्रेस की सरकार को धन्यवाद दे रहे हैं । मैंने पिछले पांच साल विपक्ष में बैठकर देखा । बहुत सारी चुनौती देते थे, मुख्यमंत्री को चुनौती देते थे, बहुत सारे मंत्री आते थे । आप यह करके दिखाइए, आपकी सारी चुनौतियां धराशाई हुई । एक चुनौती माननीय चन्द्राकर जी ने भी दी थी । 1248 करोड़ किसानों के खाते में जा चुका है। चन्द्राकर जी, बता दीजिए कब तक देंगे ? आपके क्षेत्र के लोग आपके इस्तीफे के लिए तख्ती लेकर आते हैं । आपको तकलीफ होती है । वायदा निभाइए, वायदा । कांग्रेस ने तो 1248 करोड़ देकर वायदा निभाया, अब आप भी अपना वायदा निभाइए।

सभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूं ये पैराशूट वाले नेता । 15 सालों तक यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार किसानों की सरकार नहीं थी, पैराशूट की सरकार थी । आज किसान के बेटे की सरकार है ।

सभापति महोदय :- अब समाप्त कीजिए ।

श्री दीपक बैज :- भरी बरसात में उनके घर को और उनके खेत को नपवा दिया गया । आज उसी किसान का बेटा मुख्यमंत्री बना हुआ है । उस किसान के बेटे से पूछिये, वे बाड़ी में, खेतों में जाकर देखते हैं कि फसल हुई है या नहीं ? अरे, जिनकी बाड़ी नहीं है, जिनके खेत नहीं हैं, जिनके बैल नहीं हैं, जिनके पास हल नहीं हैं वे क्या सरकार चलाएंगे ? यह किसान के बेटे की सरकार है, यह छत्तीसगढ़ की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सरकार है । हम जब किसानों के पास जाते थे तो वे हमसे पूछते थे कि हम धान बेचें या रखें ? जब सरकार नहीं बनी थी वे प्रदेश अध्यक्ष थे तो उसी समय उन्होंने कह दिया था कि हमारी सरकार पूर्ण बहुमत के साथ आ रही है, आप धान बेचिए । हम आपको 2500 रूपए भी देंगे और कर्जा माफी भी करेंगे ।

सभापति महोदय, मेरे क्षेत्र में टाटा की जमीन वापसी के लिए 10 गांव के लोग आंदोलन कर रहे थे । मैं पांच साल तक इनके सामने गिड़गिड़ता रहा कि किसानों की जमीनें वापस करो । सरकार बनने के 6 दिन के अंदर किसानों की जमीनें वापस हुई । ये किसानों की सरकार है, ये गरीबों की सरकार है, ये कांग्रेस की सरकार है । इसीलिए मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने 2500 रूपए धान का और कर्जा माफी का वायदा किया है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी और उनके पूरे मंत्रिमंडल को धन्यवाद देता हूं और आज माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो बजट लाया है उसे सर्वसम्मति से पारित करें । आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिए धन्यवाद।

श्री भीमा मंडावी (दंतेवाड़ा) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो 10395.78 करोड़ का अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया है । सभापति जी, मीडिया के माध्यम से जो बातें फैली हैं उससे पूरे देश के किसान हताश हैं, निराश हैं। आप चुनाव से पहले जनता के लिए बहुत बड़ी बड़ी बातें कर रहे थे ।

श्री दीपक बैज :- आप उन 10 गांव के टाटा वाले किसानों से तो पूछ लो । मैं आपके साथ चलूंगा, आप पूछ लेना ।

श्री भीमा मंडावी :- जिस दिन माननीय मुख्यमंत्री जी दंतेवाड़ा प्रवास पर थे, उस दिन वहां के किसानों के चेहरे पर बहुत खुशी थी । 3 बजे जब किसानों का नाम ले लेकर चर्चा शुरू हुई तो अधिकारी कहने लगे कि आपका नाम नहीं है, आपका नाम नहीं है । यह सुनकर वहां के किसान जितने दुखी हैं, उससे मुझे लगता है कि हिंदुस्तान में यह पहली धोखा देने वाली सरकार है, यह मैं मानता हूं । हमें भी बहुत खुशी थी । मैं भी किसान हूं, आप भी किसान है, हम सब खुश थे कि इस बार बोर करवाएंगे, तार फेंसिंग करवाएंगे, हम सब ऐसा सोचते थे । लेकिन आज जब बजट आया तो प्रदेश के किसान खुश नहीं है, बल्कि दुखी हैं । जबकि आपने इस प्रदेश में किसानों के हित के लिए यदि वास्तव में दिल से बजट बनाते तो 1 लाख, 06 हजार करोड़ लगता । सौरभ जी भी बोल रहे थे कि आपने किन-किन किसानों का कर्जा माफ किया, किनका कर्ज माफ करने वाले हैं, कितना कर्ज माफ करने वाले हैं । कितने साल पहले लिए हुए कर्ज को माफ करने वाले हैं, इसमें स्पष्ट तो बोल दीजिएगा ।

श्री दीपक बैज :- आपके जैसे, चुनाव से एक साल पहले माफ नहीं करने वाले हैं, उससे पहले ही माफ करने वाले हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भीमा मंडावी :- दीपक भइया, जमीनें वापस करवाकर बहुत अच्छा काम किये । मैं इधर बैठकर भी आपको धन्यवाद देता हूं । इधर बैठकर आपको जो ताकत मिली थी उससे आप बच गए, उधर बैठकर आप नहीं बचने वाले ।

श्री दीपक बैज :- मंडावी जी, आप तो बाल-बाल बचे हो । 12 में से 1 ही बचे हो, आपकी किस्मत अच्छी है ।

श्री भीमा मंडावी:- आपकी भी मदद मिली है, यह क्यों भूलते हो आप । मिली या नहीं मिली ? मरकाम जी किधर गए ? बता दीजिए ना । इन लोगों की काफी मदद मिली है भाई साहब । मैं धन्यवाद देता हूं इन लोगों को । ऐसे ही मिलकर रहेंगे, अगली बार, है ना ।

श्री मोहन मरकाम :- मतलब हमको इधर ही बैठना है और आपको उधर बैठना है ।

---श्री ठाकुर-

ठाकुर\08-01-2019\e12\04.10-04.15

जारी................श्री भीमा मंडावी :- वो समय बताएगा न। तो ये प्रदेश के किसानों का हाल है। मुझे मालूम है कि सरकार में आप हैं, हम लोग इसको किसानों के पक्ष में ही बात करेंगे। किसानों के हितैषी के बारे में या सदन में बात रखेंगे और दूसरा मैं पूरे प्रदेश के अलावा दंतेवाड़ा जिला बस्तर जो संभाग है वहां पर जैविक खेती का क्या उल्लेख है, कुक्कुट पालन का क्या उल्लेख है, मैंने देखा नहीं है जरा इसको आप ध्यान दीजिएगा। क्योंकि जैविक खेती के नाम से जो दंतेवाड़ा के किसान और बस्तर संभाग के जो किसान हैं, बहुत आगे देश और मुझे लगता है कि देश में अपना एक स्थान बना चुके थे जैविक खेती के नाम से, कड़कनाथ के नाम से। उसमें भी उन किसानों का इस बजट में उल्लेख नहीं है। कृपया करके आप उल्लेख करिएगा और उन किसानों को भी आप जो आपने घोषणा किया है, उसका लाभ दिलाइएगा। माननीय सभापति महोदय, मुझे तो ऐसा लगता है कि ये जो बजट देखकर के मैं प्रदेश की बात नहीं करता। विशेषकर जो डी.एम.एफ. मद हुआ करता था। वो जो मद से जितना निर्माण कार्य पंचायतों में स्वीकृति हुआ था, तत्काल सरकार आने के बाद उन कार्यों को निरस्त किया गया है और जो कार्य हुआ है, उसका भुगतान भी नहीं किया गया है। वहां के जनप्रतिनिधि मार खाने की स्थिति में हैं। मजदूर क्या करेगा। सरपंच कहां से भुगतान देगा जब आप पैसा नहीं दे रहे हैं तो। मेरा आपसे आग्रह है माननीय सभापति महोदय, जो-जो काम हुआ है, अधूरा जो काम हुआ है, उनको चालू करवाइएगा। जो पूरा हुआ है, उनको भुगतान करवाइएगा। तो इस स्थिति में तो पूरे प्रदेश में जो पलायन का, पलायन से पूरा प्रदेश खाली हो जाएगा। भाई अमरजीत अच्छी तरह समझ रहे हैं इस बात को क्योंकि आप और हम दोनों एक ही हैं। आदिवासी क्षेत्र के हैं। जरा आप भी बोल दीजिएगा, मदद करइएगा। तो ये ऐसी स्थिति

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

में पूरे प्रदेश में पलायन का ये तो बहुत बड़ा संकट आ सकता है। मैं आपसे यह आग्रह करता हूं कि पंचायतों में जो, क्षेत्रों में जो काम चल रहा था उसको चलवाइएगा। जो भुगतान नहीं हुआ है, उसको तत्काल भुगतान करवाइएगा। ये मेरा आपसे आग्रह है। एक मिनट सभापति महोदय। बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

सभापति महोदय:- एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर दें।

भीमा मंडावी:- मुझे लगता है कि हर जिले में लाइवलीहुड कॉलेज है। उन लाइवलीहुड कॉलेजों में हमारे जो बच्चे हैं, बेरोजगार हैं। कुछ अपनी क्षमता के हिसाब से कोई वेल्डिंग में, कोई टाइपिंग में कोई फर्नीचर में ऐसा कुछ काम सीख रहे थे, वो भी बंद होने के कगार पर है। उनको भुगतान नहीं मिल रहा है। आपने पेपर में, आया होगा दंतेवाड़ा के संबंध में, तो उसको भी चेक करवा के इस बजट में डलवाइएगा। मैं आपका विरोध नहीं कर रहा हूं। आपको यदि दीपक जी, भाई मोहन जी आगे बैठना हो नहीं तो फिर बस्तर में दिक्कत होगा भैय्या। आप इसको करवाइएगा तो मैं आज के जो इस अनुपूरक बजट को अपूर्ण मानता हूं, इसको पूरा करवाइएगा। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद सभापति महोदय।

सभापति महोदय:- माननीय श्री मोहन मरकाम जी।

श्री दीपक बैज:- मंडावी जी आप सुनना इधर।

श्री मोहन मरकाम:- माननीय सभापति महोदय, तृतीय अनुपूरक बजट 31 मार्च 2019 को समाप्त होने वाले प्रतिवर्ष के अनुदान विभिन्न अनुदान मांग दस हजार तीन सौ पंचानवे करोड़ अंठावन लाख पच्चीस हजार चार सौ रूपए अनुपूरक राशि की मांग इस सदन से की गई है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री, माननीय वित्तमंत्री के रूप में माननीय सभापति जी मैं इसका समर्थन करते हुए मैं आपनी बात करना चाहता हूं। माननीय सभापति जी छत्तीसगढ़ महतारी के दुलवरा बेटा हमारे किसान पुत्र छत्तीसगढ़ के संवेदनशील माननीय मुख्यमंत्री, माननीय भूपेश बघेल जी ने जैसे शपथ ग्रहण किया माननीय सभापति जी सबसे पहला निर्णय किसानों के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिया। आज पूरे छत्तीसगढ़ में किसानों में हर्ष की दौड़ गयी है। माननीय सभापति जी आज हर किसान जो छत्तीसगढ़ के किसान हैं, आज माननीय भूपेश बघेल जी को मिलकर फोन के माध्यम से हर माध्यम से उनको धन्यवाद और बधाई दे रहे हैं माननीय सभापति महोदय।

.........जारी श्री अरविंद

अरविंद\08-01-2019\e13\04.15-04.20

......जारी श्री मोहन मरकाम आज माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को मिलकर फोन के माध्यम से हर माध्यम से उनको धन्यवाद और बधाई दे रहे हैं। अगर ऐसा कोई ऐतिहासिक निर्णय कर सकता है तो

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किसान का बेटा आदरणीय भूपेश बघेल जी ही कर सकते हैं। उनमें जो इच्छाशक्ति थी, उन्होंने एक घंटे के अंदर करके दिखाया, जो ऐतिहासिक फैसला है।

माननीय सभापति जी, हमारे विपक्ष के साथी जो 12 वर्षों तक वित्त मंत्री रहे थे, वे सबसे ज्यादा चिंता जाहिर कर रहे थे कि छत्तीसगढ़ दिवालिया घोषित हो जायेगा। छत्तीसगढ़ ये हो जायेगा, वह हो जायेगा। मैंने पिछली बार देखा, जो सी0ए0जी0 की रिपोर्ट आई है, सरकार लगभग 20 हजार करोड़ रूपया पिछले बजट का खर्च ही नहीं कर पाई है। आज हमारे पास खजाने में पैसा है। माननीय सभापति जी, सन् 2003 तक हमारी सरकार थी, कांग्रेस की सरकार थी, 2003 में जब हमारी सरकार चली गई तो उस समय लगभग 400 करोड़ रूपया सरकारी खजाने में थे। सन् 2018 तक माननीय डॉ0 रमन सिंह की सरकार थी। लगभग 45 हजार करोड़ रूपया छत्तीसगढ़ के ऊपर कर्ज का बोझ है। आज छत्तीसगढ़ में कोई बच्चा जन्म लेता है तो उसके ऊपर 18 हजार रूपया कर्ज चढ़ जाता है।

श्री अमरजीत भगत :- आ गए हैं (डॉ0 रमन सिंह,सदस्य सदन में उपस्थित हुए।) जरा थोड़ा देखकर बात करना। (हंसी)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारे पूर्व वित्त मंत्री, मुख्यमंत्री डॉ0 रमन सिंह जी वित्तीय प्रबंधन की बड़ी-बड़ी बात करते थे। आज छत्तीसगढ़ पर 45 हजार करोड़ रूपये का कर्ज है। यह आपका कैसा वित्तीय प्रबंधन था? पूर्व माननीय मुख्यमंत्री जी पिछले 15 साल तक ऐसी योजनाएं बनाते थे, जहां सिर्फ और सिर्फ कमीशन मिलता था। 1500 रूपये का मोबाइल पांच हजार-छः हजार रूपये में, माननीय सभापति जी, लाखों लोगों को मोबाइल का झुनझुना पकड़ाये हैं। डॉ0 रमन सिंह की सरकार पर लोगों का विशवास नहीं रहा। आज हम देखते हैं कि चाहे मोबाइल वितरण योजना हो, जूता-चप्पल वितरण योजना हो, सरस्वती सायकल योजना हो, जिसमें ज्यादा कमीशन मिलता था, ये सरकार वैसे ही योजना बनाती थी। मगर हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने संवेदनशीलता दिखाई। आदरणीय दीपक बैज जी ने जो बातें कही, लगभग 1280 किसानों ने आत्महत्या की। इस छत्तीसगढ़ के किसानों का हमदर्द बनकर सबसे पहला निर्णय लिया। आज उसी का परिणाम है कि आज छत्तीसगढ़ के किसान हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देते हैं।

माननीय सभापति महोदय, प्रधान महालेखाकार, वर्ष 2016-17 की जो सी0ए0जी0 की रिपोर्ट आई है, बजट का 20 प्रतिशत, लगभग 20 हजार करोड़ रूपये से अधिक खर्च नहीं कर पाई। माननीय सभापति जी, पिछली सरकार ने बार-बार अनुपूरक बजट पेश कर सरकार के कमजोर वित्तीय प्रबंधन का परिचय दिया। हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी बेहतर वित्तीय प्रबंधन की बात करते थे। मैं भी बैकिंग सेक्टर, इंश्यारेंस सेक्टर से आया हूँ। मुझे लगता कि हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी का वित्तीय मामलें में वित्तीय प्रबंधन बहुत ज्यादा कमजोर था। लगातार बार-बार अनुपूरक बजट लाते थे। मतलब उनके पास कोई लेखा-जोखा नहीं था।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय सभापति जी, तीसरी बात, सरकार ने कर्ज चुकाने के लिए कर्ज लिया। पब्लिक सेक्टर की यूनिट को फण्ड दिया। लेकिन उससे लाभ का हिस्सेदारी लेने में नाकाम रहे। इन्होंने जितने भी निगम और मण्डल बनाये थे, लोगों को उपकृत करने के लिए लोन ले-लेकर के कर्ज का बोझ इस छत्तीसगढ़ की जनता पर पड़ा है। माननीय सभापति जी, आज हम देखते थे कि जेण्डर बजट में भारतीय जनता पार्टी की सरकार महिलाओं के लिए कहती थी कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। मगर आप देखिये कि 25 योजनाओं में 40 प्रतिशत राशि ही खर्च कर पाई है। आप देखिये कि उनके कथनी और करनी में कितना अंतर है।

समय :
4.19 बजे **(सभापति महोदय (श्री अमरजीत भगत) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति जी, जब हमारी सरकार थी तो एक ही बिजली कम्पनी थी। लेकिन जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई तो 3-3, 4-4 कम्पनी बना गई। बिजली कम्पनी में कृषि जीवन ज्योति योजना के लिए लोन लिया, लेकिन इस लोन के बारे में इस सरकार ने खाते में कोई जानकारी नहीं दी। यह मेरी रिपोर्ट नहीं है, सी0ए0जी0 की रिपोर्ट है।

........जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\e14\4.20-25

जारी...श्री मोहन मरकाम :- ये सी.ए.जी. की रिपोर्ट है, मेरी रिपोर्ट नहीं है । जो बजट था, उसमें 48 हजार करोड़ पर 9427 करोड़ ही खर्च कर पायी, जो जीडीपी का 3.5 प्रतिशत था, ये चौकाने वाले तथ्य आये हैं । सरकार ने आपदा प्रबंधन के फंड का न तो इस्तेमाल किया, न उसे बैंक में जमा किया, इस कारण सरकार को 225 करोड़ रूपये का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा । ये है हमारे पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व वित्तमंत्री के वित्तीय प्रबंधन, जो लगातार सरकार के ऊपर अतिरिक्त बोझ बढ़ता गया । आज हम देखते हैं कि सरकार के ऊपर अगर 45 हजार करोड़ का कर्ज है तो कहीं न कहीं पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व वित्तमंत्री जी के वित्तीय कुप्रबंधन के कारण है । हमारे पूर्व मुख्यमंत्री डा. साहब 15 साल राज किये । वे एक डाक्टर हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ की जनता का नब्ज नहीं पकड़ पाए, जो चौथी बार राज करने का सपना देख रहे थे, जो दावे करते थे, जो दंभ भरते थे, वे आज 15 सीटों में आकर सिमट गए। वे जनता की बात नहीं सुने, उद्योगपतियों की बात वे करते थे, उद्योगपतियों के लिए काम किया, उनको जनता की आह लग गई । इसलिए 15 साल राज करने के बाद भी विपक्ष में हैं । जनता की आह लगती है तो अच्छे-अच्छे लोगों की लूटिया डूब जाती है । माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी, हमारी सरकार को मात्र 15 दिन ही हुए हैं, 15 दिन में ही हम लोगों की घोषणाएं याद दिला रहे हैं । आपने तो 2003 में कहा था कि

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रत्येक आदिवासी परिवार में से एक को नौकरी देंगे, 12वीं पास पढ़े-लिखे लोगों को बेरोजगारी भत्ता देंगे, सिरहा, गुनिया, गांयता, माटीपुजारी को 500 रूपए मानदेय देंगे । हमारे आदिवासी भाइयों को आपने ठगा । आप कहते थे कि आप लोग मड़िया पेज पीना छोड़ दो, आप लोगों को 15 लीटर दूध देने वाली जर्सी गाय दे रहा हूं । हम भी खुश होकर विश्वास किया और बस्तर से लेकर सरगुजा तक एक तरफा वोट दिया चाहे वह 2003 हो या 2008 हो, मगर 2013 में बस्तर की जनता हो या सरगुजा की जनता हो, धोखा नहीं खाई । बस्तर की जनता ने 12 में से 8 सीट कांग्रेस को दिया, सरगुजा में 8 सीट दिया, अभी तो इनके बहकावे में कोई बस्तर या सरगुजा की जनता नहीं आने वाली और बस्तर में 12 में से 11 सीट पर पर कांग्रेस के प्रत्याशी को और सरगुजा की 14 में से 14 सीट पर कांग्रेस के प्रत्याशी जीते । छत्तीसगढ़ की जनता को आप कब तक धोखा देते रहेंगे । सभापति जी, आज सरकार की स्थिति है, मैं देख रहा था कि माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी का जो दर्द झलक रहा था, सत्ता का 15 साल का सुख लेने के बाद अचानक विपक्ष में बैठे तो क्या हाल होता है, आज मैं डा. साहब के चेहरे में देख रहा था । आज जोगी कांग्रेस, जो कांग्रेस पार्टी से अलग होकर एक नई पार्टी बनी है, ये लोग बड़े-बड़े सपने देख रहे थे । 72 सीट सोच रहे थे, मुंगेरी लाल के हसीन सपने देख रहे थे कि हम छत्तीसगढ़ में सरकार में आएंगे, जो 72 की जगह केवल 5 सीट में सिमट गए, कांग्रेस पार्टी ने जिनको छत्तीसगढ़ का प्रथम मुख्यमंत्री बनाया, उसी कांग्रेस पार्टी को इन्होंने कमजोर करने का प्रयास किया इसीलिए इनकी ये दुर्गति हुई है । आज राष्ट्रीय पार्टी के प्रत्याशी, अंतागढ़ के जो कांग्रेस के प्रत्याशी थे, उनको बेचने का काम किया । इतनी हिम्मत हो गई । आज इसीलिए उसका जो दंभ भर रहे हैं ।

श्री केशव चन्द्रा :- माननीय सदस्य महोदय, क्या इसमें भी कुछ प्रावधान कर रहे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- जो आज मीडिया के माध्यम से बातें आईं कि त्रिशंकु सरकार बनेगी तो क्या सोच रहे थे कि

श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\e15\04.25-04.30

जारी....श्री मोहन मरकाम :- जो बातें मीडिया में आई कि त्रिशंकु विधान सभा आयेगी । माननीय सभापति जी, क्या सोच रहे थे कि बिल्ली के भाग्य से कब छींका छूटे तब हमारे पास आ जाये । आपने तो हाई कोर्ट में शपथ पत्र दिया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, ये पिछले विधान सभा में जैसा पाते थे, वैसा बोल लेते थे, इस बार आपको थोड़ा संयम से बोलना पड़ेगा । आप अनुपूरक बजट में बात करना चाह रहे हैं कि अजीत जोगी के खिलाफ बात करना चाह रहे हैं। ऐसा है तो एक नोटिस दो, फिर बात करेंगे । इस तरीके से आप जो कुछ भी आ रहा है, बोल रहे हैं । कम से कम आसंदी से तो मना करिये । विषय से हटकर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चर्चा नहीं होगी, सभापति महोदय । विषय यहां पर है अनुपूरक बजट । अनुपूरक बजट में जनता कांग्रेस, त्रिशंकु विधान सभा, साथ दो, यह सब दुनिया भर की बात करने का अवसर नहीं है, अगर करना है तो आप कर लीजिए । अनुमति दें तो फिर हम उसका सिलसिलेवार जवाब दें और थोड़ा विषय से विषयान्तर नहीं होना चाहिये । माननीय मरकाम साहब आप बहुत विद्वान है । आप सीनियर हो गये हैं, आप थोड़ा सा भाषा में नियंत्रण रखिये और अपने विषय में रहिये ।

श्री केशव चन्द्रा :- उत्साह में ज्यादा हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, इन्होंने भारतीय जनता पार्टी की बी टीम की तरह कार्य किया, आज छत्तीसगढ़ की जनता ने इसको नकार कर पीछे रख दिया है । आज हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी .....।

सभापति महोदय :- डमरूधर पुजारी जी ।

श्री मोहन मरकाम :- आपको किसानों ने 15 साल का मौका दिया । किसानों का दर्द समझने के लिए हमें 15 साल का मौका दीजिए । आप साल भर काम करने का मौका दीजिए, हम काम करके दिखायेंगे । हमारा जो भी घोषणा पत्र है, हमने जो-जो जनता को घोषणा किया है, उन घोषणाओं को हम पूरा करेंगे । माननीय सभापति जी, आपने बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- डमरूधर पुजारी जी ।

श्री डमरूधर पुजारी बिन्द्रानवागढ़ :- माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने अनुपूरक बजट में जो मांग रखी है, उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं। माननीय सभापति जी, हम लोग सभी पार्टियों से चाहे कांग्रेस हो और अन्य पार्टियां हो, किसान-किसान की बातें सुन रहे हैं । किसानों की जो पीड़ा होती है, आज हमारे क्षेत्र में किसान जो धान बेच रहे हैं, वहां पर अधिकारी लोग आतंक मचाये हुये हैं । हमारी भारतीय जनता पार्टी की डॉ. रमन सिंह जी की सरकार 15 सालों तक जो संवार कर गये हैं, उन्होंने मृत्यु से जन्म तक योजना बनाई है । कांग्रेस पार्टी ने 50 सालों तक राज किया, उस शासनकाल में किस तरह हमारे किसान भाई मुसीबत में रहते थे । हमारे भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 15 सालों तक शासन किया, जिसमें किसानों के हितों से उनके चेहरे में रौनक आई । आज जब कांग्रेस की सरकार बनी है तो कर्ज की माफी अभी तक हमारे किसान भाईयों को नहीं हो पाई है । हमारे किसान भाई आज भटक रहे हैं । खाते में पैसे नहीं है, ए.टी.एम. में पैसे नहीं है, आप याद करें कि पिछले 50 साल में आपने क्या घोषणा किये थे । डॉ.रमन सिंह जी की सरकार ने छत्तीसगढ़ की जनता को सजा कर रखा है । आपने किसान भाईयों के लिए 50 साल में क्या किया, किसान के जमीनों में लाल झण्डा गाड़ते थे, पहले कौन सी पार्टी की सरकार थी, उसको भी याद करें । हमारी भारतीय जनता पार्टी ने 15 सालों में छत्तीसगढ़ को इतना सजाया। आज डॉ. रमन सिंह आज हमारे मुख्यमंत्री नही है, लेकिन उन्होंने छत्तीसगढ़ को सजाया और हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ दिया और विकास डॉ.रमन सिंह जी ने किया । अभी कांग्रेस पार्टी कर्जा माफ की बात कर रही है, कौन-कौन से बैंक में कर्जा माफ किये, उसको भी बता दें । अभी एक सोसायटी में कर्ज माफ किया है, लेकिन राष्ट्रीयकृत बैंकों से कर्जमाफी नहीं किये हैं । उसमें भी हमको छूट मिलना चाहिये, कर्जमाफ होना चाहिये ।

श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\e16\.-.

जारी.. श्री डमरूधर पुजारी :- मेरे क्षेत्र में जो एस.डी.एम. है उसको तत्काल हटाईये। क्योंकि किसान लोगों को परेशान किया जा रहा है। इसी प्रकार खाद निरीक्षक जो जिले में बैठता हैं और थाने के उपनिरीक्षक को भी तत्काल हटाईये। हमारे किसान को बहुत परेशानी हो रही है।

श्री बृहस्पत सिंह :- पुजारी जी, 15 साल से अधिकारी बिगड़ गये हैं, धीरे-धीरे सुधारने का काम कर रहे हैं।

श्री डमरूधर पुजारी :- 100 दिन में महंगाई कम कर देंगे और क्या क्या घोषणा किए थे। आज एक बार आ गये। हालाकि आदान-प्रदान होता है। कभी आप उधर तो कभी हम इधर।

श्री बृहस्पत सिंह :- किसानों का कर्ज माफ होना चाहिए या नही?

श्री डमरूधर पुजारी :- सभापति महोदय, कोई भी पार्टी आती जाती रहती है। आज हम इधर बैठे हैं कल उधर बैठेंगे। आप धोखे में मत रहना, मेरे क्षेत्र में कोई भी खड़ा हो जाए, आपके वन मंत्री वोट मांगने गये थे, उनका काम आया नहीं जबकि मैं किसी जनता के पास वोट मांगने नहीं गया।

श्री बृहस्पत सिंह :- वनमंत्री को हराने का काम किये क्या ?

श्री डमरूधर पुजारी :- हॉं, हराने का काम किया था। (हंसी) वहां की जनता ने आशीर्वाद दिया और इस मंदिर में दो बार भेजने का काम किया। हमारे डॉ. रमन सिंह जी ने 15 साल में छत्तीसगढ़ को कमल के फूल जैसे इतने सुंदर से सजाया है आप 5 साल में कैसे क्या करना है आप जानो, आप लोगों के अंदर क्या क्या बात है हम लोग भी जानते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- वनमंत्री को हराकर आ गये ना?

श्री डमरूधर पुजारी :- हां, वह कवासी लखमा था जो कोको-ढोको के लिए जाता है। कोको-ढोको हमारे आदिवासी क्षेत्र में होता है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- सभापति महोदय, कोको-ढोको क्या होता है?

श्री डमरूधर पुजारी :- कोको-ढोको माने मुर्गा और दारू और ये दारू का विरोध करते थे।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपके यहां सल्फी मिलता है या नहीं?

श्री डमरूधर पुजारी :- नहीं, मेरे क्षेत्र में नहीं मिलता, आपके क्षेत्र में सल्फी मिलता है। हम लोग तो जानते भी नहीं कि सल्फी क्या होता है। किन-किन किसानों का राष्ट्रीयकृत बैंक में पैसा माफ हुआ है

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

या सोसायटी में हुआ है उसको तो बता दें? मैं करोड़, लाख की ज्यादा बात नहीं करूंगा लेकिन हमारे किसान को लाभ मिलना चाहिए। हमारे कालातीत वाले किसान को भी छूट मिलना चाहिए, उन्हें भी छूट नहीं मिल रहा है। हमारे बगल में उड़ीसा राज्य है वहां खुशी से बहुत सारे किसान गये और वहां जाकर ए.टी.एम. में लगा दिये लेकिन उनका ए.टी.एम. में पैसा नहीं दिख रहा है। सब मेरे पास आ गये।

श्री बृहस्पत सिंह :- उड़ीसा में धान क्या भाव बिकता है? अभी धान उड़ीसा से आ रहा है या नहीं?

श्री डमरूधर पुजारी :- कौन-कौन से बैंक में कौन-कौन से किसान का कर्ज माफ कर रहे हैं उसको क्लीयर करिये ना। क्लीयर करने से किसान में खुशहाली आयेगी और आपको भी धन्यवाद देंगे। मगर ये भी आप सोच लो कि पार्टी सत्ता में कभी आती है तो कभी जाती है। यह तो जनता जनार्दन का आशीर्वाद है। अभी हमारे बृहस्पति जी बोल रहे थे।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपको मंत्री बनना है क्या?

श्री डमरूधर पुजारी :- मुझे नहीं बनना है, बनने वाले बहुत से बाकी हैं। सभापति महोदय, सुनिए ना। (हंसी) हमारे आदिवासी एरिया में भोली भाली जनता है। इसी तरह हमारे बस्तर और सरगुजा की जनता भी भोलीभाली होती है। मगर हम लोग यह बोल देंगे तो किसान लोग हमको वोट देंगे। आज हमारे जो भी नेता हैं वह किसान को (XX) [5]बना दिये मगर उसका संवरना, विचरना, उसका चलाना सभी किसानों की चिन्ता करके जो भी कर्ज है वह माफ होना चाहिए साथ ही जो बेरोजगार हैं उन पर भी ध्यान देना चाहिए। हमारे आदिवासी भोले भाले होते हैं उनका भी ध्यान देना चाहिए। मेरे क्षेत्र के अधिकारियों पर भी ध्यान दें।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, (XX) शब्द को विलोपित करवा दीजिए। आपके खाते में किसानों की कर्जमाफी का पैसा गया या नहीं?

श्री डमरूधर पुजारी :- नहीं हुआ तब तो बोलना पड़ रहा है। ए.टी.एम. में गये हैं, उड़ीसा सामने है, जब हमारी भारतीय जनता पार्टी सरकार छत्तीसगढ़ में रही है गरीब, अमीर और हमारे किसान तथा बेरोजगार सबकी चिन्ता की जायेगी। मैं डॉ. रमन सिंह को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। आपने बोलने का समय दिया धन्यवाद।

श्री प्रमेश

[5] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोापित

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रमेश\08-01-2019\e17\04.35-04.40

श्री दलेश्वर साहू जी :- माननीय सभापति जी 15 सालों में किसानों को जो हालात हुआ है। आज धर्मग्रंथों में, अगर धर्मग्रंथों को पढ़ोगे तो दरिद्रता को जो लक्षण दिखाई देता है उस लक्षण को अगर देखोगे तो 15 साल में ही किसानों के साथ मं ही उनका लक्षण दिखाई दिया है। जैसे उसका 5-6 लक्षण हैं अध्यक्ष महोदय, समय में नाखून न कांटना, समय में दाढ़ी न बनाना, समय पर बाल न कांटना ये दरिद्रता की निशानी है। आज 15 सालों में किसान की हालत इतनी खराब हो चुका है आप देखिए उस लक्षण को तो ये जो लक्षण है आज श्री भूपेश बघेल जी निश्चित रूप से, अभी तो 15 दिन हुआ है। माननीय मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि इतना बजट में क्या होगा? कैसे बिजली का बिल हाफ होगा। कैसे यहां पे कर्जा माफ होगा। जो बजट तैयार किया है, जो घोषणा पत्र तैयार किया है। हमारे इतने अनुभवी आदमी लोग हैं, और मध्यप्रदेश में मंत्री रहे हुए हैं, इतने अनुभवी लोग हमारे साथ हैं, हमारे टीम के साथ हैं, श्री भूपेश बघेल की टीम के साथ में हैं जब समय आयेगा तो जरूर मुख्यमंत्री जी उत्तर देंगे, ऐसा मैं विश्वास करता हूं। जहां तक हमारे कुशल नेतृत्व के धनी जीवटता, कटिबद्धता, दृण संकल्प रखने वाले देश तर्रार जुझारू नेता जी के नेतृत्व में निश्चित रूप से किसानों का हित होगा। ऐसा मैं मानता हूं। जो 10 दिन के अंदर में जो अल्पकालीन ऋण माफी 3 हजार करोड़, धान उत्पादन पर प्रोत्साहन योजना 3 हजार 84 करोड़, लघु एवं सीमांत कृषक ऋण माफी 3 हजार दो सौ 32 करोड़, दलहन और तिलहन के समर्थन मूल्य पर खरीदी 100 करोड़, परंपरागत कृषि विकास योजना 240 करोड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 32 सौ 33 करोड़, मुर्गी पालन विकास योजना में 1 करोड़ 23 लाख रूपये का प्रावधानित है। जहां तक मैं सोचता हूं कि शुरूआत है । जहां तक घोषणा पत्र में छोटे से छोटे धरातल पे जा के हमारे घोषणा पत्र तैयार हुआ है चाहे वे कर्जा माफी की बात हो, चाहे मितानिन लोग जो कर्जा लिये हैं उनकी माफ हो, चाहे बिजली माफ हो, चाहे चिटफंड कंपनी में पैसा जो जमा है उसको वापस करने की बात हो चाहे किसानों को चाहे बेरोजगारों को भत्ता देने की बात हो सारे चीज बहुत सोच समझ के जो रचना तैयार किया है और उनके शीर्षक को पढ़ने से ऐसा लगेगा कि हमारे जो शीर्षक हैं गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। आप शीर्षक से ही पता लगा सकते हैं कि हमारे मुख्यमंत्री की सोच में कितना गहराई है। जब शीर्षक से ही पता चल जाता है कि किस ढंग से हमारी कार्य प्रणाली आगे होगा तो इस ढंग से हमारे जो पूरे टीम है। अभी हमारे श्री रविन्द्र चौबे जी के पास कृषि है, उनको चुनौती है मैं निश्चित रूप से दावे के साथ कहता हूं उनके जो अनुभव है वो निश्चित रूप से एक नया आयाम पैदा होगा किसानों के हित में। मैं श्री रविन्द्र चौबे जी हमारे मंत्री से कहना चाहूंगा कि कुछ पड़ेगा नहीं और ये दाढ़ी कांटने वाले जो लक्षण हैं, दाढ़ी समय में नहीं कांटना, नाखून समय में नहीं कटाना ये लक्षण निश्चित रूप से आने वाले वर्षों में लगातार धीरे-धीरे मिटेगा। 15 सालों की जो पाप है उसको इतना जल्दी कैसे धो पाओगे। इतना जो मल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गया है, इतना जो रंग गया है, इतना काई जम गया है वो निश्चित रूप से धीरे-धीरे होगा। अभी तो मार्च में लंबी बजट होगा ।

श्री केशव चंद्रा जी :- बाजार में एक से शेक डिटर्जेंट पाउडर आ गया है। 10 रूपये में पूरा सफाई।

श्री दलेश्वर साहू जी :- होगा, होगा समय लगता है। समय लगेगा ऐसा नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- केशव जी इसके बात आप ही का नंबर है।

जारी श्रीमती सविता

सविता\08-01-2019\e18\04.40-04.45

श्री दलेश्वर साहू :- माननीय सभापति महोदय, थोड़ा सा और बोलना चाहता हूँ। अभी हमारे आदरणीय देवव्रत जी बाबा कर रहे थे, मैं भी उनकी बातों को गंभीरतापूर्वक सुन रहा था और निश्चित रूप से उसका हल निकलेगा। पूरे होशो-हवास के साथ उसका निदान होगा, मैं भी एक किसान हूँ। मेरी भी जिम्मेदारी है और जवाबदेही है। कहीं भी पूरे सदन के विपक्ष के सदस्यों को चिंता करने की जरूरत नहीं है कि हालांकि मेरा 50 एकड़ का वेजिटेबल क्रॉप है मैं एक हाईटेक किसान हूँ। अभी मेरा भी कर्ज माफ नहीं हुआ है मैं उस बात को इंगित जरूर कर रहा था, पर अभी जो हमारे छोटे-छोटे किसान, सीमान्त किसान हैं 5 एकड़ के अंदर के जो किसान है, उनका पहले चरण में करना चाहिए। हम लोग बड़े लोग हैं। हम पहले तो ये चाहते हैं कि हमारे किसान का भला हो तो निश्चित रूप से उस क्रमबद्धता के तहत किसानों में खुशहाली आएगी, ऐसा मैं मानता हूँ। इन्हीं भावनाओं के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। आपने मुझे बोलने का समय दिया उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर):- माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-2019 के तृतीय अनुपूरक अनुदान मांग मा चर्चा करे बर खड़े होए हो। जेहर 10 हजार से भी ऊपर के राशि हे अउ पूरा सदन में एक बात प्रमुख रूप से उठत हे।

समय :
4:42 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये मांग मा भी प्रमुखता से किसान मन के बात ला रखे गे हावय। सत्ता पक्ष कहात हे कि आप मन एकर समर्थन में अधन्नी हो। जे करा किसान के हित के बार रहि कोन जनप्रतिनिधि हे, जे ओकर समर्थन में नहीं रही ? लेकिन छत्तीसगढ़ के किसान जेन मन धरती के सिना ला चिरकर के अन्न पैदा करथे। सरकार चाहे ये पक्ष के रिहिस, सरकार चाहे वो पक्ष के रिहिस, ओ

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किसान मन ला केवल लूटे के काम करे हावय। आप अनुदान मांग मा कर्जा माफी बर अतके रूपया काबर मांगत हो ? अउ किसान के परिभाषा का हे, आप कोन ला किसान मानत हो ? कर्ज माफी के का परिभाषा हे, कोन हर कर्ज हे ? केवल समिति में जो कर्जा ले हे, वही हा कर्ज हे, केवल ग्रामीण बैंक मा कर्जा ले हे वही हा कर्ज हे, फिर राष्ट्रीयकृत बैंक काबर हे ? बड़े-बड़े बैंक काबर खोले हावव ? केवल राष्ट्रीयकृत बैंक नहीं, अब तो छत्तीसगढ़ में प्राईवेट सेक्टर के अनेक बैंक आ गे हे, जेन मन ले किसान मन कर्जा ले हे, अउ बैंक के नियम धरम अतका अकन हे कि बहुत सारा किसान तो बैंक के नियम ला पालन नहीं कर सकए। तेकर कारण अपन व्यवस्था बर सेठ अउ साहूकार मन करा भी कर्जा ले हे। अगर ये सरकार के नियत साफ हे, तो ये तमाम् किसान मन के कर्जा ला भी माफ करना चाहिए, ओकर बर भी बजट में प्रावधान रखना रहिसे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सेवा सहकारी समिति, किसान धान देथे, कर्जा ला काट देथे। अभी कर्जा ला झन काट। ओतकी में ढिंढोरी पिटत हवव कि हमन कर्जा ला माफ कर दे हन। प्रदेश में आप बताव कि केवल 16 लाख किसान मन के कर्जा ला आप माफ करे के बात करत हावव। ये छत्तीसगढ़ प्रदेश में कतका किसान हे ? सरकार कर आंकड़ा होना चाही। अउ ओमन के का हो ही जेन मन कूटा मा, अधिया मा, आने के ठेका मा, रेगहा मा खेती करय हावए, आखिर ओ किसान मन भी तो कर्जदार हे। ओ किसान मन के का हो ही ? मैं 5 साल पहिली भी विधायक रेहेव, अभी हमर कुछ सदस्य मन ये तरफ बैइठे अउ सरकार के आलोचना करय, स्थिति परिस्थिति बदल गे, ये तरफ ले ओ तरफ चल दीन, अब सरकार के जो गलत काम होवत हे, तेकरों आलोचना ला बंद करके केवल प्रशंसा करे के काम करत हावय।

श्री अजय चन्द्राकर :- स्थिति परिस्थिति बदल गई, पर हाथी चल रहा है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- हाथी एक ले दू होगे। अउ हमन एक ले 7 हो गेन। अभी मरकाम जी कहत रिहिन हे, सपना देखत रिहिन का होईस ? आप के अनुपात में बढ़ए हावव तेला देखव। अउ हमन एक ले सात होकर ये करा बइठे हन। छत्तीसगढ़ के जनता तो जनादेश दे दिस। यहां के किसान मन ला लूटने वाला मजदूर मन के अहित करने वाला, ये दोनों दल ला अब नइ चाहत हावएं, बल्कि तीसरा शक्ति के आने वाला दिन में ....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\08-01-2019\e19\04.45-04.50

पूर्व जारी.. श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- ये दोना दल ला अब नई चाहत हावयं, बल्कि तीसरा शक्ति के आने वाला दिन मा देखिहे, दोनों दल मन इती बैठिही, अउ जेमन किसान और मजदूर मन के शुभचिंतक रहीं, तेमन उती बैठिहीं, एक संकेत छत्तीसगढ़ की जनता दे देयहे। ये जो किसान मन के साथ

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

विश्वासघात होत हे, किसान मन ला एक आश्वासन दे करके जो वोट ले करके 68 सीट ले करके आयेच हे, जे सरकार के करा बैठे हवय, केवल कुछ किसान मन ला के कर्जा माफी दे करके सरकार अपन जवाबदारी और जिम्मेदारी ले नई बच सकय। सरकार ला सबो बैंक के, प्राइवेट सेक्टर के, सेठ, साहूकर मन के जो कर्जा किसान मन लेय हें, सब ला माफ करै बा लागही। एकर लिये कोई बैंक करा आंकड़ा मंगाये के जरूरत नई हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, केवल दोई मिनट होईहे, मैं आप करा संरक्षण चाहत हौं।

अध्यक्ष महोदय :- तैं एक बार और बोल डाले हस, अभी नवा-नवा लईका मन आये हे, दुई-दुई मिनट ओहू मन के सुनन दे।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2500 रुपये क्विंटल के बात होत हवै। जब पिछली सरकार कहिस कि एकड में 10 क्विंटल धान खरीदहूं तो चिल्लाने वाले में हमहूं रहेन और आज सरकार में बैठे हें, ओहू रहिन हवैं। किसान के उत्पादन प्रति एकड़ 30 क्विंटल से ज्यादा होत हे और आप कहत हें कि केवल 10 क्विंटल खरीदहें, आज 14 क्विंटल 80 किलो खरीदी होत हवै। चिल्लाने वाले व्यक्ति मन सरकार में बैठ गये हें, आज किसान के 30 क्विंटल की चिंता करना चाहिए, 14 क्विंटल 80 किलो है, ओला प्रति एकड़ 30 क्विंटल खरीदी के आदेश देनी चाहिए। अगर ये किसान वास्तव में किसान के शुभचिंतक है ता। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम 14 क्विंटल 80 किलो धान ला समिति में बेचबो। ओकर हमला 2500 रुपया मिल जाही। सरकार कहत हे 2500 रुपया देबो तो वोहा मिल जाही। बाकी धान ला हम कहां बेचबो, सरकार ये ला किसान मन ला बताये? 14 क्विंटल 80 किलो के बाद बाकी के धान ला हम कहां भेजबो? आप हम अपन कोठार ले घर लेगत हन तो तहसीलदार, खाद्य विभाग के अधिकारी, मंडी के अधिकारी हमार ट्रैक्टर ला ले करके थाना में खड़ा करवात हें। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार ला कहना चाहत हौं आज के डेट में प्रदेश में देख लेवैं कि कतका कन किसान के धान ला जब्ती करके आज थाना में वो धान के ट्रेक्टर मन ला खड़ा किये गे हे। आप कर्ज माफी की बात करके किसान ये कोर्ट, वो कोर्ट, ये कचहरी, वो कचहरी रेगवाना चाहत हौं। ये सरकार हा कौन से किसान के शुभचिंतक हे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, धान खरीदी केन्द्र में बोरा के कमी होगे। धान खरीदी केन्द्र में किसान मन ला टोकन नई मिलत हे। धान खरीदी केन्द्र में किसान मन जात हें। 14 दिसंबर ले पानी गिरत हे, पानी गिरे के कारण, बेमौसम बरसात होये के कारण हमन धान हा सूली आ गये हे, हमर धान हा बदरंग हो गये हे। लेकिन आज एक ही क्वालिटी के नाम पर खरीदी केन्द्र में ओ धान ला लेत नई हे, वापिस करत हें, हम ओ धान ला कहां बेचहूं। दूसर तरफ यही सरकार के निर्णय कि जे धान प्राकृतिक आपदा, बेमौसम बरसात के कारण नुकसान होय हे, 6(4) के अंतर्गत ओकर प्रकरण बनाये जाये करके निर्देश देहीं। लेकिन आज मैं सरकार ला कहना चाहत हवौं 10 दिसंबर से बरसात के शुरूआत होवे है, 10

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दिसंबर के बाद आज एक महीना होये के बाद कै झन किसान ला प्राकृतिक आपदा के मुआवजा मिले हे। मुआवजा मिलना तो दूर के बात हे, कै झन किसान के प्रकरण बने हवै। अब सरकार बदले ले का होईही। पहली सरकार मा भी अधिकारी राज रहिस हे, पहली सरकार मा भी अधिकारी मन राजपाट करत रहिन, मजदूर किसान मन ला परेशान करत रहिन, आज सरकार बदले के बाद भी आज वोही अधिकारी राज पूरा प्रदेश में हे। किसान के कहीं कोई सुनवाई होने वाला नई हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार ला निवेदन करना चाहत हन, आप कर्जा काफी की बात करत हौ, 2500 रुपया की बात करत हौ, ओकर हम विरोध नई करत हन, लेकिन कर्जा माफी तमाम किसान मन के होना चाही, चाहे कोई भी प्रकार के कर्जा रहै। 2500 रुपया के लाभ तमाम किसान मन ला मिलना चाहिए। आज आप जिला के कलेक्टर, एस.डी.एम., तहसीलदार के माध्यम से किसान मन ला परेशान करत हौ, ओकर धान ला जब्ती करत हवा.... (जारी)...

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\f10\04.50-04.55

जारी..........श्री केशव चंद्रा :- एस.डी.एम. के माध्यम से, तहसीलदार के माध्यम से किसान मन ला परेशान करत हओ, ओकर धान ला जब्ती करत हावा, ओमन ला प्रताडित करत हावा कोचिया हे कहिके, व्यापारी हे करके, टोकन नहीं है करके, किसान मन ला प्रताड़ित करना बंद करा नहीं तो आज 68 के गुरूर मा जो बैठे हावा लोकसभा चुनाव मा ओला भी जनता मन जो हे बता दिही । एकर बर मैं सरकार से निवेदन करत हंओं अऊ आदरणीय अध्यक्ष महोदय आप मोला समय दे हओ तेकर बर आप ला धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीया श्रीमती ममता चंद्राकर जी पहली बार सदन में अपना भाषण दे रही हैं । उनका स्वागत है । (मेजों की थपथपाहट) कम समय में अपना भाषण समाप्त करेंगी ।

श्रीमती ममता चंद्राकर (पंडरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज नया साल है । नवगठित विधानसभा है अऊ साथ में सदन के तृतीय अनुपूरक बजट 10 हजार 395 करोड़ 58 लाख 25,400 का मैं समर्थन करत अपन वाणी ला आरंभ करत हंओं। तृतीय अनुपूरक बजट के साथ एक नइ शुरूआत हे । खर्चा के पूर्ति के लिये अनुपूरक बजट अनुमान पेश होना सदन के नियमित प्रक्रिया है । इतना बड़े राशि अनुपूरक बजट अऊ बजट के पूरा राशि किसानों के लिये, ग्रामीणों के लिये, अल्पवेतन भोगी कर्मियों के वेतन के लिये यानी पूरा जनकल्याण के लिये प्रस्तुत किये जाने की एक नई परंपरा इस तृतीय अनुपूरक बजट के साथ स्थापित हो रहा है। आशा भी है, पूर्ण विश्वास भी है, विधानसभा चुनाव 2018 के दौरान छत्तीसगढ़ की जनता के सामने हमन जेन वायदा करे हन ओ वायदा में हमन ला पूरा करे के दिशा में हमर पहली कदम है आज के तृतीय अनुपूरक अनुमान विधेयक ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, ऋण माफी के निर्णय के क्रियान्वयन हेतु हमने अल्पसमय ही अल्पकालिक कृषि ऋण माफी योजना 2018 की अधिसूचना जारी कर दी है । तृतीय अनुपूरक बजट में ऋण माफी के लिये 4223 करोड़ 47 लाख का बजट प्रावधान भी प्रस्तावित किया जा रहा है । प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के 15 लाख किसानों के लिये अल्पकालिक कृषि ऋण जो दिनांक 30 नवंबर 2018 तक बकाया थे जिसकी अनुमानित राशि 5170 रूपये करोड़ माफ किया जा रहा है । राज्य शासन के ऋण माफी योजना प्रदेश के इतिहास में सबसे बड़ी माफी योजना है । निश्चित ही हमर कांग्रेस की सरकार हमर माननीय यशस्वी मुख्यमंत्री के निर्देश मा हमन हा आगे छत्तीसगढ ला प्रगतिशील बनावो अऊ ओकर जो निर्णय रइहि ओमन हमर सहयोग भी रइहि । ओखर मार्गदर्शन में हमन आने वाले समय मा भी छत्तीसगढ़ ला विकास के अऊ छत्तीसगढ ला विकास के ही प्रदेश कहे जाही ताकि आज किसान मन जेन कर्जा माफ होय हे ओमा उत्साहित है, यह ओमन के साथ हे, सहयोग हे, जेन 68 सीट छत्तीसगढ़ में आये हे निश्चित ही आने वाले समय मा किसान मन एक गर्व से कहत हे कि छत्तीसगढ़ के सरकार छत्तीसगढ़ में आगे हे, छत्तीसगढ़ के बेटा छत्तीसगढ़ ला लाये हे । इही सम्मान के साथ ओमन गर्व से बोलत है कि छत्तीसगढिया सबले बढ़िया । अतके कहिके मैं अपना वाणी ला विराम देवत हंऑं । धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- श्री रामकुमार यादव । कम समय में अपनी बात कहें ।

श्री रामकुमार यादव (चंद्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम तो मैं पूरा सदन ला जय जौहार करत हंऑं कि आज इस 18-19 अनुपूरक बजट में आप मोला बोले के मौका दे हओ । ये गर्व के बात है कि आज इस प्रदेश में ऐसी सरकार बैठे हे जेन गांव के गरीब बोईर बिनईया, धान सिलईया, गांव में नांगर जोतईया के भी ख्याल करोईया सरकार बने है । सरकार में कुर्सी में तो कतको बैठे है अऊ बैठत आवत हैं लेकिन अंतिम छोर में बैठे हुए व्यक्ति जेन ला भाषण में नेता मन बहुत बोलय कि हम यह करेंगे, वो करेंगे लेकिन अंत में जाकर ओखर स्थिति ला देखिहओ लेकिन मैं धन्यवाद देहओं माननीय भूपेश बघेल जी ला अऊ पूरा मंत्रीगण ला अऊ ये सदन ला चलाने वाला हमर संसदीय कार्यमंत्री आदरणीय चौबे जी ला जेन अब के बढिया बजट बनाये है जेमा हर वर्ग कहत है कि छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार के आदमी रहथे । मैं ये सदन ला कहना चाहूं कि ऐमा दलहन-तिलहन के बात आये हे ।...................जारी

.............श्री कुरैशी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कुरैशी\08-01-2019\f11\04.55-04.60

जारी......श्री रामकुमार यादव :- छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार के आदमी रहथे । मैं ए सदन ला कहना चाहूं कि जब एमा दलहन-तिलहन के बात आए हे । आज हमन धान उपजावत हन, अउ दाल ला महंगा में बिसावत हन । हमर आदरणीय अध्यक्ष बइठे हे, हमर सारागांव के रहइया हे । जब हमन जांजगीर जावन, अउ ओती ले आवन तो बस ला रोकवा कर हमन राहर ला टोर-टोर के आवन । एक जमाना मा वो स्थिति रहिए हे, वो परिस्थिति रहिए हे कि हमर घर में एक साल ला दार बिसाय बर नइ लागय । लेकिन आज धन्यवाद दिहौं आदरणीय भूपेश बघेल जी ला । जेन हा अइसे किसान ला प्रोत्साहन बर बजट मा प्रावधान रखे हावय । मैं गरवा चराए वाला हौं, मैं गरवा चराकर भाठा मा ठोके राहौं । तो हमन जाकर पूरा स्थिति ला देखे रहेन । का होथे खातू, हमन जानथन । घुरूवा कइसे रहिथे, आज वो घुरूवाला पुनर्जीवित करे बर ओ गोबर खाद बर जेन प्रावधान करे हे । आज हमन छत्तीसगढ़ मा गाडा भइसा ला देखबो । वो घुरूवा ला देखबो । ये छत्तीसगढ़ बर बहुत बड़ा गौरव के बात हे । मैं आज के इस बेला में बताना चाहूं कि छत्तीसगढ़ के महान संता हा कहे हवय । रोटी, कपड़ा और मकान, ये तीनों हे सतलोक समान । हमर गुरू घासीदास जी कहिके गे हे । आज रोटी, कपड़ा अउ मकान के व्यवस्था कोनो करत हे तो आदरणीय भूपेश बघेल जी करत हे, आदरणीय मंत्री मन करे हे । एखर बर मैं साधुवाद दिहौं । मोला कबीर साहब के दोहा भी याद आत हे । हमर आदरणीय केशव चन्द्रा जी कहत रिहिस हे कि इहां के किसान मन धरती के सीना ला चीरकर अन्न उपजाथे लेकिन उंखर घर में जाकर देखिहौ तो बेटी के शादी करे बर कइसे करिहौं । मोर बेटा बाढ़ गे हे, ओखर पहुंचा कइसे झोखिहौं । रिश्ता कहां ले लानिहौं । मोर बूढ़ा बाप के इलाज कइसे करिहौं । किसान मन अइसे चिंता करत रहाएं जइसे कि जल में रहकर प्यासी, अउ मोला सुन-सुन आवै हांसी । अगर मछरी पानी के भितरी में रहिके प्यासी हौं कही तो हमन हांसबो, उसी प्रकार आज इंहा के किसान मन के स्थिति रहिस हे। किसान उन्नन उपजावै लेकिन ओखर घर सूना राहय । ओखर घर में एक दाना बीज नइ राहय, पइसा नइ राहय । लेकिन धन्यवाद दिहौं आदरणीय भूपेश जी ला । अइसे गरीब किसान के कर्जा माफ मरे हे । मैं सदन ला कोटि-कोटि प्रणाम कर हौं, जय भारत, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती रश्मि आशीष सिंह । आपका भी पहला भाषण है, स्वागत है ।

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह (तखतपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट की अनुदान मांगों पर चर्चा में भाग लेने का अवसर देने के लिए आपका धन्यवाद् । मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती हूं कि मैं उस संवेदनशील मुख्यमंत्री की सरकार का हिस्सा हूं जो सबसे पहले किसानों का हित सोचते हैं, गरीबों का हित सोचते हैं । इससे पहले चर्चा में शामिल सदस्यों ने जो बातें की हैं । मैं कहना चाहूंगी कि यह अनुदान मांग विशेष तौर पर किसानों के लिए प्रस्तुत की गई है । ऐसा छत्तीसगढ़ राज्य जहां स्वयं

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

पूर्व मुख्यमंत्री जी के क्षेत्र में, जैसा कि अभी आदरणीय देवव्रत जी ने कहा कि 40 किसानों ने आत्महत्या की । नेश्नल क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक किसानों की आत्महत्या के मामले में छत्तीसगढ़ को शीर्ष पर रखा गया था। हमारे संवेदनशील मुख्यमंत्री जी द्वारा कर्जमाफी एवं धान का समर्थन मूल्य 2500 रूपए किए जाने का निर्णय, किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या को रोकने में सफल रहा । किसान इससे खुश हुए हैं, लाभान्वित हुए हैं । अगर ऐसा नहीं होता तो जिस दिन किसानों की कर्ज माफी हुई । उसके एक-दो दिन के अंदर ही भाजपा के नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस ली और कहा कि हम देखेंगे कि ऐसा हो पा रहा है क्या । अभी समाचार पत्रों का उल्लेख किया गया है तो मैं भी उल्लेख करना चाहूंगी कि समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला है कि ये पत्र लिख रहे हैं कि केन्द्र की सरकार भी कर्ज माफी की दिशा में काफी तेजी से प्रयास कर रही है । निश्चित तौर पर छत्तीसढ़ में कांग्रेस की जो नीति है, उसे केन्द्र की सरकार भी अपनाने की कोशिश कर रही है । इसलिए छत्तीसगढ़ में इसके विरोध और निंदा की बात मुझे समझ में नहीं आ रही है । छत्तीसगढ़ की कांग्रेस की सरकार ने जो किया है, बहुत अच्छा किया है, बहुत बेहतर किया है । जब प्रदेश में पहली बार भाजपा की सरकार आई, तब छत्तीसगढ़ में..................................

---जारी—श्री ठाकुर-

ठाकुर\08-01-2019\f12\05.00-05.5

जारी.........श्रीमती रश्मि आशीष सिंह:- तब छत्तीसगढ़ में किसानों की संख्या एक सर्वे है जिसका मैं उल्लेख करना चाहूंगी कि जब छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आयी तब पूरे प्रदेश में किसानों का प्रतिशत 44.54 था और मजदूरों का प्रतिशत 31.94 था। लेकिन उनकी सरकार के 10 वर्ष तक रहने के बाद जो जनगणना 2011 हुई, उसमें यह आकर उलट गया है और मज़दूरों की संख्या 41.80 प्रतिशत हो गई और किसानों की संख्या 32.88 फीसदी हो गई। हम सब जान रहे है कि कैसा और किसलिए हुआ। कृषकों की कृषि भूमि को बहुत से उद्योगपतियों को देने के कारण कृषक कम हो गये और वे वहीं मजदूर बना दिये गये जो उनकी भूमि में फैक्ट्री लगाकर के उद्योगपतियों ने फैक्ट्री लगाई और वे मजदूर बना दिये गये। उनके ही कृषि भूमियों का जबरिया अधिग्रहण हुआ और जो बच गये उनके समर्थन में सरकार ने भाजपा की सरकार ने ऐसा कुछ नहीं किया कि वो किसान उन्नत होते। अच्छे होते। ये पिछला घोषणा पत्र भी इस बात का प्रमाण है कि उनको बोनस नहीं मिला। धान का समर्थन मूल्य अगर आज 2500 रूपए किया गया है तो निश्चित तौर पर किसान को और किसी भी चीज की चर्चा करना बेकार है कि उनका ऋण माफ हो रहा है या नहीं। धान का समर्थन मूल्य 2500 रूपए उनको मिल रहा है। इसे तो आपको मंजूर करना ही पड़ेगा, स्वीकारना पड़ेगा कि धान का समर्थन मूल्य उन्हें 2500 रूपए मिल रहा है। जो बचे हुए किसान थे उन्हें इस हद तक प्रताड़ित किया गया इसका प्रमाण है

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कि हमारे नये मुख्यमंत्री जी ने शपथ लेते साथ जो 10 साल से अधिग्रहित जमीन कानून आ गया था कि कोई उद्योग लगाने के लिए जमीन लेता है और उस पर उद्योग नहीं लगता है तो वह जमीन वापस कर दी जाएगी। पिछली सरकार ने वो जमीन वापस नहीं की थी। माननीय मुख्यमंत्री जी को शपथ लेते साथ अगला बयान अगला ऐलान ये करना पड़ा कि टाटा से अधिग्रहित जमीन किसानों को वापस की जाएगी। यह हमारी सरकार ने घोषणा की है। तो किसानों की प्रताड़ना कम हो गयी है, घट गयी है। और वो बेहतर स्थिति में आ गये हैं। किसानों ने कांग्रेस पार्टी को आत्मसात किया है जिसका नतीजा आप सभी देख रहे हैं और 15 दिन के भीतर जो बेहतर काम सरकार ने करके दिखाया है कि आने वाले लोकसभा की चिंता आप करिए। हमारी पार्टी को करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं कहना चाहूंगी कि हमारे संवेदनशील मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में जो धान का कटोरा उद्योगपतियों के राख का कटोरा हो गया था वह पुन: धान का कटोरा होगा। मुझे बोलने का अवसर दिया। सम्माननीय सदन ने मेरी बात सुनी। इसके लिए आप सभी का धन्यवाद। जय हिन्द।

अध्यक्ष महोदय:- विनोद चंद्राकर जी।आपका भी पहला भाषण है।

श्री विनोद चंद्रकर:- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी द्वारा प्रस्तावित तृतीय अनुपूरक बजट 10 हजार 395 करोड़ 58 लाख 25 हजार 400 रूपए की इस राशि का मैं समर्थन करता हूं। अनुमोदन करता हूं। निश्चित ही इस बजट में किसान, मजदूर, आम जनता को भाजपा के कुशासन एवं तानाशाही से निजात मिलेगी एवं किसानों की खुशहाली आकर चेहरे में मुस्कान आयेगी। अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार एक बांझ की तरह थी जो किसानों के दर्द को समझ नहीं पा रही थी। जैसे प्रसव पीड़ा को बांझ औरत नहीं समझती। लगातार ऐसे तानाशाह आदेश आते थे तुलगी आदेश आते थे जैसे किसानों को रबी फसल में पानी नहीं दिया जाता था। अचानक 20 क्विंटल से 10 क्विंटल धान खरीदने का फरमान जारी हो जाता था। अनुदान के नाम में किसानों के साथ लूट ही हुई है। स्प्रिंक्लर पाइप की बात करूं वो मार्केट में मिलता था साढ़े 300 रूपए में और इनके यहां खरीदने जाओ अनुदान के नाम में तो उसका रेट हो जाता था 700 रूपए। ये पैसा जाता था इनके जेब में। भ्रष्टाचार खुले आम थी, लूट चरम सीमा पर थी। आदरणीय अध्यक्ष महोदय,भाजपा के सरकार में पूरे योजनाएं भ्रष्टाचार की बलि चढ़ गयी थीं। नकली खाद, नकली बीज यहां तक कि नकली दवाइयां जिससे कि खेत के कीड़े भी नहीं मरते थे सप्लाई की जा रही थीं। पूरा का पूरा बजट भ्रष्टाचार में चला जाता था। कांग्रेस की सरकार बनते ही किसानों के चेहरे खिल गये हैं

................जारी श्री अरविंद

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अरविंद\08-01-2019\f13\05.05-05.10

.........जारी श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- कांग्रेस की सरकार बनते ही किसानों के चहरे खिल गए हैं। किसानों के परिवार दीवाली के बाद दीवाली मनाने लगे हैं। किसानों का कर्ज माफ, धान का समर्थन मूल्य सरकार ने बढ़ाया है। यदि किसान खुशहाल होगा तभी प्रदेश का विकास हो सकता है। पूर्ववर्ती सरकार में किसान बेहाल था। किसानों का श्राप ही लगा कि सरकार ने 15 साल राज तो किया लेकिन उनकी सीट 15 में ही सिमट गई है। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मेरा कुछ सुझाव है, इसको भी अमल में लिया जाए। मेरा सुझाव है कि कृषक स्वयं अपनी इच्छानुसार अच्छे प्रकार के कृषि यंत्र, कृषि आधारित सामग्री पंजीकृत दुकानों से खरीदें। बिल एवं आवश्यक दस्तावेज जमा करने पर विभाग कृषक के खाते में अनुदान की राशि जमा करें। परिणाम यह होगा कि किसानों को अच्छे किस्म का सामान मिलेगा साथ ही भ्रष्टाचार खत्म होगा।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, किसानों द्वारा लगातार फसल की सुरक्षा हेतु लगातार कंटीले तार घेरा कराने हेतु मांग की जा रही है। किसानों को फसल सुरक्षा हेतु कंटीले तार घेरा कराने हेतु अनुदान दिए जाने का प्रावधान किया जाना चाहिए। यह किसानों के हित में होगा और यह प्रावधानित किया जाए।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, बागवानी पर विशेष ध्यान दिया जावे। ड्रीप पद्धत्ति से खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जाये। 15 साल तक किसानों ने पीड़ा झेली है उसका परिणाम विधानसभा में उनके सदस्य संख्या में दिख रहा है। हमारी सरकार में किसान खुशहाल होंगे, किसानों का आर्शीवाद किसानों को मिलेगा। कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, बागवानी मत्स्य विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए हमारी सरकार कृतसंकल्पित है। जिसका सीधा फायदा किसानों और हितग्राहियों को मिलेगा। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय रेखचंद जैन जी। कम समय में अपना प्रथम भाषण प्रस्तुत करें।

श्री रेखचंद जैन (जगदलपुर) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम सदन में उपस्थित सभी सम्माननीयजनों का हार्दिक अभिवादन करता हूँ। मैं पहली बार निर्वाचित होकर एक विधायक के रूप में इस सदन में शामिल हुआ। आप सभी का आर्शीवाद बना रहे, यही आशा करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कुर्सी पर राज तो लोग लम्बे समय तक कर लेते हैं, परन्तु जनता के दिलों में वही राज कर सकता है जो करीब से गरीब के आंसू को देखता है। हमारे कांग्रेस के लोग, कांग्रेस पार्टी के लोग गरीब जनता के आंसू को इन 15 सालों में बहुत करीब से देखा है। जनता ने जो स्नेह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दिया, हमारी कांग्रेस की सरकार बनाई है। आज हमारे प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री आदरणीय भूपेश बघेल जी के द्वारा जो अनुपूरक लाया गया है, इसमें किसानों की कर्ज माफी, किसानों के धान का समर्थन मूल्य, युवाओं को रोजगार, न्याय व्यवस्था, ऐसे कई मुद्दों पर जो अनुपूरक लाया गया है, इसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ और इसका समर्थन करता हूँ। हमारे लोकतन्त्र में किसी भी सरकार का सबसे पहला फर्ज यह होता है कि जनता से जिन मुद्दों पर मत लिया जाता है, उनकी भलाई के लिए काम करे। हमारे मुख्यमंत्री जी इस दिशा में काम शुरू कर चुके हैं, जो हमारे छत्तीसगढ़ की जनता के सामने है। हमारी सरकार दलगत राजनीति से ऊपर उठकर काम कर रही है। हमारी पार्टी ने सुशासन दिवस भी मनाया। हमारी पार्टी ने देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के सम्मान में बाजपेयी सम्मान के लिए बजट में प्रावधान किया है। हमारी पार्टी जो है, महान व्यक्ति का हमेशा सम्मान करती है। महान व्यक्ति किसी पार्टी या किसी दल के नेता नहीं होते हैं। हमारी पार्टी समता, समानता और समरसता पर चलने वाली, विश्वास करने वाली सरकार है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार आम आदमी के जीवन स्तर पर बुनियादी बदलाव लाने हेतु कार्य कर रही है। अभी तक विकास पोस्टर और होल्डिंग में ही थमा रहा और उसमें ही स्थिर था। इसे धरातल में लाने के लिए हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी का जो प्रयास है, वह छत्तीसगढ़ की जनता अच्छे से देख रही है। उसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। धन्यवाद।

..........श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\f14\5.10-15

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुण्डरदेही) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कुंवर सिंह निषाद पहली बार सदन में निर्वाचित होकर आया हूं । इसलिए आपका आशीर्वाद और जितने भी वरिष्ठ सदस्य सदन में बैठे हैं, उन सबका भी मार्गदर्शन और सहयोग चाहूंगा । सम्माननीय दिवंगत सदस्यों को अपनी सादर श्रद्धांजलि देते हुए मैं अनुपूरक बजट का समर्थन करते हुए अपनी बात सदन में रखना चाहता हूं । सरकार द्वारा 2018-19 के लिए तृतीय अनुपूरक बजट सदन में लाया गया है, वह स्वागतयोग्य है । किसानों के हित में लिए गए निर्णय कि किसानों का कर्ज माफ और धान का समर्थन मूल्य 25 सौ रूपये करने के लिए मैं सम्माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं और साथ ही तृतीय अनुपूरक बजट 10395 करोड़, 58 लाख, 25 हजार, 400 रूपये का प्रावधान किया गया है, उसका मैं समर्थन करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय सौरभ सिंह जी के द्वारा एक बात कही गई कि ये सरकार 1 लाख करोड़ का बजट कहां से लाएगी । मैं सौरभ सिंह जी से कहना चाहूंगा कि बजट की चिन्ता करने की जरूरत आपको नहीं है, उसकी चिन्ता मुख्यमंत्री जी करेंगे क्योंकि सरकार उनको चलानी है, बजट का

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रावधान उनको करना है । मैं सौरभ सिंह जी को कहना चाहूंगा कि बजट की चिन्ता माननीय मुख्यमंत्री जी को करने दीजिए और किसान के खातो के पैसे की बात है तो धान के समर्थन मूल्य का पैसा सीधा-सीधा किसानों के खाते में जाएगा तो वह ध्यान में रखिएगा । पिछले सरकार की एक महती योजना चली है-सरस्वती सायकल योजना । मैंने स्कूलों में जाकर देखा है कि सायकल के मडगाड को दबाकर देखें तो वह चिपट जाता है । उनकी क्वालिटी की बात बता रहा हूं कि आज भी सायकल के मडगाड को दबाकर देखें तो वह चिपट जाता है और रही मोबाईल की बात तो 15 सौ रूपये के मोबाईल को 5000 रूपये में दिए हैं तो उनके बारे में भी संज्ञान लिया जाए, उनके बारे में जानकारी ली जाए कि कितने का मोबाईल है और कैसे 5-6 हजार रूपये में बेचा गया तो उसके बारे में जांच होनी चाहिए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक सामान्य मछुआरा परिवार से हूं तो मैं उसके बारे में भी बात करना चाहूंगा कि पिछली सरकार ने 15 सालों में मछुआरा समुदाय के लिए मछली नीति बनाई है, उन पहलुओं को गौर से देखा जाए तो किसी भी छोटे से छोटे मत्स्य कृषक को कोई लाभ या फायदा नहीं हुआ क्योंकि मैं भी छोटा सा मत्स्य कृषक हूं और मैं भी मछली का काम आज भी करता हूं । मैं अंतिम छोर का व्यक्ति हूं, मुझे आज भी एक रूपये का अनुदान उस विभाग से नहीं मिला है । मछली नीति के संशोधन की बहुत आवश्यकता है और बहुत जरूरी है । जिस हिसाब से अनुदान दिया जाता है, मैं माननीय अध्यक्ष महोदय से कहना चाहूंगा कि उसमें संशोधन करने की बहुत जरूरत है क्योंकि 23 लाख मछुआ समुदाय के परिवार के जीवन की बात है तो मैं चाहता हूं कि उस पर भी विचार होना चाहिए और सदन में उस पर भी प्रस्ताव लाना चाहिए कि समान मछली नीति बननी चाहिए और संशोधन होना चाहिए । अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद ।

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक (रायगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने मुझे इस अनुपूरक मांग में बोलने का मौका दिया । छत्तीसगढ़ में पहली बार किसानों की सरकार बनी है और किसानों की सरकार में एक कृषक पुत्र मुख्यमंत्री बना है और हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ के किसानों की दशा और दिशा पर बहुत ध्यान रखा और इस अनुपूरक मांग में किसानों के हित का ध्यान बहुत अच्छे से रखा है इसके लिए मैं मुख्यमंत्री जी को और खासकर हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने छत्तीसगढ़ के किसानों का ध्यान रखा । ये छत्तीसगढ़ में पहली बार हुआ है कि सरकार बनने के तीन घंटे बाद किसी भी सरकार ने अपने वायदों का निभाया है और किसानों के कर्ज को माफ करने का निर्णय लिया और छत्तीसगढ़ में किसान लगातार आत्महत्या कर रहे थे कि उनकी लागत, उनके उत्पाद का मूल्य सही नहीं मिल पा रहा था तो इस सरकार ने किसान के धान की कीमत 25 सौ करने का निर्णय लिया, इसके लिए भी मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीवास\08-01-2019\f15\05.15-05.20

जारी.....श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- इस अनुपूरक अनुमान में कृषि के हर क्षेत्र में उत्पाद पर ध्यान रखा गया है । चाहे दलहन हो, चाहे परम्परागत खेती हो, चाहे फसल बीमा हो, मुर्गी पालन हो, सभी पर ध्यान रखा गया है । इसके लिए मैं हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा । माननीय मुख्यमंत्री जी एक कृषक पुत्र हैं, एक किसान है, वे छत्तीसगढ़ के किसानों की दशा और दिशा को जानते हैं । उन्होंने हर पक्ष का ध्यान रखा, इसलिए मैं इस अनुपूरक अनुमान का पुरजोर समर्थन करता हूं। मैं कुछ बात और रखना चाहूंगा । पिछले 15 साल में लगातार तिहार मनाया गया, चाहे वह टिफिन बांटने का काम हो, टिफिन देकर हमारे जो मजदूर थे, उनको कटोरा थमाया गया था कि आप लोग जाकर भीख मांगों । चाहे वह सिलाई मशीन बांटने का तिहार हो, चाहे रापा गैती बांटने का तिहार हो, चाहे वह घटिया सायकल बांटने का तिहार हो, हर प्रकार का तिहार मनाया गया, लगातार इस छत्तीसगढ़ के हर वर्ग को पिछले 15 साल में ठगा गया है । मैं उसका पुरजोर विरोध करता हूं। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, समय कम है, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। जय हिन्द, जय भारत । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत सिंह जी । आपसे विशेष अनुरोध है कि कम शब्दों में अपनी बात कहें ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आप कहेंगे तो बोलूंगा नहीं सर । अध्यक्ष महोदय, श्री भूपेश बघेल जी के द्वारा प्रस्तुत सप्लीमेंट्री बजट का मैं 15 प्रतिशत समर्थन करते हुये 85 प्रतिशत विरोध करता हूं।

श्री कवासी लखमा :- क्यों भई ?

श्री धर्मजीत सिंह :- कल बताऊंगा दादी । आपसे कल बात करेंगे । अध्यक्ष महोदय, एक आदेश 21-12-2018 को महानदी भवन, जिला रायपुर से सहकारिता विभाग का जारी होता है । इसमें योजना अल्पकालीन कृषि ऋण माफी की है । इसे तो मैं समर्थन करता हूं क्योंकि किसानों का कर्ज माफ हुआ है । लेकिन इसमें आपका कंडिका 4 बहुत खतरनाक है । कंडिका 4 में लिखा है, इस योजना के अंतर्गत अल्पकालीन ऋण को छोड़कर शेष किसी भी प्रकार के मध्यमकालीन, दीर्घकालीन ऋण की माफी नहीं की जायेगी । ऋण माफी का लाभ केवल कंडिका 2(10) में दर्शित बैंक एवं कंडिका 2 में दर्शित संस्थाओं से किये गये अल्पकालीन कृषि ऋण पर होगा । कार्पोरेट, पार्टनरशिप फर्म, ट्रस्ट को दिये गये कृषि ऋण पर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ऋण माफी का लाभ प्राप्त नहीं होगा । भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नियंत्रित माइक्रो फायनेंस संस्थान एमएफएलएस द्वारा वितरित किसी भी प्रकार के ऋण इस योजना में शामिल नहीं होंगे । खड़ी फसल के अतिरिक्त अन्य कृषि उत्पादों हेतु प्लेस एवं हाइपोथिकेशन के विरूद्ध दिये गये ऋण इस योजना में शामिल नहीं होंगे ।

श्री कवासी लखमा :- छोटे किसानों का होगा कि बड़े किसानों का होगा ?

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने छोटे ऋण माफ कर दिये । को-आपरेटिव सोसायटी से जो आपने माफ किया अध्यक्ष महोदय.....।

श्री कवासी लखमा :- यह मोदी करता है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- क्या हो रहा है मुख्यमंत्री जी ? आपके मंत्री जी की अभी तक विधायक की आदत पड़ी है क्या ? जरा बैठिये, मंत्री हो गये हैं । यह अलग बात है कि आपको सिर्फ दस्तखत करना है, लेकिन आप समझिये । अध्यक्ष महोदय, आदमी ट्रेक्टर लेता है, आदमी ट्रेलर लेता है और भी कृषि यंत्र लेते हैं, उसका कर्जा माफ नहीं हो रहा है । अध्यक्ष महोदय, खाद-बीज के कारण कोई आत्महत्या नहीं करता है । आत्महत्या होता है, बड़े-बड़े बैंकों के कर्जे से, किसी साहूकार के कर्जे से, इस विषय पर आपको जरूर माफ करने के बारे में सोचना चाहिये कि आप माफ करें ......

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\f16\.-.5

जारी.. श्री धर्मजीत सिंह :- इस विषय पर आपको जरूर माफ करने के बारे में सोचना चाहिए कि आप माफ करें। मुख्यमंत्री जी, मुझे लग रहा है कि राहुल गांधी जी ने यह कह दिया कि जो मुख्यमंत्री 10 दिन में नहीं करेगा उसको मैं हटा दूंगा तो कहीं आप उस हड़बड़ी में तो नहीं कर दिये? अगर आप करना भी चाहते हैं और अगर वह हड़बड़ी हो तो माननीय मुख्यमंत्री जी उसको अब तो सुधार लीजिए। क्योंकि आपका समय शुरू होता है अब। इस सदन के पहले दिन से जब आप बजट पेश किए हैं तब शुरू होता है आपका समय अब। इसलिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा कि इस प्रदेश के किसानों की रक्षा के लिए, क्योंकि सैकड़ों किसान आत्महत्या किये, जब ये सरकार में थे तो आत्महत्या के नाम पर सदन में हंगामा मचता था। आपकी बहुत सी टीमें जांच करने के लिए गई थीं। उनकी रिपोर्ट्स हैं उन्हें आप देख लीजिए। कहीं पर भी खाद और बीज के नाम से कोई किसान आत्महत्या नहीं किया। निश्चित रूप से कोई बड़ा सूदखोर, किसी बड़े बैंक का वसूली करने वाला परेशान किया होगा तब ऐसी स्थिति बनती है। मैं अभी चुनाव जीतने के 4-6 दिन के बाद घर में था तो एक आदिवासी मेरे पास आया। वह किसी प्राईवेट फर्म से ट्रैक्टर लिया था। उसका एक लाख या 50 हजार रूपये बचा था, उस ट्रेक्टर को वह फर्म वाला खींचकर ले गया। उसके लिए पैसे का इंतजाम करना पड़ा, तब उसका ट्रैक्टर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वापस हुआ। अगर आप उस गहराई तक नहीं जायेंगे तो छत्तीसगढ पर जो सैकडों आत्महत्याओं का कलंक लगा हुआ है वह कलंक आगे भी नहीं धुलेगा। हम बिल्कुल भी नहीं चाहते कि आपके ऊपर यह कलंग लगे। आपने जब वायदा किया है तो उसे निभाने के लिए आपको दिल भी बड़ा रखना पड़ेगा। आप दूसरे खर्च काट दीजिए, आप सारी चीजों को बंद करिये, जो बहुत आवश्यक हो वह करिये लेकिन किसानों के लिए सारा बजट रख दीजिए और एक बार किसान को उसका कर्ज माफ करके उसको शांति से अपना जीवन जीने का अवसर प्रदान करने की जिम्मेदारी आपको आपके वायदों के आधार पर जनता ने दी है। माननीय मुख्यमंत्री जी, आपको जनादेश मिला है, परंतु पंजाब में भी आपकी सरकार है। राहुल जी ने भी पंजाब में माफी की घोषणा की। पंजाब में 90 हजार करोड़ रूपये के आवश्यकता के विरूद्ध अभी तक सिर्फ 3 हजार करोड़ यानी 3 प्रतिशत तक ही वित्तीय प्रावधान किया गया है। यहां भी तीन और चार हजार करोड़ ही है। उसी तरह से कर्नाटक में कर्जमाफी के लिए 45 हजार करोड़ रूपये की जरूरत है लेकिन अब तक वहां सिर्फ 75 करोड़ रूपये ही किसानों में बंट पाया है। और कर्नाटक में आपकी सरकार में तो 52 बिन्दुओं का नियम बना हुआ है। 52 बिन्दु में बताना पड़ेगा कि ऐसा है वैसा है ये है वो है तो वह तो 52 बिन्दु को देखकर ही आत्महत्या करने जा रहा है और वहां आत्महत्याओं का दौर शुरू हो चुका है। इसलिए अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ पिछले 3 साल से अकाल की मार झेल रहा है। इन तीन वर्षों में 40 हजार रू. से ज्यादा का कर्ज किसानों के ऊपर बकाया है और इसके कारण किसानों के बीच भय व्याप्त है। आपसे निवेदन है कि आप बड़ा दिल करिये। आप एक विशेष सत्र बुलवा लीजिए और उस सत्र में सिर्फ कर्ज माफी के लिए बजट रखिये। हम सब आपको समर्थन देंगे क्योंकि इधर भी बैठे हुए लोग कोई किसान विरोधी नहीं हैं। सत्ता में आप बैठे हैं। ये तो प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र की यही तो खूबशूरती है कि जो 15 साल तक वहां बैठ करके बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे, जनता ने उन्हें जनादेश दिया और वे यहां पर बैठकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। जनता ने आपको सरकार बनाने का अवसर दिया, आप वहां पर बैठे हैं लेकिन आप हर बात पर इधर उंगली दिखाकर बचने की कोशिश करेंगे तो याद रखिये, जनता माफ नहीं करेगी। माननीय मरकाम जी, मेरे दल के बारे में बोल रहे थे, मेरे नेता का मजाक उड़ा रहे थे। हॉ, हम चुनाव लड़े, हमारा नया दल बना और इस छत्तीसगढ़ में 14 प्रतिशत वोटों के साथ 7 सदस्यों के विधायक दल का मैं यहां पर नेता बनकर बैठा हूं। आपमें हिम्मत हो तो उसको चुनौती दो। हमारा उतना ही सक्सेस रेट है जितना पार्लियामेंट में कांग्रेस पार्टी का है। वहां 545 में कांग्रेस पार्टी की 44 सीट है और हम 90 सदस्यीय विधानसभा में 07 सदस्यों के दल के साथ यहां का भूगोल बदल दिये। छत्तीसगढ़ के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि छत्तीसगढ़ की विधानसभा में 7 सदस्यों का दल अपने अस्तित्व के साथ यहां पर उपस्थित है। प्रजातंत्र का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। हार और जीत जिन्दगी के दो पहलू हैं। कभी कोई जीतता है तो कभी कोई हारता है। हारने वाले को निराश नहीं होना है, तो जीतने वाले को भी अहंकार में नहीं जीना चाहिए। आपको ईश्वर ने मौका दिया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है, आपको मौका मिला है सेवा करिये। ....

श्री प्रमेश

प्रमेश\08-01-2019\f17\05.25-05.30

श्री धर्मजीत सिंह :- आप एक सत्र बुलावा लीजिए विशेष सत्र में सिर्फ कर्जा माफी के लिए बजट रखिये हम सब आपको समर्थन देंगे। क्योंकि इधर भी बैठे हुए लोग कोई किसान के विरोधी नहीं हैं अध्यक्ष महोदय। सत्ता में आप बैठे हैं। ये तो प्रजातंत्र है अध्यक्ष महोदय, प्रजातंत्र में यही तो खूबसूरती है कि 15 साल तक वहां बैठकर बड़ी बड़ी बात कर रहे थे उन्हें यहां पर जनादेश दिया। यहां पर बैठकर वो अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। आपको जनता ने सरकार बनाने का अवसर दिया आप वहां पर बैठे हैं लेकिन आप हर बात पर इधर ऊंगली दिखाकर बचने की कोशिश करेंगे तो याद रखिए जनता माफ नहीं करेगी। माननीय मरकाम जी बोल रहे थे मेरे दल के बारे में बोल रहे थे । मेरे नेता का मजाक उड़ा रहे थे। हां हम चुनाव लड़े। हमारा नया दल बना और इस छत्तीसगढ़ में 14 प्रतिशत वोट के साथ 7 सदस्यों के विधायक दल का मैं नेता बन करके बैठा हूं। आपमें हिम्मत हो तो उनको चुनौती दो और उतनी सक्सेस रेट हमारा है जितना पार्लियामेंट में कांग्रेस पार्टी का है। 545 में 44 सीट कांग्रेस पार्टी की है और हम 90 की विधानसभा में 7 सदस्यों के दल के साथ यहां का भूगोल बदल दिया अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार हुआ है कि छत्तीसगढ़ की विधानसभा में 7 सदस्यों का दल अपने अस्तित्व के साथ यहां उपस्थित है। प्रजातंत्र में मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। हार और जीत जिंदगी के दो पहलू हैं। कभी कोई जीतता है कभी कोई हारता है। हारने वाले को निराश नहीं होना है तो जीतने वाले को भी अहंकार में नहीं जीना चाहिए। आपको ईश्वर ने मौका दिया है, आपको मौका मिला है सेवा करिये। जब सेवा करेंगे तो जनता आपको खुद पुजेगी। हम पूजे या न पूजे पर जनता आपको पूजेगी। लेकिन अगर कहीं आप जनता से विश्वासघात किये तो याद रखिए जो जनता अर्स से उठा करके फर्स तक पहुंचाती है वही जनता फर्स से निकाल करके अर्स में पटक देती है । मैं कुछ बातें और कहना चाहता हूं। ये सिर्फ कोई किसानों के लिए बजट नहीं है जो हम सिर्फ किसान तक रहें। ये सप्लीमेंट्री बजट अन्य कामों के लिए भी है। शराब के बारे में आपने क्यों कुछ जिक्र नहीं किया। आपका प्रमुख वायदा है कि शराबबंदी होगी। आज भी इनके द्वारा बेचे जा रहे सरकारी दुकानों में जहां तहसीलदार शाम को जा करके पऊवा और गोवा और क्या-क्या होता है उसका हिसाब लेता है। कलेक्टर जा करके वहां हिसाब लेता है। बीच सड़क में शराब की दुकानें लगी हैं। महिलाएं निकल नहीं पा रही हैं। मोटर साइकिल के बीच में अंडे और ठंडे के बीच में शराब की बातलों का इस्तेमाल हो रहा है। उसको बंद करने में आपको क्या पैसा लगता है। आज आदेश कर दीजिए जा करके माननीय मुख्यमंत्री जी की कल से शराब की दुकानों में ताला लटकेगा और उसके बाद आपको जो निर्णय करना है करिये चाहे बेचें, चाहे ठेकेदारों

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

को दीजिए चाहे मत बेचिए ये इस सरकार के विवेक पर छोड़ता हूं। अध्यक्ष महोदय, निकलना हाराम हो गया है। महिलाएं नहीं निकल सकती घर के बाहर गुंडागर्दी करते हैं वहां पीने वाले लोग परंतु आपकी सरकार बनने के 15 दिन बाद भी बिक रहा है सर शराब दुकान वहीं पर क्यों । आपने तो वायदा किया है, माननीय मुख्यमंत्री जी आप बंद करिये न उसमें क्या पैसा लगना है। आप स्टडी टीम भेजिये, आप सर्वे टीम भेजिए, जिस प्रदेश का भी पालिसी आपको अच्छा लगे न लगे आप देखिए ये आपकी चिंता का विषय है। हमारी चिंता का विषय ये है कि इस प्रदेश में शराब की दुकान को आपने बंद करने के लिए कहा है। हमने भी कहा है, इन्होंने भी कहा है तो जब सर्व सम्मति है तो सरकार में शराब की दुकानों पर ताला कल सबेरे जड़ जाना चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय यहां के हमारे मित्र वनमंत्री जी बैठे हैं। जूं के लिए पैसा प्रावधान किया गया है यहां जंगल सफारी के लिए उतने में मंत्री जी मुझे अच्छा लगा कल आप बिलासपुर गये थे। आप जब बिलासपुर गये थे तो मुझे ये सुनकर और अच्छा लगा कि आप कानन पेंडारी गये थे। कानन पेंडारी अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय मथुरा प्रसाद दुबे जब मध्यप्रदेश में वनमंत्री थे उन्होंने उसकी स्थापना की थी। बहुत पुराना जूं है। धीरे-धीरे रफ्ता रफ्ता करते हुए आज वो इस मुकाम पर पहुंचा है। वो इस प्रदेश का बहुत आकर्षण का केन्द्र है। हमारे वन्य प्राणियों की रक्षा का केन्द्र है। जब कोई वन्य प्राणी घायल होता है तो उसको वहां पर ला करके रखते हैं। आपने उसकी दीवार देखी माननीय मंत्री जी उसके चारों तरफ की दीवार जर्जर है अध्यक्ष महोदय, अगर कोई शिकारी उसे हाथ से भी धक्का मारेगा तो जा करके कानन पेंडारी के अंदर घूस सकता है और 23-23 चीतलों की मौत कानन पेंडारी के उस प्रांगण में हुई है तलवार से, ये आपके समय की बात नहीं कह रहा हूं अभी तो आपको 15 दिन ही हुए हैं। ये इनके समय की बात कह रहा हूं। शेर मर गया, यहां बड़ा बड़ा छप रहा है पेपर में यहां का शेर वहां का शेर, अरे ठीक है भई पोस्टर का शेर ठीक है। फटेगा पोस्टर तो निकलेगा हीरो नहीं तो जीरो। लेकिन वहां तो सफेद टाइगर व्याहिट टायगर मर गया आज से 15 दिन पहले क्यों ? नेशनल जू अथारटी ने जो नार्म्स दिये थे उसके मुताबिक जू नहीं बना है। सांप कांटन से शेर मर गया। वहां की व्यवस्था सुधरवाइये, वहां पार्किग मिनट के लिए खाली नहीं रहती है। छोटे-छोटे बच्चे वहां एक्सीडेंट कुछलते हैं, चोट लगती है। वहां पर बहुत सी सरकारी जमीन है, वहां बहुत से प्राइवेट जमीन है। माननीय मंत्री जी आप उसका एक्वायर करिये और रास्ता बदलिये। वहां का बाऊंडरी ठीक कराइये। अध्यक्ष महोदय दो मिनट आप सुन लीजिए न वो तो चलते रहेगा। अध्यक्ष महोदय जी वहां पर भयंकर भ्रष्टाचार मचा हुआ है।

श्रीमती सविता

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सविता\08-01-2019\f18\05.30-05.35

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-माननीय अध्यक्ष महोदय, संकल्प कल ले लीजिए, हमारे पास दो दिन टाईम है। संकल्प कल ले लेंगे, क्योंकि अभी माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण है, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी का भाषण है अगर संकल्प कल ले लेंगे तो भी चलेगा। अभी तो दोनों के भाषण में पर्याप्त समय है।

अध्यक्ष महोदय :- हम विचार करके बतायेंगे।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ.शिवकुमार डहरिया):- यह हो जाएगा। थोड़े ही टाईम का है। छोटा सा संकल्प है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय अग्रवाल जी, स्वल्पाहार की व्यवस्था माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधा अनुसार ग्रहण करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इसके लिए नहीं बोला है कि आप स्वल्पाहार की व्यवस्था कराएं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत ज्वलंत कष्ट बता रहा हूँ। आपके मुख्यमंत्री बनने के बाद अचानकमार टाईगर रिजर्व के अधिकारी इतने तानाशाह हैं कि एक आदिवासी, 5-7 लोगों को पकड़कर, लाकर जेल में बंद कर दिये। मैंने फोन लगाकर पूछा कि अब सरकार बदल गई है, भूपेश जी की सरकार है अभी भी आप किस नशे में हो ? तो उसने मुझे कहा कि ये शिकार खेल रहे थे। मैं बोला कि कहां खेल रहे थे ? वे बोले ये वायर फैलाए थे। मैंने कहा कि अचानकमार के 29 गॉवों में कहीं भी बिजली की लाईन 100-100 किलोमीटर दूर तक नहीं है तो ये कैसे करेंट लगा लेंगे? पर वे जंगल के मालिक हैं वहां के राजा हैं। वहां के आदिवासियों को सांस लेने के लिए भी उनकी ईजाजत की जरूरत होती है। अपने बच्चों का पेट पालने के लिए उनको उनकी अनुमति की जरूरत होती है, उनको बच्चों को पढ़ाने, स्कूल भेजने के लिए भी उनकी अनुमति की जरूरत होती है। प्रजातंत्र के इस सर्वोच्च मंदिर में सरकार यहां हैं या वे अधिकारी लोग हैं ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक अधिकारी से बोला कि इन गरीबों का सिर से जानवर काट लिया जाता है, इसका मुआवजा दो तो उस अधिकारी ने मुझसे बड़ी ढिठता से कहा कि माननीय नेता जी, मैं उस समय विधायक नहीं था। नेता जी हमने ये बीट रखा है ये अगर बीट में वह शेर आएगा तो हम मुआवजा देंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांव के गाय, बैल, बकरी को ये तो नहीं मालूम है कि सरकार के कौन से बीट में जाना है और मुझे कौन से बीट में शेर खाएगा? लेकिन उस गांव के गरीब का क्या होगा ? उसकी पूंजी है, वह भी गरीब है अगर उसका वह बकरा, बैला छिन जाए तो भी आत्महत्या करेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, दुर्ग में लोग गोभी को फेंक रहे हैं। जब भाजपा की सरकार थी तो टमाटर को फेंके, यह आपके पड़ोस में है। आपने इसमें प्रावधान क्यों नहीं किया? आपने फुड पार्क बनाने के लिए क्यों प्रावधान नहीं किया? एग्रो बेस्ड इंडस्ट्री के लिए प्रावधान क्यों नहीं किया? हमारे यहां लोगों को इतना भी अक्ल नहीं है कि टमाटर का सॉस बनाकर बाजार में बेच सके, हमारे यहां इतनी भी बुद्धि नहीं है कि गन्ने का रस निकालकर उसकी सप्लाई कर सकें। अब इस प्रदेश में राख, धक्का और धुँआ देने वाले उद्योगों की जरूरत नहीं है। इस प्रदेश में अगर जरूरत है तो सिर्फ किसान और किसान के आधारित उद्योगों की जरूरत है। क्योंकि अगर हम चाहे तो कितने भी उद्योगों की स्थापना कर लें छत्तीसगढ़ के लोगों को फेफड़े में कैंसर की बीमारी मिलती है। छत्तीसगढ़ के बच्चों को दमा और श्वास की बीमारी मिल रही है। छत्तीसगढ़ के बच्चों को स्वस्थ रखना है और अपनी धरती को साफ सुथरा रखना है तो मैं सरकार से आग्रह करता हूँ कि ये सरकार अपने एग्रो बेस्ड इंडस्ट्रीज की तरफ आगे बढ़े। माननीय अध्यक्ष महोदय, दो बात और कहना है जो आपके भी हित में है दो मिनट सुन लीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय धर्मजीत भईया, आप समर्थन तो कर रहे हैं, लेकिन आगे पीछे करके कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं कोई समर्थन नहीं कर रहा हूँ। मैं बोल रहा हूँ तो ये सब विरोध में बोल रहा हूँ। इसकी व्यवस्था होनी चाहिए।

श्री अमरजीत भगत :- आप जिसके विरोध में बोल रहे हैं वह जा रहे हैं।

(सदन से माननीय सदस्य डॉ. रमन सिंह जी के बाहर जाने पर)

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं उनके विरोध में भी तो बोला हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मौसम आधारित फसल बीमा 7-7 बीमा कंपनियों को 10 हजार करोड़ रूपये के ऊपर दिया गया। ये बीमा कितना दिये ? 12 आना, 12 रूपया, 8 रूपया, साढ़े 3 रूपया। क्या है ?

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- ये 12 आना देने वाले उधर हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- दादी ये बुद्धि की बात है। मैं उधर बता रहा हूँ। थोड़ा आप समझिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दादी जो है सुबह से अभी आ रहे हैं। दिन भर अपना काम, मस्त होकर आ रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा ये निवेदन है कि जब किसानों की बात हो रही है। आत्महत्या की बात हो रही है तो ये बीमा कंपनी वाले कौन हैं ? कृषि मंत्री जी आप देखेंगे। इन बीमा वालों को बोल दीजिए कि 3 रूपया, 10 रूपया, 5 रूपया वाला बीमा नहीं चलेगा। जब थोड़ा सा भी हो तो ठीक ठाक मिलना चाहिए। ये तो सत्ता के संरक्षण में ....

जारी श्री चौधरी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चौधरी\08-01-2019\f19\05.35-05.40

पूर्व जारी.. श्री धर्मजीत सिंह :- जब थोड़ा सा भी हो तो ठीक-ठाक मिलना चाहिए। यह तो सत्ता के संरक्षण में पैसा खाकर भग गये। गरीब किसान मर रहा है।

श्री अमरजीत भगत :- यह सब गड़बड़ी तो बृजमोहन भैया की सरकार ने किया था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी थोडे दिन देखो, सरकार कैसे चलती है, मालूम पड़ेगा। हमने बीमे का 16 लाख रुपये भी दिया है।

श्री अमरजीत भगत :- दो-दो, तीन-तीन रुपये की बात कर रहे हैं, उसकी बात कर रहा हूं कि आपकी सरकार ने किया था।

श्री धर्मजीत सिंह :- ऐसा मिला है, मेरे पास प्रमाण है, इसलिए बोल रहा हूं। मैं बिना प्रमाण के बात नहीं करता। माननीय अध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ में गणेश देवता पधार चुके हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है आप थोड़ा मुख्यमंत्री जी से सीखो, वह अभी गंभीर हो गये या नहीं ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- हम लोग सुबह आपकी गंभीरता को देख रहे थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, एक मिनट और दे दीजिए। हाथी की समस्या बहुत विकराल है। अभी माननीय वन मंत्री जी से व्यक्तिगत रूप से चर्चा हो रही थी, बहुत प्रारंभिक और थोड़ी सी चर्चा हुई। हाथी जिधर निकल रहा है, चौपट कर रहा है। आप यहां एलीफेन्ट कारीडोर की मांग करते थे। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- हाथी तो आपका ही पार्टनर था।

श्री धर्मजीत सिंह :- पंडित जी, वह तो मैंने अभी आपको बताया, अब आप लोगों के भाग्य से सीका टूट गया, इसलिए आप इतरा रहे हो, नहीं तो बताते कि हाथी कितना शक्तिशाली थी। माननीय अध्यक्ष जी, हाथी कारीडोर की स्थापना होनी चाहिए। उसमें अगर कोई खदान के लिए एम.ओ.यू. हुआ हो, एन.ओ.सी. दिया गया हो तो उसको तत्काल रद्द किया जाना चाहिए। कोयले की खदान के कारण हमारे खूंटाघाट में पानी नहीं भर रहा है। हमारे लिये कोयला जरूरी नहीं है, कोई खदान जरूरी नहीं है, हमारे खेत की प्यास बुझनी चाहिए, यह जरूरी है। हमारे बच्चों की प्यास बुझनी चाहिए। अंत में एक और बात कहते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा। धान खरीदी की 15 क्विंटल की लिमिट हटा दीजिए। बिलासपुर, जगदलपुर, अंबिकापुर की हवाई सेवा के बारे में आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। बिलासपुर के कलेक्टर को 28 बार हाईकोर्ट और सबने कहा, पता नहीं वह कैसा सिविल एवियेशन डिपार्टमेण्ट का असफर है, बिलासपुर में कैसे अधिकारी हैं, न तो वह पूरा एक बार में बताते हैं कि क्या-

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्या चाहिए और न ये पूरा एक बार में पूछते हैं। आये दिन अखबार में पढ़ते हैं, अभी तीन काम बाकी हैं, अभी दो महीना, तीन महीना लगेगा, सरकार चल रही है या यह मछलीबाजार है ? बिलासपुर को हवाई सेवा से जोड़ना बहुत जरूरी है। बिलासपुर, रायपुर नेशनल हाईवे बदतर स्थिति में है। हम वहां से आते हैं, वहां सारे लोगों का आवागमन दूभर हो गया है। माननीय मुख्यमंत्री जी, हवाई सेवा से जोड़ने का काम, नेशनल हाईवे के वहां के ठेकेदारों से बात करिये, बिलासपुर, जगदलपुर और अंबिकापुर की हवाई सेवा को देखिये। माननीय मुख्यमंत्री जी मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रदेश का किसान चाहे वह मछली पालन, मुर्गीपालन, अंडापालन वाला किसान हो, चाहे वह गोभी, टमाटर पैदा करना किसान हो, सभी लोगों के हितों की रक्षा में एक नियम बना दीजिए, जो-जो सूदखोर पैसा दिये हैं, किसी को वापिस नहीं करना है। आपका क्या लगना है, आपको नियम ही तो बनाना है। आप नियम बना दीजिए और किसानों को सुदखोरों से मुक्त बना दीजिए। माननीय मुख्यमंत्री जी मैं आशा करता हूं कि मेरी बात को आप जरूर सुन रहे थे और इस पर आप अमल करेंगे। आपके इस सप्लीमेन्ट्री बजट का 15 प्रतिशत समर्थन करते हुए 85 प्रतिशत विरोध कर रहा हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\g10\05.40-05.45

अध्यक्ष महोदय :- आदरणीय कौशिक जी ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार का हम प्रथम बजट कह सकते हैं या वैसे तृतीय अनुपूरक 2018-19 का जिसे वित्त मंत्री जी के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि इस बजट का आप कुल मिलाकर यदि आकार देखेंगे तो लगभग 1 लाख करोड़ से ऊपर का हो गया है । यदि इसका समावेश देखेंगे तो मुख्य रूप से यह 3-4 बिंदुओं पर फोकस है और इन 3-4 बिंदुओं पर जो फोकस है। हम एक यह कह सकते हैं कि जन घोषणा पत्र उसकी पूर्ति के लिये यह बजट लाया गया है, शुरूआत की गयी है । बजट लाया गया है और यह जो बजट लाया गया है तो मुझे लगा कि शायद किसानों को इससे लाभ मिलेगा, किसानों को जो बड़े-बडे....।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- हमारी राज्य सरकार ने घोषणा पत्र के हिसाब से पहली बार ऐसा बजट लाया है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़े-बड़े जो सब्जबाग दिखाये गये, लोगों में बड़ी-बड़ी जो अपेक्षायें जगायी गयीं और लोगों के सामने ऐसा प्रस्तुत किया गया कि शायद इस सरकार के आने से उनके जीवन में तब्दीली आ जायेगी, परिस्थितियों में तब्दीली आ जायेगी लेकिन इस तृतीय

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अनुपूरक को देखने के बाद में लोगों के मन में निश्चित रूप से हताशा है । मुख्यमंत्री जी को थोड़ा सा और बडा दिल करना चाहिए । जब किसानों की बात आती है तो जिस प्रकार से कर्जा माफ और एक लाईन पर लोगों ने जो मतदान किया उस मतदान करने के बाद में आज जिस प्रकार से यह अनुपूरक प्रस्तुत की गयी है कहीं यह दिखायी नहीं दे रहा है कि उनके सपने पूरे होने वाले हैं । जिस बात का उल्लेख माननीय सदस्य ने किया कि 4 लाईन का जो आदेश जारी हुआ और यह आदेश जारी होने के बाद में लोगों की जो अपेक्षायें थीं, लोगों की जो कल्पनायें थी उन कल्पनाओं के आधार पर जो पूरी होनी चाहिए इस अनुपूरक में दूर-दूर तक कहीं दिखायी नहीं दे रहा है । वैसे तो हम यह कह सकते हैं कि पूरे यदि 15 साल में देखें तो यह अनुपूरक का यह सबसे बडे 10 हजार करोड का बजट है ।

श्री कवासी लखमा :- किसानों का ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों का नहीं, 10 हजार करोड़ का बजट है । इस 10 हजार करोड का बजट आने के बाद भी हम कहां पर खड़े हुए हैं । आपने उस आदेश में अल्पकालीन कुछ लोगों को 16 लाख लोगों को गिना दिया तो क्या इस प्रदेश में कुल 16 लाख किसान ही हैं यहां पर ? और केवल 16 लाख किसानों का कर्ज माफ होना चाहिए और वह किस प्रकार का कर्ज माफ होना चाहिए ? हमारे जो किसान कृषि से संबंधित जो कर्जा लेते हैं वह एक अल्पकालीन हमारे कर्ज हैं, मध्यमकालीन कर्ज हैं, दीर्घकालीन कर्जा है । आपने इसमें केवल एक अल्पकालीन का लिमिटेड हमारे सीमित किसानों के लिये एक नाममात्र का रखा । आपने उसमें केवल ग्रामीण बैंक और सहकारी बैंक की बात की । क्या राष्ट्रीयकृत बैंक के जो किसान कर्जा लिये हैं वह किसान नहीं हैं, क्या वह जो कर्जा लिये हैं उन कर्जे के ऊपर ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, जो कर्जे की परिभाषा है वह दिल्ली से आयी है क्योंकि दिल्ली ने घोषणा की थी 10 दिन की तो उसकी परिभाषा भी दिल्ली से आयी है ।

श्री कवासी लखमा :- इस्तीफा देने वाले क्या बात करेंगे, आप यह बताईये कि कब इस्तीफा देंगे ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप जब खड़े होते हैं शाम को तो हम जान जाते हैं कि माननीय आबकारी मंत्री बोल रहे हैं, समझ जाते हैं ।

श्री कवासी लखमा :- सब देख रहे हैं कि आप कब इस्तीफा देंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस अनुपूरक में इस बात का मैं यह चाहूंगा कि मुख्यमंत्री जी से जवाब आये कि अभी तक किसानों के आज के वर्तमान परिस्थिति में कृषि से संबंधित, बाकी कर्ज की मैं बात नहीं करता लेकिन कृषि से संबंधित कुल मिलाकर कितने कर्जे आज छत्तीसगढ़ के किसानों के ऊपर हैं । यह जो कर्जे हैं क्या उसका अनुमान लगाया गया और इस कर्जे में यदि हम देंगे तो टोटल कितनी राशि की आवश्यकता पडेगी, यह राशि आप कब तक के किसानों को दे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

देंगे, उनके खाते में डाल देंगे, उनको प्रमाण-पत्र आप जारी कर देंगे और प्रमाण-पत्र जारी करने के बाद क्या हमारे किसान आपके वायदे के अनुसार हमारे किसान ऋण से मुक्त हो जायेंगे । मुझे लगता है आज इस बात की आवश्यकता है कि छत्तीसगढ के टोटल किसानों के ऊपर जो कर्जे हैं वह कर्जे कितने हैं उसकी बात आनी चाहिए, वह कर्जे कब तक माफ होंगे उसकी बात आनी चाहिए और वह कर्जे किस प्रकार से कब-कब उनके यानी उनको पैसा जमा करके उनके हाथ में प्रमाण-पत्र आ जाये यह बात आनी चाहिए तो मुझे लगता है यह किसानों के हित में हम कह सकते हैं लेकिन जिस प्रकार से इसमें केवल एक जो ऊंट के मुंह में जीरा कि केवल अल्पकालीन ऋण की बात करके यदि हम यह सोचते हैं

..........जारी

कुरैशी\08-01-2019\g11\05.45-05.50

जारी..................श्री धरमलाल कौशिक :- और उन कर्जों की राशि जमा करके, उनके हाथों में कब तक प्रमाणपत्र आ जाएगा, ये बातें आ जाएं तो मुझे लगता है कि इसे हम किसानों के हित में कह सकते हैं । लेकिन जिस प्रकार से इसमें केवल एक ही तरह के कर्ज का उल्लेख है । इसे ऊंट के मुंह में जीरा कह सकते हैं । हम केवल अल्पकालिक ऋण की बात करके हम यह सोचते हैं कि हमने कार्य पूर्ण कर दिया । जैसा कि माननीय सदस्य इस बात को कह रहे थे कि किसानों का कर्ज माफ हुआ, किसानों का कर्ज माफ हुआ, वास्तव में आज किसानों का कर्ज कहीं माफ नहीं हुआ है ।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी, एक लाईन में बताइए, किसानों का कर्ज माफ होना चाहिए या नहीं होना चाहिए ?

श्री धरमलाल कौशिक :- हम किसानों के विरोधी नहीं हैं ।

श्री कवासी लखमा :- उद्योगपतियों का होना चाहिए क्या ?15 सालों में आपने जो किया, उसे हम लोग भुगत रहे हैं, 15 सालों में आपने किसी किसान का कर्ज माफ किया है क्या ?

डॉ. शिव डहरिया :- आपने तो संकल्प पत्र जारी किया था । उसमें आपने 2003 में कहा था कि किसानों का कर्ज माफ करेंगे । लेकिन आपने तो 15 साल में एक रूपया भी माफ नहीं किया, माननीय नेता जी । उसका भी उल्लेख कर दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- सब समय का ध्यान रखें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट, जितना बोलना है बोलिए । अभी माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण होने वाला है, ध्यान रखना । हमसे पार नहीं पाओगे ।

डॉ. शिव डहरिया :- ताली बजाने का काम करना ।

श्री अमरजीत भगत :- यह तो सीधा-सीधा धमकाने वाली बात है ।

श्री कवासी लखमा :- धमकी दे देकर तो यह हाल हो गया । अभी फिर से धमकी दे रहे हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- जितना करना है, कर लो ।

श्री कवासी लखमा :- क्या कर लो ? आपने तो इस्तीफा देने की बात की थी, लेकिन दिया नहीं ।

अध्यक्ष महोदय :- नेता प्रतिपक्ष आप कृपया अपनी बात समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा, आबकारी विभाग की सेवा मिल गई क्या ? आबकारी विभाग की सेवा मिली या नहीं मिली ?

डॉ. शिव डहरिया :- आपको भी चाहिए क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अजय जी, पूर्व संसदीय कार्यमंत्री हैं । बेहद वरिष्ठ सदस्य हैं । ये धमकी की भाषा ? क्या कह रहे हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने हाऊस में तो किसी को धमकी नहीं दी । मैंने केवल इतना ही कहा कि इसके बाद सीएम का भाषण होना है, आप जितना करना है कर लो । इसमें कौन सी धमकी हुई ?

श्री रविन्द्र चौबे :- सदन के नेता होते हैं, नेता प्रतिपक्ष होते हैं और यह हमारी परम्परा है । आप भी इधर बैठे हैं और आपके कर्मों ने आपको उधर बिठाया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- देखो, सदन के नेता बनकर कितनी गंभीरता आ गई है।

श्री रविन्द्र चौबे :- यह जनादेश है । इतना हताश और निराश मत होइए । आप इस बात को स्वीकार करिये । आज भूपेश बघेल जी सदन के नेता हैं । आज आदरणीय धरम कौशिक जी बोल रहे हैं ना, वे नेता प्रतिपक्ष हैं और हमारी मान्य परमपरा है । आप, बृजमोहन जी और शिवरतन जी, आप ये सारी भाषा छोड़ दीजिए, थोड़े दिन सब्र कीजिए, धैर्य रखिये । कुछ तो सुनना भी पड़ेगा ना । अभी तो शुरूआत हुई है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल सुनेंगे । आप बोल लीजिए, फिर मैं बोलता हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- ये तृतीय अनुपूरक है । तत्कालीन मुख्यमंत्री आदरणीय डॉ. रमन सिंह जी ने शुरू किया । आपने कह दिया कि सारी जन-घोषणा पत्र का उल्लेख इसमें नहीं किया। सारे कर्जे की बात आपने नहीं की । अरे, यह तृतीय अनुपूरक है, शुरूआत है । आप इंतजार तो करिये, आएगा, सारी बातों का जवाब आएगा ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- चौबे जी, इसे कहते हैं दाल-भात में मूसलचंद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, मैंने यह बिल्कुल नहीं कहा कि हम नहीं सुनेंगे । मैंने यह बिल्कुल नहीं कहा कि हम जनादेश का अपमान करते हैं । हम जनादेश को स्वीकार करते हैं । मैंने यह भी कहा कि हम 15 सालों में अपने तेवर नहीं भूले हैं । मैंने केवल इतनी बात कही

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कि नेता प्रतिपक्ष जी जब बोल रहे हैं और माननीय मंत्री बार-बार खड़े हो रहे हैं, मैंने केवल इतना ही कहा कि अभी थोड़ी देर में माननीय मुख्यमंत्री जी का भाषण होना है, आप यह ध्यान रखिएगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आदरणीय, आदरणीय नेता प्रतिपक्ष का जितना सम्मान आप कर रहे हैं ना उससे ज्यादा सम्मान हम कर रहे हैं । आप सुनिये तो वे क्या कह रहे हैं उसको ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इनका भाषण करवा दीजिए, सब मामला खत्म हो जाएगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- उधर समझा दीजिए ना ।

श्री रविन्द्र चौबे :- इधर भी और उधर भी ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, कौशिक जी ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जिस बात का उल्लेख कर रहाथा । जिस बात को लेकर ये चुनाव में जीतकर आए । जीतकर आने के बाद लोगों की अपेक्षाएं और आकांक्षाएं थीं, इस अनुपूरक के आने के बाद निराशा का भाव उत्पन्न हुआ । इसलिए मैंने कहा कि आज के समय में यह बात .....

---जारी- श्री ठाकुर-

ठाकुर\08-01-2019\g12\06.50-06.55

जारी........श्री धरमलाल कौशिक :- निराशा का भाव एक उत्पन्न हुआ इसलिए मैंने कहा कि आज के समय में ये बात स्पष्ट होनी चाहिए और आनी चाहिए कि जो भी बैंक हैं और जिस भी किसान के जैसे भी कर्जे हैं। क्या एक बार पूरे उस बात को लेकर के हम आगे बढ़ सकते हैं और आगे बढ़ने के बाद में उसका किसान उऋण हो जाए उसको प्रमाण पत्र मिल जाए। लेकिन इस बजट को देखने के बाद मैंने कहा कि आज कहीं पर उस बात की जो कल्पना लोगों ने की हैं जो हम लोगों ने देखा है, कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है और इसलिए जो धान खरीदी की जो बात आई है आज पूरे सोसाइटी में आप जाकर के देखेंगे। जिस प्रकार की अव्यवस्था सोसाइटियों में दिखाई दे रही है धान पूरा जाम पड़े हुए हैं। धान को उठाने वाले नहीं हैं। बोरी उपलब्ध नहीं है और उसके साथ में जो किसान परेशान हो रहे हैं अधिकारियों के चक्कर लगा रहे हैं और अधिकारियों के चक्कर लगाने के बाद भी अभी तक जो स्थिति है, मुझे लगता है कि उस स्थिति में यदि नियंत्रण नहीं करें तो निश्चत रूप से किसानों के नुकसान हो रहे हैं और उसके फसल की भी। हम जो देखें अभी जो बारिश हुई उस बारिश के कारण जो किसान के धान खलिहान में, किसान के धान खेत में, किसान के धान सोसाइटी में तौल किये हुये, बिना तौल किये हुये, उस समय हम लोगों ने उसका आकलन करने का कि उसकी तत्काल आकलन होनी चाहिए और आकलन

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

होने के बाद में उसकी भरपाई होनी चाहिए लेकिन आज तक किसानों से बातचीत करने के बाद में एक भी अधिकारी जाकर के उसका सर्वे का काम भी प्रारंभ नहीं किया है। आज भी धान खेतों में लोगों के पड़े हुए हैं और ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से जहां किसानों के हितों की बात होती है आज किसान परेशान हैं और ऐसे किसान जो आर्थिक रूप से भी उसका जो क्षति है उसका भरपाई हो सके, इसके लिए उसे तत्काल कार्यवाही करने की आवश्यकता है ऐसा मैं महसूस करता हूं। उसके साथ ही साथ में हम देखेंगे कि बहुत सारे कि आपने जो जज्बात दिखाये हैं बोनस। मैं तो देख रहा था उसमें लेकिन सप्लीमेंट्री में कहीं भी एक रूपये पैसे का बोनस की बात नहीं आ रही है। यदि हम उसका आकलन करेंगे पिछले धान खरीदी का तो मुझे लगता है कि उस धान खरीदी में जो बोनस की बातें आयी हैं, यदि उसको निकालते हैं तो उस बोनस में किसानों का लगभग 2100-2100 करोड़ रूपए और 2 साल का हम देंगे तो 4200 रूपए किसानों को बोनस मिलने चाहिए। इस सप्लीमेंट्री में कहीं उसका उल्लेख नहीं उस बोनस के बात की। मुझे लगा कि शायद उसके बोनस की बात का यदि किसानों को मिलेगा तो निश्चित रूप से जिस प्रकार से लोगों ने इस बात को स्वीकार किया कि हमको बोनस मिलेगी लेकिन किसान को निराशा ही हाथ लगी है। ये उदाहरण ठीक दे रहे हैं कि आप पंजाब के किसान का जहां पर कांग्रेस की सरकार है कर्जा माफी के नाप पर उनको बांड पकड़ा दिया गया। कर्नाटक में देख रहे हैं किसान सड़कों पर निकले हुए हैं। मध्यप्रदेश ने स्पष्ट कर दिया कि 2 लाख रूपए तक का हम उनके माफ करेंगे लेकिन छत्तीसगढ़ में आज अभी तारीख तक अभी समय तक स्थिति स्पष्ट नहीं है कि कितने कर्जे माफ होंगे कौन से कर्जे माफ होंगे और कहां होंगे यदि वो ये समझते हैं कि जो 4 लाइन का आदेश है और यही लाइन परिपूर्ण है तो निश्चित रूप से किसानों के साथ में ये धोखा है। किसानों के साथ में ये छलावा है और इसलिए स्पष्ट होनी चाहिए कि किसानों के ये जो हैं किस प्रकार से जो मध्यप्रदेश या बाकी जो प्रदेश हैं तो हम छत्तीसगढ़ में किस दिशा में जा रहे हैं और उस दिशा में जाकर के कहां पर हम खड़े हुए हैं इस बात की स्पष्टता होनी चाहिए। इसके साथ ही साथ में आज यहां पर मैं देख रहा था कि बहुत सारे हमारे युवा साथी जो बेरोजगार हैं, बेरोजगारी भत्ता को लेकर के उनके मन में एक आश जग गई ये आश जगाई गई कि सरकार आएगी तो हम उनको 2500 रूपए प्रति महीने के हिसाब से देंगे और 2500 रूपए यदि प्रति महीने के हिसाब से उनको देंगे तो उनके लिए जो साल भर के जो उनके लिए बजट की राशि लगभग 3 हजार करोड़ रूपए के आसपास है। लेकिन कहीं उल्लेख नहीं होने से निश्चित रूप से उनके मन में एक हताशा है। केवल इतना ही नहीं ।

..........जारी श्री अरविंद

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अरविंद\08-01-2019\g13\05.55-05.60

.........जारी श्री धरम लाल कौशिक :- केवल इतना ही नहीं, मैं सारी जन घोषणा-पत्र की बात नहीं करूंगा कि आप उसको लागू करें। आपको जब लागू करना हो, लागू करें। लेकिन जिन बातों को लेकर आपने उल्लेख किया और लोगों के मन में आकांक्षाएं जगाई, आज वह कहीं पर भी दिखाई नहीं दे रहा है कि उसको लागू कर पाने में यह सरकार सक्षम है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से आपके आदेश जारी हुए, उसमें आपके सड़कों के काम चल रहे है, वे आधे-अधूरे हैं, आपके पुलियें आधे-अधूरे बने हुए हैं, गांवों में पंचायतों के काम चल रहे हैं। उसमें लोगों को रोजगार मिल रहा है। आज सिथति यह हो गई है कि एक आदेश के बाद वहां अधिकारी बता दिए कि पैसा वापिस करना है, सारे काम ठप्प हो गए हैं। काम ठप्प होने के बाद गांवों में जो स्थिति निर्मित हो रही है,उसमें जिनके काम चल रहे हैं, वे भी बेरोजगार हो गए हैं। लोगों के बेरोजगार होने के बाद उनका पलायन जारी हो गया है। मनरेगा के काम जहां दिखाई देने चाहिए, वहां मनरेगा के काम भी लगभग बंद है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि हम उनको रोजगार नहीं दे पा रहे हैं, हम उनको भत्तें नहीं दे पा रहे हैं, यदि हम उनको काम नहीं दे पा रहे हैं तो प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकार ने पलायन को रोकने का जो प्रयास किया, स्थानीय स्तर पर काम देने का प्रयास किया, एक आदेश के बाद सारे जगह ये काम ठप्प हो गए हैं। मैं बोलता हूँ कि मान लीजिये इसको बंद रखेंगे तो आधे-अधूरे जो काम हैं, उसमें आपके पैसे का कोई सदुपयोग होगा, न लोगों की सुविधा की दृष्टि से उस काम का जो कर रहे हैं, उसका उपयोग होने वाला है। इसलिए इन सारी चीजों की पूर्ति कैसे करेंगे।यदि उन केवल उन कामों को रोककर उसकी प्रतिपूर्ति करना चाहते हैं, तो मुझे लगता है कि कोई न कोई ऐसा आय का स्त्रोत बनाने की आवश्यकता पड़ेगी। हम बजट में जो दे रहे हैं, उसमें काम का रूकावट भी न हो, काम जारी रहे इसके साथ ही साथ इसकी प्रतिपूर्ति का स्त्रोत इसमें बनायें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप देखेंगे कि हमारे बहुत सारे एरिये ट्राइबल हैं। सरगुजा से लेकर बस्तर तक। वहां की बहुत सारी योजनाओं के काम आज से नहीं पूर्ववर्ती सरकार के समय से चल रही है, निश्चित रूप से समय की आवश्यकता भी है और उस क्षेत्र की आवश्यकता भी है वहां का कार्य प्रभावित न हो। वहां की सामाजिक सरंचना ऐसी है, उसके हिसाब से वे कार्य जारी रहने चाहिए। वह प्रभावित होने के बाद खुद वहां के लोग प्रभावित होंगे। मुझे ऐसी आशा है कि ये सारे जो हमारे दूरस्थ क्षेत्र हैं, ऐसे दूरस्थ क्षेत्रों का काम रोकने से क्षेत्रों में जो प्रभाव-कुप्रभाव पड़ेगा, इसलिए वह आबाद गति से चले, उसमें किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो, इस बात की चिंता करने की आवश्यकता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बहुत सारे लोग पेंशन की आस लगाए बैठे हैं कि हमको नई पेंशन मिलने वाली है। चाहे वे 60 साल के उम्र के हों, चाहे 75 साल के उम्र के हों। जिनके लिए एक हजार से लेकर डेढ़ हजार रूपये तक की बात है, इसको देखने से पता चलता है कि इसमें कहीं पर भी उल्लेख नहीं है। इसलिए मैं ऐसा समझता हूँकि सरकार बनने के बाद सरकार की जन घोषणा-पत्र के लिए उनके कथनी और करनी में जो अंतर है, वह आज के बजट से ही दिखाई देना शुरू हो गया है। ये क्या करने वाले हैं, क्या करने वाले नहीं हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि उसका अक्षरश: पालन हो, अक्षरश: पालन करते हुए उसका सारा क्रियान्वयन हो। एक तरफ बजट में मुख्यमंत्री जी के द्वारा पैसे की मांग की गई है और दूसरे तरफ उसके क्रियान्वयन की बारी आती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहूंगा कि उसका ठीक से क्रियान्वयन हो। जिनको लाभ मिलना हो, उनको समय पर लाभ पहुंचे, अविलम्ब पहुंच सके। तब बजट में उस पैसे को देने का फायदा है। उस पैसे को बजट में देने के बाद भी यदि उन तक राशि नहीं पहुंच पा रही है तो इसका कोई लाभ होने वाला नहीं है। आज इस अवसर पर जहां तक किसानों की बात है, निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ में जो हालात रहे हैं

................जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\g14\6.00-05

समय :

6:00 बजे

जारी...श्री धरम लाल कौशिक :- जहां तक किसानों की बात है तो निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ में जो पहले हालत रहे हैं, उससे किसानों की स्थिति में सुधार हुआ है और किसानों की स्थिति में सुधार करने के लगातार प्रयास किए गए, लेकिन जिस प्रकार से वर्तमान स्थिति में उनकी आवश्यकता और इन सारी चीजों की जो अपेक्षाएं हैं, वह मुझे नहीं लगता कि इस सरकार के माध्यम से, इस बजट के माध्यम से वह हमको दिखाई दे और संभव हो। आज इस अवसर पर डा. रमन सिंह जी के कार्यकाल में चाहे ब्याज से लेकर हमने देखा है कि 16-17 प्रतिशत से लेकर यदि किसी ने कमी करने का काम किया है तो डॉ. रमन सिंह जी के द्वारा किया गया है । जीरों परसेंट में लाकर खड़े किये हैं और इसलिए बिल्कुल ठीक बात है कि हम केवल खाद और बीज की राशि का इससे हमारा मामला बनने वाला नहीं है इसलिए मैंने कहा कि विस्तार से आज की स्थिति में, वर्तमान स्थिति में इन सारी बातों का अवलोकन होना चाहिए, आंकलन होना चाहिए और उसके अनुसार से जब उनके कर्जे माफ होंगे, तब हम किसानों के कर्जे माफी की बात करें, नहीं तो वाहवाही लूटने के लिए पहले भी नारे दिए गए हैं, लेकिन वायदे से कैसे मुकरते हैं, वह आज के बजट में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, आज के इस अवसर पर आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी । (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले तो आपको बधाई साहब। आप पहला भाषण माननीय मुख्यमंत्री जी के तौर पर दे रहे हैं और आपने बड़ा अपेक्षित अनुपूरक पेश किया है तो सुनने की बड़ी उत्सुकता है । आपको मेड इन स्पीच कह लेता हूं एज ए मुख्यमंत्री । तो बड़ी अपेक्षा वाली बात है न, जंतर-मंतर वाली नहीं होनी चाहिए ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- बहुत-बहुत धन्यवाद । माननीय अध्यक्ष महोदय, तृतीय अनुपूरक की चर्चा में भाग लेने वाले डॉ. रमन सिंह, माननीय सत्यनारायण शर्मा जी, डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी, माननीय अमरजीत भगत जी, माननीय सौरभ सिंह जी, माननीय बृहस्पत सिंह जी, माननीय देवव्रत सिंह जी, माननीय दीपक बैज जी, माननीय भीमा मण्डावी जी, माननीय मोहन मरकाम जी, माननीय डमरूधर पुजारी जी, माननीय दलेश्वर साहू जी, माननीय केशव चन्द्रा जी, माननीया श्रीमती ममता चन्द्राकर जी, माननीय रामकुमार यादव जी, माननीया श्रीमती रश्मि आशीष सिंह जी, माननीय विनोद चन्द्राकर जी, माननीय रेखचंद जैन जी, माननीय कुंवर सिंह निषाद जी, माननीय प्रकाश शक्राजीत नायक जी, माननीय धर्मजीत सिंह जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक जी ने भाग लिया, मैं सभी को धन्यवाद देता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबकी बात सुन रहा था और विपक्ष के साथियों की बात थोड़ा सा गौर से सुन रहा था । उम्मीद थी कि शायद पश्चाताप के कुछ शब्द निकलेंगे, जिसके कारण इस गति को प्राप्त हुए हैं, लेकिन दुर्भाग्य है कि ऐसा नहीं हुआ । तेवर अब भी वैसे ही हैं, जिसके कारण से ये गति प्राप्त हुई है । मुझे देखकर बड़ा अचरज भी हुआ कि 13 साल के वित्त मंत्री और 15 साल के मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह जी के तेवर आज भी वैसे ही थे । हमारी सरकार बने अभी मुश्किल से 20 दिन हुए हैं और आज 20 दिनों में इतने सारे सवाल, घोषणा-पत्र कब पूरे होंगे, कैसे पूरे होंगे । धीरज रखिए, 20 दिन में घोषणा-पत्र के 9-10 बिन्दुओं को हमने पूरा कर लिया है, बाकी भी पूरा करेंगे, धीरज तो रखिए । (मेजों की थपथपाहट) अभी तो हमने आपकी फाईलों की थोड़ी सी धूल हटाने की कोशिश की है, बहुत धूल जमी है, थोड़ा सा झड़ाया है तो बहुत चीख, पुकार निकल रहे हैं । हमने थोड़े से धूल हटाए हैं और खूब चीख-पुकार ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\g15\06.05-06.10

जारी...श्री भूपेश बघेल :- अभी तो हमने फाइलों से थोड़ी धुल हटाने की कोशिश की है । बहुत घूल जमी है, थोड़ा सा झड़ाया, अध्यक्ष महोदय बहुत चीख-पुकार निकल रही है । हमने थोडे से धूल हटाये हैं और खूब चीख-पुकार ? लोकतंत्र का कैसे गला घोंटा गया है, वह 15 वर्षों में हमने देखा है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय, मैं तो यह सुनकर दंग रह गया, मीडिया के साथी हमारे बैठे हैं, एक मीडिया कैसे 15 चैनल्स का नियंत्रण कर रहा था ? उसके एवज में जनसंपर्क विभाग से करोड़ों रूपये वसूलता था । आप मीडिया की मानिटरिंग करवा रहे थे । आप जनसंपर्क विभाग के पैसे से स्टिंग आपरेशन करवा रहे थे । आप पत्रकारों का स्टिंग आपरेशन करवा रहे थे । सरकारी धन का इस प्रकार से दुरूपयोग ? आपने विज्ञापन के लिए पैसा तो लिया, लेकिन काम कर रहे थे साजिश की ? पैसे खर्च कर रहे थे साजिश के लिए ? ये सरकारी अधिकारियों को आपने षड़यंत्रकारियों के रूप में बदल दिया ? अधिकारी हैं, जनसेवा के लिए है, प्रजातंत्र का एक स्तंभ है । उसका उपयोग आपने षड़यंत्रकारियों के रूप में किया ? अध्यक्ष महोदय, रमन सिंह जी ने चुनौतियों की बात कही है । हमारे सामने निश्चित रूप से बहुत सारी चुनौतियां है । उन चुनौतियों का हमको सामना करना है । हम कोई जुमलेबाज नहीं है । जुमलेबाजी आपके नेता लोग करते होंगे । (मेजों की थपथपाहट) आपने किया होगा । (मेजों की थपथपाहट) लेकिन जो वादें हमने किये हैं, हम उसे पूरा करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय, हम किसानों, गरीबों, आदिवासियों, अनुसूचित जाति, जन जाति के लोगों के लिए काम करने आये हैं । अध्यक्ष महोदय, हम खदानों के स्टाम्प डयूटी माफ करने नहीं आये हैं । सैकड़ों करोड़ रूपया स्टाम्प डयूटी का आपने माफ कर दिया । आपने छत्तीसगढ़ के गरीब जनता के हितों का ध्यान नहीं रखा । अध्यक्ष महोदय, सीनाजोरी के लिए बड़ी कहावतें हैं । इस कहावत के पहले सत्र के बारे में चर्चा नहीं करूंगा । वक्त आयेगा तो उसकी भी चर्चा हम लोग करेंगे, लेकिन गजब की सीनाजोरी की मुद्रा में दिखाई पड़ रहे हैं । पहला लाईन है, उसके बारे में निश्चित रूप से बाद में चर्चा करूंगा । आप 20 दिनों में मुझसे शराबबंदी के बारे में पूछ रहे हैं । लेकिन इसी राज्य में आपके ही कैबिनेट में 15 सौ करोड़ के कमीशनखोरी की बात हो रही थी । किसके खाते में जायेगी ? माननीय अध्यक्ष महोदय, शराब नीति आपने बनाई । समिति आपने बनाया । अध्ययन दल आपने भेजा और रिपोर्ट क्या दे रहे हैं और काऊंटर बढ़ाया जाना चाहिये । वाईन की, बीयर की, यह आपकी शराब नीति है । आप कहते रहे कि हमारा उद्‌येश्य शराबबंदी का है, हम धीरे-धीरे कम कर रहे हैं । आपका रिपोर्ट क्या आ रहा है । हम काऊंटर बढ़ायेंगे । इससे आप शराबबंदी करने वाले हैं । अध्यक्ष महोदय, शराबबंदी करेंगे, लेकिन सबको विश्वास में लेकर, जनजागरण करके, सभी लोगों को विश्वास में लें, उसके बाद शराबबंदी करें । अभी दुकानों में मिल रहा है । ऐसा न हो कि दुकान बंद हो जाये और घर पहुंच सेवा शुरू हो जाये, हम यह बिल्कुल नहीं चाहते हैं । अगर शराबबंदी हो तो पूर्ण शराबबंदी हो । (मेजों की थपथपाहट)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- शराब की रिपोर्ट लेने वालों को सफाया कर दिया । वह रिपोर्ट बनवाई गई थी । ऐसी रिपोर्ट बनवाकर लाओ, ऐसे निर्देश दिये गये थे । वह भी गये और वह भी गये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जारी...श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\g16\.-.5

श्री अजय चन्द्राकर :- शर्मा जी, जब बजट में बात शुरू होगी तब बात करेंगे। ऐसे भाषण हमने बहुत सुने हैं। इसमें अभी विषय आया नहीं है। आपका समझ में नहीं आ रहा है। इसमें जिस समय बात शुरू होगी उस समय हम शुरू होंगे। आपको यह समझ में नहीं आती। जुमलेबाजी यही है। जब बात शुरू होगी तब आप बोलियेगा।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- दिक्कत किसको है? जुमलेबाजी किसकी है क्या है यह तो आपको वक्त बतायेगा।

श्री अरूण वोरा :- चन्द्राकर जी, मैं पहले ही बोलता हूं कि आप डॉ. रमन सिंह जी से सीखें। आप इतने उत्तेजित क्यों हो जाते हैं? आप रमन सिंह जी से सीखिए कि कितने शांत बैठे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- ऐसा है कि हमेशा एंग्रीमैन की भूमिका में रहते हैं।

श्री अमरजीत भगत :- जैसे ही बाहर निकलते हैं और आते हैं तो उत्तेजित हो जाते हैं। उधर जाकर आप क्या करते हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं चाहता था आप दोनों मंत्री नहीं बनोगे। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने एक उपन्यास पढ़ा था -अलबर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है। इतना गुस्सा क्यों है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप 15-20 साल से मेरे साथ विधायक हैं, मैं भी हूं। मैं 100 बार इस सदन में बोल चुका हूं यह मेरे स्वाभाविक स्वर हैं, उत्तेजना नही है। इस सदन में 100 बार बोल चुका हूं, रिकार्ड निकलवाकर देख लीजिए।

श्री अमरजीत भगत :-यहां रहते हैं तब तक ठीक रहते हैं, जैसे ही बाहर से होकर आते हैं तभी बदलते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी अच्छा बोल रहे थे, अचानक क्या हो जाता है?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप अपने स्वाभाविक भाषण में नहीं आये हैं। आपको भाषण के दौरान उत्तेजना जल्दी आती है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सुशासन की बड़ी दुहाई देते रहे। गौमाता से लेकर गर्वनेंस तक की बात होती रही। डॉ. साहब, न आपसे गौ संभला न गर्वनेंस संभला। सरकार के पैसे से जनहित के काम हुए, किसके हित में हुए, किसके कहने पर कहां-कहां सरकारी खजाने पर डांका डाला

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गया, यह सब पता करने में थोड़ा वक्त लगेगा। लेकिन चिन्ता मत करिये, आपको हर बात बताई जायेगी। अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं अब केवल अनुपूरक बजट के बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहता हूं। वित्त विभाग के भारसाधक मंत्री के रूप में आज पहला भाषण दे रहा हूं। जैसा कि माननीय अजय जी ने कहा।

श्री अजय चन्द्राकर :- वित्त मंत्री नहीं मुख्यमंत्री।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वित्त विभाग का भारसाधक सदस्य हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेडन स्पीच।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तृतीय अनुपूरक विधेयक के रूप में हमारी सरकार ने 10395 करोड़ रूपये के प्रावधान किए हैं जिसके कारण राज्य सरकार के प्रावधान का आज 1 लाख करोड़ की सीमा पार कर गया है। (मेजों की थपथपाहट) तृतीय अनुपूरक के बाद ही छत्तीसगढ़ राज्य का बजट 1 लाख करोड़ रूपये से अधिक हो गया है और हम 1 लाख करोड़ बजट वाले राज्यों के क्लब में शामिल हो गये हैं। (मेजों की थपथपाहट) प्रदेश की जनता ने हमें प्रचंड बहुमत दिया, तीन चौथाई बहुमत दिया है और इस उम्मीद से कि हम उनकी उम्मीदों को पूरा कर सकें। हमारा जो तृतीय अनुपूरक बजट है वह निश्चित रूप से जनघोषणा पत्र को पूरा करने की दिशा में उठाया गया पहला कदम है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि चुनाव के समय जनता से 10 दिन के भीतर जो काम करने का वायदा हमने किया था, उस वायदा को पूरा करने में इस अनुपूरक बजट में प्रावधान किये गये हैं और 10395 करोड़ रूपये का प्रावधान प्रस्तावित किया जा रहा है। वर्ष 2018-19 का बजट प्रावधान जो 87463 करोड़ का प्रस्तुत किया गया था इस वर्ष मुख्य बजट के बाद प्रथम, द्वितीय अनुपूरक भी हमारी पूर्ववर्ती सरकार ने प्रस्तुत किये। इस प्रकार प्रथम, द्वितीय और तृतीय अनुपूरक राशि मिलाकर वर्ष 2018-19 का कुल बजट 1 लाख 5 हजार 170 करोड़ रूपये का हो गया है।

श्री प्रमेश

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रमेश\08-01-2019\g17\06.15-06.20

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री पद संभालने के बाद 17 दिसंबर 2018 खरीफ वर्ष में 2018 के किसानों के धान 2500 रूपये प्रति क्विंटल प्रोत्साहन राशि मिलाकर खरीदने का हमने निर्णय लिया । (मेजों की थपथपाहट) 2018-19.......।

श्री बृजमोहन अग्रवाल:- माननीय मुख्यमंत्री जी आपने अपने घोषणा पत्र में जन घोषणा पत्र में कहां कहा है कि उसमें बोनस शामिल होगा । आपने कहा 2500 रूपये मूल्य दिया जाएगा । बोनस तो

किसानों का आप खा रहे हैं, बोनस जो है उनका नुकसान कर रहे हैं किसानों का, आपका बोनस मिलना चाहिए किसानों को। 2500 रूपये तो आपने देने के लिए कहा है।

नगरीय प्रशासन मंत्री(श्री शिवकुमार डहरिया) :- बोनस तो आप लोग खा गये बोलने के बाद, 4 साल बाद।

श्री भूपेश बघेल :- खाने पीने का काम तो उधर वाले का है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी ये आपका जन घोषणा पत्र है। इस जन घोषणा पत्र में लिखा है। कृषि फसलों का न्यूनतम मूल्य पर खरीदी। धान 2500 रूपये, ये प्रोत्साहन राशि भी होनी चाहिए। आप 2500 रूपये दीजिए न । आप 2500 दीजिए वो प्रोत्साहन राशि तो अलग है।

श्री अमरजीत भगत :- अचानक इन लोगों की समझदारी को क्या हो गया समझ ही नहीं रहे हैं..........।

श्री भूपेश बघेल :- खरीफ वर्ष 2018 में 2500 रूपये क्विंटल में धान खरीदने का निर्णय लिया है जो भारत सरकार ने जो एम.एस.पी घोषित किया है, उसमें राशि मिलाकर हम 2500 रूपये में खरीद रहे हैं और पूरे हिन्दुस्तान में ये पहला राज्य है जो 2500 रूपये में खरीद रहा है। (मेजों की थपथपाहट) आप 2100 रूपये बोल के भी एक बार भी नहीं खरीदे। धान खरीदने की शुरूआत आपने की थी और उसकी कीमत देने का काम 2500 रूपये देने का काम हम लोगों ने किया है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले की तुलना में ढाई गुना अधिक प्रोत्साहन राशि जितना आप बोले थे और जब आप मोबाईल बांट लिये तब भी आपके खिताफ वातावरण जा रहा था। अचानक एक दिन का विशेष सत्र बुलाकर आप 300 रूपये देने की घोषणा किये उसके बाद भी सब मिला के आपसे ढाई गुना ज्यादा हमने प्रोत्साहन राशि दी है। धान खरीदी की जो राशि है, जो मार्केट में सभी पंजीकृत 17 लाख किसान हैं सबको मिलेगा। लाभान्वित होने वाले कृषकों में 2 लाख 13 हजार महिला किसान, 1 लाख 87 हजार अनुसूचित जाति के किसान और 4 लाख 7 हजार अनुसूचित जनजाति के किसान ये सारे परिवार शामिल हैं। इस तरह से हमारी सरकार निर्धारित समर्थन मूल्य के अतिरिक्त 750 रूपये की दर से बोनस दिये जाने के लिए तृतीय अनुपूरक में 3 हजार 70 करोड़ 10 लाख की अतिरिक्त राशि तृतीय अनुपूरक में प्रस्तावित की गई है। जन घोषणा पत्र में हमने ये भी कहा था कि सरकार बनने के 10 दिन के भीतर में हम कर्ज माफी करेंगे हमने कहा और ऐसा किया, हमने 10 दिन में ऋण माफी का फैसला लिया और लोगों के खाते में पैसा जाना शुरू हुआ। (मेजों की थपथपाहट)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- छत्तीसगढ़ में सरकार बनने के 10 दिनों के भीतर किसानों का कर्जा माफ किया जाएगा। आपने पूरा कर्जा कहां माफ किया है। आप तो खाली उनके जो साठ टन लोन हैं उनको माफ करे हैं पूरा कर्जा माफ क्यों नहीं कर रहे हैं। आपको पूरा कर्जा माफ करना चाहिए। आज

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किसानों के ऊपर में 18 हजार करोड़ का कर्ज है आज खाली 6 हजार करोड़ का कर्ज माफ किये हैं । पूरा कर्ज माफ नहीं किये हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कंडिका 4 में आपने जिनको रोका है उन सबको माफ करने की घोषणा कर दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- आप ये बताइये लिकिंग का पैसा वापस करना, कर्जमाफी है क्या ? लेकिन लिकिंग का पैसा वापस किया जो कर्जमाफी है क्या आप बताइये एक जिम्मेदार कुर्सी से एक जिम्मेदार आदमी बोल रहा है। प्रदेश की जनता जानना चाहती है और मैं आपसे कहता हूं कि आप चल के किसी भी सोसायटी में किसान को नो ड्यूस दे दीजिए कि आपकी ऋण माफी हो गई है।

जारी श्रीमती सविता

सविता\08-01-2019\g18\06.20-06.25

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो सोये हैं उसको तो जगाया जा सकता है और जो सोने का नाटक करे, उसको कैसे जगाया जा सकता है ? (मेजों की थपथपाहट) लिकिंग का मतलब ही क्या होता है ? जब हम चुनाव में गये, किसानों के बीच जा रहे थे, भईया हमने तो धान बेच दिया है। सोसायटी वाले उसमें कर्जा समायोजित कर दिये हैं। हमारा क्या होगा ? हमने उस समय भी कहा कि आप चिन्ता मत करिए। हमने किसानों को कहा कि आप धान बेचिए, हमारी सरकार बन रही है। आपके सारे कर्ज माफ होंगे और जो 1248 करोड़ रूपया जो समायोजित हो गया था। उस पैसे को, सबको हमने माफ किया है। (मेजों की थपथपाहट) अब इसमें समझ आयगा नहीं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, हमने इसी सदन में आपके भाषण सुने थे कि आप केवल 12 लाख किसानों का धान खरीद रहे हैं आप उनको बोनस दे रहे हैं। बाकी 30 लाख किसानों को आप बोनस क्यों नहीं दे रहे हैं ? आज आप 17 लाख किसानों का कर्ज माफ कर रहे हैं बाकी 30 लाख का क्या होगा ? बचे हुए 13 लाख किसानों का क्या होगा ? उनका कर्ज माफ क्यों नहीं कर रहे हैं ? यहां पर हमने आपसे 5 बार उनके बारे में भाषण सुने हैं और आपने कहा कि वैसे 30 लाख किसान है वैसे छत्तीसगढ़ में 36 लाख किसान है और 36 लाख किसानों में से 17 लाख किसानों का कर्जा माफ कर रहे हैं तो बाकी किसानों का कर्जा कहॉं जाएगा ?आप अपने वायदे से मुकर रहे हैं पूरा कर्जा माफ होना चाहिए। हम ये मांग करते हैं कि किसानों का पूरा कर्ज माफ हो। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मध्यस्थ कालीन और दीर्घकालीक ऋण भी माफ होना चाहिए।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- पूरा कर्ज माफ हो। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- पूरे कर्ज माफी की घोषणा करिए। ये नहीं चलेगा। पूरा कर्ज माफ करिए। सबका कर्ज माफ कर दीजिए। (व्यवधान)

(सदन में प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी की गई)

श्री भूपेश बघेल :- अभी प्रैक्टिस करने में समय लगेगा। बैठ जाईये। अब हो गया। आप बैठ जाईये। पहले दिन अच्छी प्रैक्टिस हो गई। (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत सालों के बाद ऐसा सुनने को मिला। ऐसे सुर में 15 सालों के बाद ऐसा सुनने को मिला, इसके लिए साथियों को धन्यवाद देते हैं। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप एक लकीर में जवाब दे दीजिए कि पूरा कर्जा माफ किया गया। हम पूरा समर्थन करेंगे। एक लकीर में जवाब दीजिए कि छत्तीसगढ़ के समस्त किसानों का संपूर्ण कर्जा माफ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी सदन के नेता खड़े हैं। उनको अपनी बात पूरी करने दीजिए। माननीय अमरजीत जी। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आज आप किसानों के हितैषी बन रहे हैं।(व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- एक लकीर में जवाब दीजिए कि छत्तीसगढ़ के समस्त किसानों का संपूर्ण कर्जा माफ। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- अभी उन्होंने अपनी बात कहां समाप्त की है, उनको अपनी बात कहने दीजिए। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सदन की अवधि बढ़ा दीजिए। फिर से अनुपूरक ला दीजिए, फिर से कर्जा ले लीजिए, लेकिन जुमलेबाजी बंद करके, पूरा कर्जा माफ बोलिए। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- चाहे वह प्राईवेट संस्था हो, हर किसान का सब कर्जा माफ। एक लकीर में बोलिए, बात खत्म करिये। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- किसानों का पूरा कर्ज माफ करिए।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य बैठिए। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर:- हम फूल माला पहनाएंगे। हर किसान का पूरा कर्ज माफ करिए। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- हम आपको बधाई देंगे। आभार प्रकट करेंगे। लेकिन आप करिये। एक लाईन में बोलिए। सभी किसानों का सभी कर्जा माफ, चाहे वह बैंक हो, प्राईवेट फाईनेंस कंपनी हो, सूदखोर हो, (व्यवधान) .....

......श्री चौधरी

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

चौधरी\08-01-2019\g19\06.25-06.30

पूर्व जारी ....श्री धर्मजीत सिंह :- आप एक लाईन में बोलिये कि सभी किसानों का सभी कर्जा माफ करिये, चाहे वह बैंक, प्राइवेट फाइनेन्स कंपनी हो, सुदखोर हो। आप सबका कर्जा माफ करिये। ...(व्यवधान) ..

श्री संतराम नेताम :- 2013 में आपने किसानों को बोनस देने के लिए घोषणा की थी, आप इतनी हड़बड़ी में क्यों हैं? ...(व्यवधान) ..

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, नाखून कटाकर शहीद का दर्जा नहीं मिलेगा। सब किसानों का पूरा कर्ज माफ कर दीजिए। आप बहादुरी दिखाईये। हम आपको बजट में सहयोग देंगे। 40 हजार करोड़ लगे, 40 हजार करोड़ दीजिए। सर्वसम्मति से पास होगा, लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी सब किसानों का कर्जा माफ करिये। आप नाखून कटाकर शहीद मत बनिये।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- केवल दो बैंक का कर्ज माफ किया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- घोषणा पत्र बनाने वाली समिति के संयोजक माननीय पंचायत मंत्री जी।...(व्यवधान) ..

श्री धर्मजीत सिंह :- आप हिम्मत दिखाईये, हम रात के 12 बजे तक बैठकर आपकी मदद करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अब हो गया, आप लोग शांति हो जाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, एक लाईन, हाथ जोड़कर कह रहा हूं।

श्री भूपेश बघेल :- अब मैं खड़ा हो गया हूं, इतना तो सम्मान कर लीजिए।

श्री बृहस्पत सिंह :- 15 साल के बाद ये आवाज सुनने को मिली।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इतने परेशान क्यों हो रहे हैं ? अच्छा चलिये, आप बोल लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बहुत विनम्रता के साथ, हाथ जोड़कर, अनुनय, विनय करते हुए करते हुए बोल रहा हूं, पूरा सदन, हम लोग आपको समर्थन देंगे, आप सत्र की अवधि बढ़ा लीजिए, जैसे अभी 10 प्रतिशत आरक्षण के लिए राज्यसभा की अवधि बढ़ाई गई है, उसी तरह से कर लीजिए। एक कल और अनुपूरक अनुमान ले आईये, हम और बैठने के लिए तैयार हैं, अपने राजनीतिक कार्यक्रम को छोड़ने के लिए तैयार हैं। लेकिन आपकी विश्वसनीयता इस बात पर है कि आप पूरा कर्जा माफी एक लाईन में बोलिये, आप जो प्रक्रिया अपनायेंगे, पूरा सदन आपको सर्वसम्मति से समर्थन देगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- हो गया न, आप एक लाईन के लिए खड़े हुए थे, आप इतना लंबा क्यों कर रहे हैं ?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- घडियाली ऑसूं बहाने से काम नहीं चलेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मगरमच्छ आप हो और आंसू उसको बहाने के लिए बोल रहे हो।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब 16 लाख, 17 लाख किसान ही ऋण लिये हैं तो उसी का तो माफ करेंगे। दूसरी बात खाता तो आपका ही है, 15 साल से तो खाता बही आप ही देख रहे हैं। धान आप ही खरीद रहे हैं। धान खरीदी की व्यवस्था की शुरूआत हमने की थी, लेकिन मोबाईल से हर साल रजिस्ट्रेशन कराने की सारी व्यवस्था आपने की थी। अब बृजमोहन जी को परेशानी क्यों हो रही है ? 30 लाख किसान हैं, इसका ऐसा है, वैसा है। आप सुनिये, हॉ मेरा भाषण है, उनको लाभ क्या देंगे, लेकिन आपने जो व्यवस्था की है, हमने उतना ही तो ऋण माफ किया है। शिवरतन जी, जवाब भी सुन लीजिए। आप माईक भी बंद कर लीजिए, इतने उतावले क्यों हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- बिल्कुल । हम खाली ये जानने के लिए उतावले हैं कि दीर्घकालीन, मध्यमकालीन ऋण भी माफ करेंगे या नहीं करेंगे और कब करेंगे ?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- बाकी बैंकों का भी प्राइवेट सेक्टर का, राष्ट्रीयकृत बैंक का माफ करने की घोषणा कर दें न। पूरे किसानों का कर्ज माफ होना चाहिए।

श्री भूपेश बघेल :- केशव जी, बैठिये। शिवरतन जी आप वहीं हैं, वहीं रहेंगे। यहां थे तब भी आपको कुछ नहीं मिला, 15 साल इंतजार करते रहे, लेकिन आपको कुछ नहीं मिला। अब थोड़ा धीरज रखिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं जहां था, वहीं हूं। आप यहां से वहां पहुंच गये। वादाखिलाफी करोगे तो फिर वहां से वहां पहुंच जाओगे। आप इस बात का ध्यान रखिये।

श्री भूपेश बघेल :- तब आपके नेता ने क्या कहा था ? मुझे उनका अंतिम भाषण याद है। उन्होंने कहा था कि 2018 का चुनाव आयेगा, हम यहां तक नहीं, यहां तक पहुंचेंगे। उन्होंने जो बात कही थी, वह हमारे लिए लागू हुआ, हम वहां तक पहुंच गये, देख लीजिए हमारे सदस्य वहां बैठे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कृषि ऋण की परिभाषा कर रहे हैं। आप यह कहते थकते नहीं थे कि जीरो प्रतिशत ब्याज देने वाला पहला राज्य है। आप अल्पकालीन ऋण के अलावा क्या फेन्सिंग के लिए जो बारबेट लेते थे, उसमें ब्याज नहीं लेते थे ? क्या किसान ट्रेक्टर लिये हैं, उसको बिना ब्याज के देते थे ? यदि वह कृषि ऋण है तो फिर अपने जीरो परसेन्ट में क्यों नहीं दिया ? कृषि ऋण यही है, हम लोग किसान हैं, जानते हैं, घड़ियाली आंसू बहाना बंद करिये। हमने 6100 करोड़ माफ किया है। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती नीर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नीरमणी\08-01-2019\h10\06.30-06.35

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप बताने का कष्ट करेंगे कि ट्रेक्टर क्या पानी जोतने के लिये लेते हैं ? हम भी किसान हैं, क्या ट्रेक्टर को खेत जोतने के लिये लेते हैं या पानी जोतने के लिये लेते हैं ?

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- फिर जीरो परसेंट क्यों नहीं दिये थे ? (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- अभी शिवरतन जी ने कहा इसीलिये आप हैं । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- जीरो परसेंट केवल खाद-बीज के लिये आपने दिया है ।(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, जन घोषणा पत्र में कर्जा माफी की बात की है । (व्यवधान)

श्री केशव चंद्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जीरो परसेंट की बात है तो ग्रामीण बैंकों में जीरो परसेंट नहीं है । (व्यवधान) आपने ग्रामीण बैंक की घोषणा की है, केवल सेवा सहकारी समिति में किया है । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- श्री केशव जी, ले-देकर तो आपके एक साथी और आये हैं । इनके साथ सहयोगी बनकर आप तो ठगा गये । वो 5 हो गये और न आप 1 से 2 हुए ।

श्री केशव चंद्रा :- न मैं आपके साथ हूं, न मैं इनके साथ हूं, मैं किसान के साथ हूं ।

श्री भूपेश बघेल :- पहले भी किसके साथ थे वह भी हमको मालूम है, आज किसके साथ हो वह भी हमको पता है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 1 नवम्बर 2018 से लेकर 30 नवम्बर 2018 के बीच प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के द्वारा लिंकिंग या नगद के रूप में चुकाये गये ऋण की राशि को भी माफी योग्य घोषित किया है जिसके बारे में आप बोल रहे थे । तृतीय अनुपूरक बजट में ऋण माफी के लिये 4 हजार 223 करोड़ 47 लाख का बजट प्रावधान भी किया गया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, फसल बीमा का जो पैसा मिला है वह भी किसान के खाते में, ऋण में जमा हो गया है । क्या उसको वापिस करेंगे ? (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- हर बार खड़े हो जाते हैं हर चीज में, आप बोलने भी देंगे । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- फसल बीमा के ऋण का पैसा भी वापिस हुआ है । किसान के ऋण के खाते में जमा हुआ है उसको वापिस करेंगे ? (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- सुबह धमकी दे रहे थे वही बात हुई । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब यह धमकी नहीं चलेगी, आप बोलने तो दीजिये । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं किसान की और आपकी बात को याद दिला रहा हूं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप हर चीज में खड़े हो जाते हैं । यह तरीका ठीक नहीं है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- हम धमकी नहीं दे रहे हैं । हम किसान के मुद्दे को उठा रहे हैं ।(व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आदरणीय सदस्य जी, पिछली बार हम देखे हैं कि आप लोग किसानों के कितने हितैषी रहे हैं, वर्ष 2013 से हम लोग देखे हैं कि आप लोग किसानों के कितने हितैषी रहे हैं ? धीरज रखिये, सब होगा ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने तो 17 लाख किसानों का 6 हजार 100 करोड़ रूपये माफ कर दिया । मैं जो घोषणा है उसके बारे में थोड़ी सी चर्चा कर देता हूं । वर्ष 2003 में ये घोषणा करके आये थे कि कर्ज माफी करेंगे, झूनझुना पकड़ाये थे । ऊंट के मुंह में जीरा और कितना माफ किये थे, वर्ष 2004 में 4 लाख 55,000 किसानों के आपने केवल ढ़ाई हजार रूपये तक कर्ज माफ किये हैं । हम तो को-ऑपरेटिव बैंक में जितना भी कर्ज लिया है वह सबको ढाई हजार से लेकर वह राशि 10 लाख हो, 15 लाख हो सबको हमने माफ किया है । (मेजों की थपथपाहट) और उस समय आपने माफ किया था, कितना किया था ? वर्ष 2004 में 106 करोड़ और हम कर रहे हैं 6 हजार 100 करोड़ । वर्ष 2012 में भी आपने कहा था कि सन् 97 से लेकर 99 तक 46 हजार किसानों का हम ऋण माफ कर रहे हैं और कितना किया था 2 करोड़ 52 लाख और आप बड़े किसान के हितैषी बनते थे । आज जो बातें कह रहे हैं वह उस समय भी आपको याद रखना था कि आपने क्या कहा था और कितना माफ किया था यह भी आप स्मरण कर लें, केवल 106 करोड़ आपने माफ किया ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने इस साल जो लोन लिया । उसका तो हमने माफ किया ही लेकिन साथ-साथ जो 5 लाख 25 हजार किसान जो डिफॉल्टर थे उनका भी ऋण हमने माफ किया है । (मेजों की थपथपाहट) हमने कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की थी चाहे को-ऑपरेटिव बैंक का हो, चाहे वह ग्रामीण बैंक हो । राष्ट्रीयकृत बैंक के बारे में बड़ी चर्चा हुई, हमने फैसला किया कि उसके पहले अध्ययन कर लें कि के.सी.सी. लोन का नेचर किस प्रकार का है, 1-2 दिन में वह रिपोर्ट भी आ जायेगी और उसके बारे में भी हम फैसला करेंगे कि वह किसान जो क्रॉप लोन लिये हैं, जो केंद्रीय सहकारी बैंक के अनुरूप हो उसके बराबर के ऋण हो उसको भी हम लोग माफ करेंगे । ऐसा नहीं है कि जो राष्ट्रीयकृत बैंक हैं उनके किसानों का हम माफ नहीं करेंगे । उनका भी माफ करेंगे लेकिन उसकी रिपोर्ट हमने मंगवायी हैं, देख लेंगे, उसका अध्ययन करेंगे उसके बाद उसकी भी घोषणा की जायेगी। 20 दिन की सरकार है, आप थोड़ा सब्र तो करिये । 15 सालों में आप केवल झुनझुना पकड़ाते रहे, किसानों को ठगते

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रहे..........जारी

............श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\h11\06.35-06.40

जारी...........श्री भूपेश बघेल :- ऐसा नहीं है कि हम राष्ट्रीयकृत बैकों के किसानों का कर्ज माफ नहीं करेंगे, उनका भी माफ करेंगे, लेकिन हमने उसकी रिपोर्ट मंगाई है, उसका अध्ययन करके, उसकी भी घोषणा की जाएगी । यह केवल 20 दिनों की सरकार है, आप थोड़ा सब्र तो करिये । आप 15 सालों में किसानों को केवल झुनझुना पकड़ाते रहे, किसानों को कभी 270 रूपए के नाम से, कभी 300 रूपए के नाम से ठगते रहे, कभी 2100 रूपए समर्थन मूल्य के नाम से ठगते रहे । आज जब सरकार किसानों के लिए काम कर रही है तो नारेबाजी, बहिर्गमन । अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है रविन्द्र चौबे और हम 2007-2008 में कहते रह गए कि केन्द्र सरकार बोनस दे रही है डॉक्टर साहब, आप 5 रूपए दे दीजिए । लेकिन आपका दिल नहीं पसीजा था, आप रिकॉर्ड निकलवाकर देख लीजिए । किसानों के लिए आपकी क्या भावना है, आपकी पार्टी की क्या भावना है ? यह हम लोग बेहतर जानते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, हम लोग किसानों के लिए जो कह रहे हैं या जो कर रहे हैं, कोई अहसान नहीं कर रहे हैं । यह उनका हक़ है, उनका अधिकार है । अन्नदाता जो कष्ट सहता है, जो मेहनत करता है, यह उसका सम्मान है (मेजो की थपथपाहट) । अध्यक्ष महोदय, किसानों का दिल बहुत बड़ा होता है । अभी परसों ही मैं बेमेतरा विधान सभा गया था । वहां एक किसान कमलेश परगनिहा आया । उसने मुझे मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए 51 हजार का चेक दिया । गृहमंत्री ताम्रध्वज जी साथ में थे । मैंने पूछा - आप क्यों दे रहे हैं ? उसने कहा - आप सारे कर्ज माफ कर रहे हैं और 2500 रूपए में धान खरीदने वाले हैं । उसका पेमेंट होगा इसलिए मैं मुख्यमंत्री सहायता कोष में 51 हजार दे रहा हूं (मेजो की थपथपाहट) । मैं कुंवर सिंह निषाद के क्षेत्र गुंडरदेही गया था । वहां के किसान खेमराज चन्द्राकर ने कहा कि मैं 11000 का चेक दे रहा हूं मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए । यह उन जरूरतमंदों के लिए है । मैंने कहा - 11000 का आंकड़ा क्यों ? उसने हिसाब निकालकर बताया, इतना मेरा ऋण था, लिंकिंग में जो जमा किया था वह माफ हो गया, इतना और मिलने वाला है । साथ ही 2500 रूपए में आप जो धान खरीदेंगे, उसके अंतर की राशि इतनी आ रही है । मुझे 11 लाख का फायदा हो रहा है, मैं 10 परसेंट मुख्यमंत्री सहायता कोष में दे रहा हूं (मेजो की थपथपाहट) । अध्यक्ष महोदय, यदि ऋण माफ नहीं होता, तो मैंने नाम बताया है उसमें पता कर लीजिए, कमलेश परगनिहा और खेमराज चन्द्राकर ने मुझे चेक दिया है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा कर्मियों का नियमितीकरण का प्रावधान हमने किया । सारे सदस्य बोल रहे थे लेकिन किसी ने उल्लेख नहीं किया । आपने विलीनीकरण का निर्णय लिया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, हम लोगों ने जिन बातों को उठाया है, जो दीर्घकालिक, अल्पकालिक ऋण हैं, उसको माफ करने के बारे में, उसकी पॉलिसी के बारे में आपकी तरफ से वक्तव्य आना चाहिए । क्योंकि बहुत सारे किसान ऐसे हैं जिन्होंने खेती के लिए ही लोन लिया है और उनको 16 प्रतिशत नहीं लगता है, उनको 3 परसेंट और 7 परसेंट लगता है । ऐसे किसानों के कर्जे माफ नहीं होंगे, तब तक छत्तीसगढ़ का किसान सुखी नहीं हो सकता । इसलिए उस कर्जे को माफ करने के बारे में आपकी तरफ से स्पष्टीकरण आना चाहिए । सिंचाई पम्पों का, बारबेट वायर का, ट्रेक्टर का, स्प्रिंकलर का उन्होंने लोन लिया है । वे किसान ही अपने लोन नहीं पटा पा रहे हैं । माननीय धर्मजीत सिंह जी ने बताया टमाटर का, सब्जी का । हमारे देवव्रत जी ने बताया कि लोगों ने सब्जियों के लिए लोन लिया हुआ है और वे किसान सबसे ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- पहले तो आप कहते थे कि उसने शराब के नशे के कारण आत्महत्या कर लिया । पहले तो आप कहते थे कि पारिवारिक झगड़े के कारण आत्महत्या कर लिया । क्या हो गया है आपको ?

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सरकार विरोधी नारे लगाये गये)

---श्री ठाकुर-

ठाकुर\08-01-2019\h12\06.40-06.45

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये)

श्री धरमलाल कौशिक:- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब किसानों की बात आयी तो समय मैंने कहा था कि ये बात मुख्यमंत्री जी के जवाब में आना चाहिए। ये अल्पकालीन की जो आप बात कर रहे हैं। जो दीर्घकालीन है क्या वो किसान नहीं। जो मध्यकालीन लोन लिये वो क्या किसान नहीं है और उनके कर्जे माफ क्यों नहीं होने चाहिए। आपने जब जारी किया उस समय आपका जो घोषणा पत्र है आप उसमें लिख दिये होते कि हम केवल अल्पकालीन किसानों का कर्जा माफ करते। आपने तो बड़े-बड़े वायदे करके एक लाइन में लिखा कि किसानों के कर्जे माफ। बिजली बिल हाफ और अब जब बारी आयी है तब आपको दाएं और बाएं देख रहे हो और घुमाकर के बोल रहे हैं कि कर्जे हम दिये हैं। ऐसा नहीं चलेगा। एक लाइन में लिखा हुआ है कर्जे माफ और इसलिए हम मांग करते हैं कि किसानों के कर्जे माफ होने चाहिए और आपका जवाब हमें आना चाहिए (व्यवधान) किसानों के कर्ज माफ होने चाहिए। इसलिए हम इस सदन से बहिर्गमन करते हैं और इसका जवाब नहीं आया इसलिए हम इस सदन से बहिर्गमन करते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

6:41 बजे **<u>बहिर्गमन</u>**

<u>शासन के उत्तर के विरोध में</u>

(नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) के नेतृत्व में शासन के उत्तर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया।)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये)

व्यवधान

एक माननीय सदस्य:- 15 साल से जिनको संवेदना नहीं थी आज इनको चिंता हो रही है।

मुख्यमंत्री:- किसान विरोधी सब बाहर चले गये । किसानों ने 15 साल सरकार को उखाड़कर 15 सीट पर सीमित कर दिये अब लोकसभा में एक सीट के लिए भी तरसेंगे ये लोग।

श्री अमरजीत भगत:- किसान विरोधी सब बाहर चले गये।

एक माननीय सदस्य:- अच्छा बी टीम भी चले गये ।

डॉ. शिव डहरिया:- नास्ता करने चले गये सीधे।

श्री भूपेश बघेल :- दोनों एक ही हैं, सहयोगी दल हैं तीनों ।

श्री अमरजीत भगत :- बीच में बोलते हैं कि खुद तो गये और नौ हाथ का पगहा भी ले गये ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश में कार्यरत 8 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके शिक्षाकर्मियों के संविलियन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है । इन्होंने किया लेकिन तृतीय अनुपूरक में व्यवस्था इन्होंने नहीं की, वह हम कर रहे हैं और इसके लिये शिक्षाकर्मियों के नियमित वेनभत्ता भुगतान हेतु उपलब्ध बजट में प्रावधान कम होने के कारण तृतीय अनुपूरक में 1841 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया जा रहा है । इस राशि से नियमित हो चुके 1 लाख 9 हजार शिक्षाकर्मियों को लाभ प्राप्त होगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, जनसंपर्क विभाग में जन कल्याणकारी योजनाओं का जनता को यथोचित लाभ दिलाने के लिये सबसे आवश्यक कदम है योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाना और योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु अनुपूरक बजट में 60 करोड़ का प्रावधान प्रस्तावित किया गया है । ये इसलिये भाग गये क्योंकि यह जो मैं बताने वाला था उसको ये बर्दाश्त नहीं कर पाते । पिछले साल 160 करोड़ का जो बजट था उसे बढ़ाकर 260 करोड़ कर दिया गया था । लेकिन पता नहीं किस तरह से काम हुआ, हम लोगों ने जब कुछ काम करने का सोचा तो देखा कि खजाना खाली ही नहीं है बल्कि एक्स्ट्रा पैसा भी खर्च कर दिया गया है, 260 करोड़ के बजट के विरूद्ध 400 करोड़ से अधिक खर्च हो गया है । बजट 260 करोड़ का और खर्च हो गया 400 करोड़ का । उसका पेमेंट किस प्रकार से करें यह एक बड़ी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समस्या है । कई काम तो ऐसे हुए हैं जो बिना कार्यादेश के जारी हो गये हैं, कई काम का अता-पता नहीं है । ....जारी

.........श्री अरविंद

अरविंद\08-01-2019\h13\06.45-06.50

.........जारी श्री भूपेश बघेल :- कई काम का अता-पता नहीं है। पैसे पेमेन्ट हो गए। अब जब बिल आ रहा है तो पता चल रहा है कि पैसे कैसे-कैसे खर्च हुए हैं। इसलिए अब नये सिरेसे काम शुरू करना है। इसके लिए हमने अनुपूरक बजट में 60 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। हम कोशिश करेंगे कि देनदारी भी निपटे और आवश्यकतानुसार हम बड़ी जांच भी करा सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अनुसूचित जाति, जनजाति के बच्चों के लिए अध्ययन के दौरान प्रोत्साहन छात्रवृत्ति देने के लिए, अन्य योजनाओं के लिए 111 करोड़ रूपये अनुपूरक में प्रस्तावित है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की योजनाओं के लिए 266 करोड़ रूपये प्रस्तावित हैं। ग्राम पंचायत में पदस्थ जो 15 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके हैं। 5,501 पंचायत सचिवों को उच्चतर वेतनमान का लाभ दिया गया है। इन पंचायत सचिवों को बढ़े हुए वेतनमान का लाभ प्रतिमाह समय पर दिए जाने के लिए तृतीय अनुपूरक में सौ करोड़ रूपये का प्रावधान प्रस्तावित है। केन्द्र प्रायोजित रूर्बन योजना में समीपस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीय अधोसंरचनात्मक सुविधा उपलब्ध कराने का काम किया जाता है। 16 जिले में 18 क्लस्टर संचालित है। मूल बजट का प्रावधान 47 करोड़ के अतिरिक्त अनुपूरक बजट में 50 करोड़ प्रावधानित किया जा रहा है। 14वें वित्त आयोग की अनुशंसा पर भारत सरकार से ग्राम पंचायतों के लिए अनुदान प्राप्त होता है। यह राशि जनसंख्या के अनुपात में ग्राम पंचायतों को ट्रांसफर की जाती है। इस वर्ष राज्य के इस मद में 1,180 करोड़ रूपये प्राप्त होना है तथा गत वर्ष की अंतिम किश्त 116 करोड़ का आहरण भी इसी वर्ष के प्रावधान से किया जाना है। इसलिए मूल प्रावधान 1,180 करोड़ के अतिरिक्त 116 करोड़ रूपये का प्रावधान अनुपूरक बजट में प्रस्तावित किया जा रहा है। नगरीय निकाय योजनाओं के लिए 299 करोड़, केन्द्र प्रायोजित अमृत मिशन योजना के अन्तर्गत नगरीय क्षेत्र में शुद्ध पेयजल व्यवस्था, सीवरेज सिस्टम, सार्वजनिक पार्क, गार्डन निर्माण इत्यादि मूलभूत सुविधा के कार्य किये जाते हैं। इसके विस्तार योजना में 184 करोड़ 64 लाख रूपये का अतिरिक्त प्रावधान प्रस्तावित किया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय, 14वें वित्त आयोग की अनुशंसा पर नगरीय निकाय को प्राप्त होने वाले अनुदान राशि 70 करोड़ 47 लाख रूपये अनुपूरक बजट में प्रावधान प्रस्तावित है। स्वच्छ भारत योजना में निजी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

शौचालय निर्माण, सार्वजनिक स्वच्छता हेतु विधिक घटक का क्रियान्वयन किया जाता है। इस योजना हेतु अनुपूरक बजट में 37 करोड़ 17 लाख प्रावधानित किया गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो पूर्व वित्तमंत्री, मुख्यमंत्री जो भारसाधक सदस्य थे, एफ0आर0बी0एम0 के बारे में बता रहे थे, अब वे नहीं हैं, तो बताने का कोई औचित्य नहीं है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि एफ0आर0बी0एम0 जो एक्ट है, हम लोगों को उसके तहत काम करना चाहिए और उसके लिए निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ सरकार प्रतिबद्ध है। ये लोग अनावश्यक खर्च बढ़ाये थे, हम उसमें कटौती भी करेंगे, वित्तीय अनुशासन लायेंगे, जो एक्ट है, उस प्रावधान के अनुसार हम वित्तीय अनुशासन बनाकर रखेंगे। मैं इन्हीं शब्दों के साथ पूरे सदन को धन्यवाद देता हूँ। आपको भी धन्यवाद देता हूँ कि किसानों के हित में एक बड़ा फैसला इस सदन ने किया है, यह एक ऐतिहासिक क्षण है, जिसमें 6,100 करोड़ रूपया माफ करने का निर्णय लेने वाला यह विधानसभा जिसमें किसानों के लिए प्रावधान किया है। (मेजों की थपथपाहट) साथ ही 2500 रूपये में धान खरीदने वाला यह पहली सरकार है, विधान सभा ने इस पैसे को पारित किया है। यह पूरे हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पहला राज्य है, जिसमें 2500 रूपये में धान खरीदी करने का फैसला किया है। यह प्रस्ताव आपने पारित किया है, इसलिए अध्यक्ष महोदय, आपको भी बधाई, आपकी अध्यक्षता में यह सब काम हुआ है। मैं सभी माननीय सदस्यों को भी बधाई देना चाहता हूँ कि आपने तृतीय अनुपूरक बजट को पारित किया। इसके लिए मैं कोटिश: धन्यवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ। धन्यवाद, जयहिन्द।

.... श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\h14\06.50-06.55

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि दिनांक 31 मार्च, 2019 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में अनुदान संख्या-1, 2, 3, 4, 6 ,7, 10, 12, 13, 14, 16, 17, 21, 23, 26, 27, 29, 30, 32, 33, 39, 41, 44, 58, 64, 66, 67, 69, 71, 80 एवं 81 के लिए राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदया को कुल मिलाकर दस हजार तीन सौ पन्चानबे करोड़, अन्ठावन लाख, पच्चीस हजार, चार सौ रूपये की अनुपूरक राशि दी जाये ।

अनुपूरक अनुदान की मांगों पर प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

6:51 बजे

शासकीय विधि विषयक कार्य

मुख्यमंत्री (भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक, 2019 (क्रमांक 1, सन् 2019) का पुर:स्थापना करता हूं ।

मुख्यमंत्री (भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विनियोग विधेयक, 2019 (क्रमांक 1, सन् 2019) पर विचार किया जाए।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों का बर्हिगमन पश्चात् सदन में उपस्थित होने पर)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये अपमानजनक है, जब हम सदन में आ रहे हैं तो सत्ता पक्ष के लोग जिस प्रकार से हंसी उड़ा रहे हैं, यह बहुत अपमानजनक है । इनको माफी मांगनी चाहिए । माननीय अध्यक्ष महोदय, ये गलत है । सदन में हमारा प्रवेश करते समय जैसी हंसी उड़ायी है, ये अपमानजनक है, ये अपमानजनक है । ये हमारा मौलिक अधिकार है । ऐसी हंसी उड़ाएंगे तो हम सदन में नहीं आएंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- क्या हो गया ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये गलत तरीका है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, ये हमारा मौलिक अधिकार है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, जैसी हंसी उड़ाई गई है, वह गलत तरीका है । सदन में हमको संरक्षण चाहिए । जो हंसी उड़ाई गई है, वह गलत तरीका है, उस पर माफी मांगनी चाहिए ।

श्रम मंत्री (डा. शिवकुमार डहरिया) :- अध्यक्ष महोदय, किसानों को लाभ हो रहा है तो आप लोग हंसी उड़ा रहे हो और बहिर्गमन कर रहे हो । ....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, ये क्या तरीका है, हमारा अपमान है। अध्यक्ष महोदय, आपको हमारा संरक्षण चाहिए । जिस प्रकार से इन्होंने हंसी उड़ाई गई है, ये हमारा अपमान है, यह सदन का अपमान है, ये आपका अपमान है । ....(व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप किसानों का अपमान करके बहिर्गमन कर रहे हो । ....(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- ये विपक्ष चाहिए कि नहीं चाहिए, ये स्पष्ट करना चाहिए । ऐसा व्यवहार बिल्कुल शोभा नहीं देता, ये हमारा अपमान है । ये स्पष्ट करना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है । ....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, ये आप तय करें कि विपक्ष सदन में चाहिए कि नहीं चाहिए । आप निर्णय करें । ऐसा निर्णय होगा, ऐसा व्यवहार होगा तो हम सदन में नहीं आएंगे । जिस

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रकार से हंसी उड़ाकर विपक्ष का, हमारा अपमान किया है, आपको निर्णय करना चाहिए और सरकार को हमसे माफी मांगनी चाहिए । जब हम सदन में आये हैं तो ये हंसी उड़ा रहे हैं । ....(व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- (xx)[6] किसानों के लिए अच्छा काम हो रहा है तो आप लोग बहिर्गमन कर रहे हो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, इस विषय में आसंदी से निर्देश जारी होना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग सुनिए... ....(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- सदन के नेता खड़े होकर ये बता दें कि हमको विरोध बर्दाश्त नहीं है, विरोध स्वीकार नहीं है । बहुमत से प्राथमिकता करेंगे, ये बोल दें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हम सदन का सम्मान करते हुए वापस आये हैं और सदन में हमारे घुसने पर इस प्रकार की खिल्ली उड़ाई जाए, ये बहुत अपमानजनक है, ये पूरे सदन का अपमान है, आपका अपमान है और ये बर्दाश्त नहीं किया जाएगा ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ये किसानों का अपमान है, आप बहिर्गमन कर रहे हैं। किसानों के हक के लिए लड़ाई लड़ने जा रहे हैं, किसानों के लिए अच्छा काम कर रहे हैं तो आपको बर्दाश्त नहीं हो रहा है... ....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, (xx)[7] समझ में नहीं आ रहा है । ....(व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, किसानों के हित की बात हो रही है और आप लोगों को बर्दाश्त नहीं हो रहा है । ....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हमारा हक है, हमको बहिर्गमन करने का अधिकार है ....(व्यवधान)

डा. शिवकुमार डहरिया :- 15 साल किसानों को प्रताड़ित करते रहे....(व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, किसानों की हितैषी बनकर अपमान कर रहे हो... ....(व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाते हुए गर्भगृह में आ गए)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

---

[6] (xx) अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाला गया.

[7] (xx) अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाला गया.

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के सदस्यों का इस प्रकार अपमान नहीं होना चाहिए, आप आसंदी से व्यवस्था दीजिए, प्रताड़ित करिए और व्यवस्था दीजिए, ये तो प्रजातंत्र है, प्रजातंत्र का अपमान है ....(व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- ये खाली यहां चिल्लाने आये हैं ....(व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, हम किसी से पूछकर थोड़ी आएंगे, जाएंगे ....(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, हल्की टिप्पणी नहीं होनी चाहिए, आप जरा आसंदी से व्यवस्था दीजिए । ऐसे कैसे चलेगा, एक दिन में ये हाल है । ....(व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले किसानों के हित में अनुपूरक बजट प्रस्तुत हुआ, वह इनको बर्दाश्त नहीं हो रहा है ....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- कृपया शांत हो जाइए, आप अपनी जगह में जाईए ।

श्री श्रीवास

श्रीवास\08-01-2019\h15\06.55-06.60

(प्रतिपक्ष के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये ।)

श्री धर्मजीत सिंह:- अध्यक्ष महोदय, हल्की टिप्पणी नहीं होनी चाहिये। आप आसंदी से व्यवस्था दीजिए। ऐसे कैसे चलेगा । एक दिन में यह हाल है ।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये ।)

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो प्रथम अनुपूरक बजट किसानों के हित के लिए प्रस्तुत हुआ.....।

अध्यक्ष महोदय :- कृपया शांत हो जाईये । आप अपने जगह में जाईये । आप शांत हो जाईये । आप अपने स्थान पर जाईये ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय बृजमोहन जी ने माननीय डहरिया जी के बारे में क्या कहा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपनी जगह पर जाईये । व्यवधान

श्री धर्मजीत सिंह :- आप उनको भेज कर व्यवस्था दीजिए । आप आसंदी से व्यवस्था दीजिए, आप इनको ससम्मान यहां बुलाईये । अध्यक्ष जी, विपक्ष की बात को सुनिये । हम अंदर जायें, बाहर जायें, किसी को मजाक उड़ाने का अधिकार नहीं है । व्यवधान

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमावली के नियम 250 1 के तहत निम्नलिखित माननीय सदस्य अपने स्थान को छोड़कर गर्भगृह में प्रवेश करने के कारण सभा की कार्यवाही से स्वमेव निलंबित हो गये ।

1. डॉ.रमन सिंह
2. श्री बृजमोहन अग्रवाल
3. श्री अजय चन्द्राकर
4. श्री शिवरतन शर्मा
5. डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी
6. श्री सौरभ सिंह
7. श्री डमरूधर पुजारी
8. श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू
9. श्री धरमलाल कौशिक
10. श्री भीमा मंडावी
11. श्री विद्यारतन भसीन
12. श्री रजनीश कुमार सिंह

कृपया माननीय सदस्य सदन से बाहर जाये। मैं निलंबन की अवधि पश्चात निर्धारित करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित की जाती है।

(सायं 6.57 से 7.21 बजे तक सभा की कार्यवाही स्थगित रही)

श्री मिश्रा

मिश्रा\08-01-2019\h16\19.20-19.25

समय :
7:21 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- सभा में उपस्थित सभी माननीय सदस्यगणों से मेरा निवेदन है कि वे अपनी एवं सभा की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए परस्पर सहयोग की भावना के साथ एक दूसरे के मान-सम्मान का ध्यान रखते हुए आचरण करें एवं सभा की कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने में मेरा सहयोग करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

7:21 बजे

निलंबन समाप्ति की घोषणा

अध्यक्ष महोदय :- प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन संबंधी नियमावली के नियम 250(1) के तहत माननीय सदस्यगण अपने स्थान को छोड़कर गर्भगृह में प्रवेश करने के कारण सभा की कार्यवाही से स्वमेव निलंबित हो गये थे। मैं उनका निलंबन समाप्त करता हूं।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधानसभा की कार्यवाही का आज प्रथम दिवस ही कह सकते हैं और लगभग 7.30 बज गये, काफी शांति, दोनों पक्षों की सम्यक चर्चा, आलोचनाएं होती हैं, सरकार का अपना काम करने का तरीका है, प्रतिपक्ष का अपना कहने का तरीका है। लेकिन पूरा दिन काफी अच्छे से सदन निकल गया, सत्र निकल गया आखिर में आपस की बातों में थोड़ा सा गतिरोध। विपक्ष का अपना काम करने का ढंग है। उनको वॉकआऊट करने का अधिकार है। कब जायेंगे, कब आयेंगे, हमारी किन बातों का समर्थन करेंगे, किन बातों की आलोचना करेंगे, कब सुझाव देंगे, सुझाव रचनात्मक भी हो सकता है, कब उसकी केवल आलोचना करेंगे ये आपका अधिकार है लेकिन बहिर्गमन के आगमन के दौरान कुछ ऐसी बातें हुईं, जिसके कारण सदन थोड़ा उद्वेलित हुआ और दोनों तरफ से कुछ आवाजें आईं। मैं समझता हूं कि कुछ ने सुना, कुछ ने नहीं सुना। दोनों पक्षों से हुईं। मैं तो अपने सभी नये सदस्यों से भी कहना चाहूंगा कि सदन की मर्यादाओं में हम सबको रहना चाहिए। परंपराओं का ख्याल रखना चाहिए। वरिष्ठ लोग अगर कुछ बात कहते हैं तो उसको सुनना चाहिए। ये परंपराएं हैं। सदन के नेता कोई बात कह रहे हैं तो सदन की सबसे मान्य और उच्च परंपरा है तो हम सबको सुनना भी चाहिए और अगर आप कोई बात कह रहे हैं तो सदन के नेता अगर बैठकर आपसे कहते हैं कि आप कहिए तो आपको कहने का अधिकार है। माननीय नेता प्रतिपक्ष कोई बात कहते हैं तो सदन के नेता के बाद और प्रतिपक्ष के नेता के रूप में उनकी बातों को उतना ही महत्व दिया जाता है और ये प्रथम पंक्ति तो संसदीय परंपराओं के भिज्ञ माने जाते हैं लेकिन उसके बाद भी आज कुछ आक्रोश, गतिरोध, उद्वेलन ये सब कुछ हुआ और किन्हीं के किसी भी शब्दों में अगर ऐसा लगा...!

श्री प्रमेश

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रमेश\08-01-2019\h17\07.20-07.25

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- ये प्रथम पंक्ति तो संसदीय परंपराओं के भिग्य माने जाते हैं लेकिन उसके बाद भी आज कुछ आक्रोश, गतिरोध, उद्वीलन ये सब कुछ हुआ किन्हीं के किसी भी शब्दों में अगर ऐसा लगा कि सदन संचालित करने में तकलीफ हो रही है उसके कारण ये गतिरोध हुआ

तो मैं संसदीय कार्यमंत्री होने के नाते उन सारी भावनाओं को अगर किसी को ठेस पहुंचा तो खेद मैं ही व्यक्त करके शुरूआत करता हूं। हमें तो अभी लगातार बहुत अर्से तक चलना है, खूब काम करना है हमारी विरासत है, इस परंपरा की समृद्ध विरासत है, उसको आगे ब़ढाना है और 15 साल आप इधर बैठे थे आज आप उधर बैठे हैं। हिन्दुस्तान का सबसे समृद्ध राज्य बनाने की दिशा में छत्तीसगढ़ के विधानसभा में जो कुछ चर्चा हो सके वो सबकुछ हमको करना है। इसलिए मैं आपसे भी चाहूंगा। आप तो बेहद वरिष्ठ हैं। मैं अपने सभी सदस्यों से माननीय मंत्रीगणों से भी मैं कहना चाहूंगा कि हम सबको इन परंपराओं का ध्यान रखना है और ऐसी कोई बात हो गई कि हम गतिरोध हो रहा है सदन नहीं चल पा रहा है। बहुत सारी परंपराएं हैं, 30 साल हम विधानसभा में बैठे हैं। खेद व्यक्त करने से कोई छोटा नहीं होता। विधानसभा को भी चलाना है, चर्चा भी हमको करना है, छत्तीसगढ़ को आगे भी बढ़ाना है। इसलिए ये सारी गतिरोध खत्म करने के लिए अगर थोड़ी भी किसी की बातों में आपको तकलीफ हुई होगी तो मैं खेद व्यक्त भी करता हूं और मैं उम्मीद करता हूं कि आपसे भी जो बातें हुई उसके बारे में आप भी अपने कथन में इस बात का उल्लेख करें और हम मिल जुलकर सदन को अच्छे ढंग से चलाये, केवल इतनी बात कहना चाहता हूं, अध्यक्ष जी ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री के भाषण में हमने बहिर्गमन किया था। बहिर्गमन के पश्चात जब हम हमने सदन में प्रवेश किया तो जिस तरीके से खिल्ली उड़ाई गई, शायद मेरे अपने 29 साल के विधायकी के कार्यकाल में मैंने ऐसा अपमान अपनी जिंदगी में कभी नहीं सहा और ये बहुत दुर्भाग्यजनक है इस सदन के लिए अगर हम जैसे लोगों का अपमान किया जाएगा तो ये सदन कैसा चलेगा । सदन की परंपराओं को हमने हमेशा कायम किया है। मैंने ऐसा अपमान अपने पूरे जीवन के 60 साल के जीवन में नहीं देखा है। ऐसा अपमान निश्चित रूप से आदेश में मेरे मुंह से भी कुछ निकले जो मुझे नहीं बोलना चाहिए था । मैं उसके लिए अपनी गलती मानता हूं। मैं खेद व्यक्त करता हूं, पर अध्यक्ष जी से इस बात की कामना करूंगा कि भविष्य में ये सदन की उच्च परंपराएं रही है, सदन के सदस्यों के साथ में ऐसा अपमानजनक व्यवहार कभी भविष्य में नहीं होना चाहिए। अगर सदन में ऐसा अपमानजनक व्यवहार होगा तो शायद हम लोग छत्तीसगढ़ की उच्च परंपराओं को कायम नहीं रख पाएंगे । मैं फिर से मेरे द्वारा अगर किसी के मेरे व्यवहार से किसी को भी कोई कष्ट पहुंचा है तो मैं उसके लिए खेद व्यक्त करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं सभी पक्ष के साथियों को, माननीय भूपेश बघेल जी आप अपने विनियोग विधेयक पुनर्थापन किया है, उसके बारे में कुछ विचार व्यक्त करना चाहे तो करें। आपने पुनर्थापन किया है विचार किया जाए कहिए।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पर विचार किया जाय ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पर विचार किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पर विचार किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- अब विधेयक के खंडों पर विचार होगा।

श्रीमती सविता

सविता\08-01-2019\h18\07.30-07.35

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक का अंग बने।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बने।

खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बना।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, प्रस्ताव करता हूँ कि विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पारित किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पारित किया जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि विनियोग (क्रमांक-1) विधेयक, 2019 (क्रमांक 1 सन् 2019) पारित किया जाए।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

विधेयक पारित हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

समय :
7:32 बजे

<u>शासकीय संकल्प</u>

<u>राज्य के मंत्रि-परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने संबंधी</u>

अध्यक्ष महोदय :- राज्य के मंत्रि-परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने संबंधी, संकल्प। माननीय भूपेश बघेल जी।

श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, निम्नलिखित संकल्प प्रस्तुत करेंगे :-

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

''यह सदन केन्द्र सरकार से यह अनुरोध करता है कि राज्य के वृहद क्षेत्रफल व प्रदेश के त्वरित विकास के हित में छत्तीसगढ़ राज्य के लिए मंत्रि-परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने हेतु संविधान के अनुच्छेद 164 (1 क) के प्रावधान को संशोधित करने हेतु समुचित पहल की जाए।''

मुख्यमंत्री(श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं, संकल्प प्रस्तुत करता हूँ कि-

''यह सदन केन्द्र सरकार से यह अनुरोध करता है कि राज्य के वृहद क्षेत्रफल व प्रदेश के त्वरित विकास के हित में छत्तीसगढ़ राज्य के लिए मंत्रि-परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने हेतु संविधान के अनुच्छेद 164 (1 क) के प्रावधान को संशोधित करने हेतु समुचित पहल की जाए।''

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं किसी भूमिका में नहीं जाऊंगा, लेकिन मैं आपसे हार्दिक क्षमा चाहता हूँ, किन्हीं भी कारणों से।

माननीय अध्यक्ष महोदय, शासकीय संकल्प आया है। ये विचार करना चाहिए कि जिस विषय में संविधान संशोधन की जरूरत है, यहां वह विषय आना चाहिए या नहीं। यह आपके सोचने का विषय है। किस-किस विषय में हमको अनुमति देनी चाहिए। हमको किस विषय में शासकीय संकल्प या अशासकीय संकल्प लाने की अनुमति देनी चाहिए या नहीं देनी चाहिए। पर माननीय अध्यक्ष महोदय, आप भारतीय राजनीति के इतिहास के उस दौर के गवाह रहे हैं। ये इस विधेयक की पृष्ठभूमि क्या थी ? इसको लाने की जरूरत क्या थी ? और यदि आप उस समय थे। ये सर्वसम्मति से आया, कांग्रेस के समर्थन से आया। भारतीय राजनीति में राजनीतिक सूचिता के लिए जो सबसे ज्यादा कदम किसी समय उठाये। दल बदल के प्रतिशत को बढ़ाने का हो, चन्दा को जो कंपनी का स्वरूप देने का हो या मंत्रिमण्डल की संख्या को सीमित करने का हो। वह राजनीति में सूचिता के प्रतीक जो देश की चिंता करते थे, पदों के लिए राजनीति नहीं करते थे। वे इस सदन को सामाजिक परिवर्तन का उपक्रम बनाना चाहते थे, सिर्फ राजनीति करने के लिए नहीं सोचते थे, जो देश के बारे में सोचते थे, उन लोगों ने लोकतंत्र की उस अव्यवस्था को, कि मुख्यमंत्री का पद नहीं निर्वाचित है वह भी आ रहे हैं, मंत्री की संख्या राजनीति संतुष्टिकरण के लिए बढ़ायी जा रही है। जब वर्ष 1989 से इस देश में गठबंधन की सरकारें शुरू हुईं तो मंत्रिपद की संख्या किसी को संतुष्ट करने के लिए बांटी जाने लगी। देश में क्या हो रहा है, प्रदेश में क्या हो रहा है ? इसकी चिन्ता राजनीतिक दलों ने नहीं की। पर माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहूंगा कि उस काल के नेतृत्व की प्रशंसा करना चाहता हूँ जिन्होंने ये तय किया कि हम देश पहले रखते हैं और इस तरह की चीजों को राजनीतिक दुरूपयोग के लिए रोकेंगे, इन महत्वपूर्ण पदों को करके ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, संविधान के 91 संशोधन के माध्यम से जो 75 (क) लोकसभा के लिए जोड़ा गया है 164 में और उसके बाद (1 क) विधान सभाओं के लिए जोड़ा गया। इसकी पृष्ठभूमि के बाद अब यहां पर प्रश्न ये उठता है ....

जारी श्री चौधरी

चौधरी\08-01-2019\h19\07.35-07.40

पूर्व जारी.. श्री अजय चन्द्राकर :- अब इसकी पृष्ठभूमि के बाद यहां पर यह प्रश्न उठता है, 12वां या 13वां मंत्री का पद खाली है, आप उसको भर लीजिए। अराजकता, पद की लिप्सा, बहुमत, उसको संतुष्ट करने की वृत्तियां, अध्यक्ष महोदय, आप देखिये विरोधाभास दिखा। मैं आज तो क्षमा के साथ बोलूंगा, यदि कोई बात किसी को अप्रिय लगे, इसीलिए मैंने क्षमा मांगी, तो मेरा आत्मविश्वास व्यक्तिगत कारणों से हिल गया। मैं आपसे कभी उसमें चर्चा कर लूंगा। लेकिन ये कौन सा विरोधाभासी बयान है कि इस प्रदेश के दो नेता माननीय मुख्यमंत्री जी सदन के नेता और उनके वरिष्ठ मंत्री माननीय मोहम्मद अकबर जी बिलासपुर प्रवास में जाते हैं। एक आदमी कहते हैं कि संसदीय सचिव की संख्या बढ़ेगी, एक आदमी माननीय इस सदन के नेता कहते हैं कि साहब मेरे सामने इस विचार के लिए कोई प्रश्न नहीं है। आज जब देश, दुनिया में ये बातें हो रही हैं कि हम उस दिशा में बढ़े, तब आपके पास पहले 13वां पद है, उसको तो भर लीजिए। आपके पास क्या जरूरत है? संविधान संशोधन की मांग क्यों है? यदि आप ये कहते हैं कि तमिलनाडु का आकार बड़ा है, इसका छोटा है, उसका छोटा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस में विपक्ष के नेता थे या कोई भी थे, डिलीमेटेशन एक्ट जब आया, राज्य गठन का मामला आया, उत्तराखंड की 21 सीट से 70 सीट कर दी गई। छत्तीसगढ़ में भी उस समय डिलीमेटेशन का विषय चल रहा था, आप 90 सीट से 200 सीट मांग सकते थे, 15 प्रतिशत हो सकता था। उस समय कौन कहा था कि आप सोये रहें? आपको कौन ने कहा कि आप बात मत रखें? आपको कौन ने कहा कि ये विषय नहीं आयेगा?

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब दूसरी बात इसकी जरूरत क्यों नहीं है? देश इसीलिए इन क्षेत्रों में बर्बाद हो रहा है। आपका दृष्टिकोण इधर बैठते हैं तो दूसरा होता है, उधर बैठते हैं तो दूसरा होता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहूंगा कि जो नेता महान होता है, उसके दृष्टिकोण में जब देश सामने होता है तो परिवर्तन नहीं दिखता। यहां पर राजनीति की शूचिता नहीं दिख रही है, यहां पर संतुष्टिकरण दिख रहा है। जिस दिन बहस में पहले दिन यदि हम संतुष्टिकरण की ओर बढ़ते हैं और इस सदन को राजनीतिक इस्तेमाल के लिए उपयोग करते हैं तो यह प्रदेश कहीं नहीं जायेगा, एक राजनीतिक उपक्रम बन जायेगा। जो सपना, जो भाषण हमने इस प्रदेश के बारे में थोड़ी देर पहले सुना कि क्या-क्या होगा, वह एक ऐसा हो जायेगा। फिर वह असंसदीय, संसदीय हो जायेगा। साहब आप बोल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कुछ रहे हैं, कर कुछ रहे हैं, दिखा कुछ रहे हैं, नीयत कुछ है। ये समानता होनी चाहिए। नेता की विश्वसनीयता होती है, सत्तारूढ़ दल की यह बात होती है। भाजपा की सरकारें बनीं, आज यदि कांग्रेस 20 प्रतिशत में है तो 70-75 प्रतिशत में हम हैं। तीन परिणामों के बाद देश में कांग्रेस का प्रतिशत बढ़ गया। लेकिन हमने और किसी भी प्रदेश ने, जो छोटे राज्यों के लिए कम से कम 12 प्रतिशत और बड़े राज्यों के लिए 15 प्रतिशत कहा है, माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में आपने पहले दिन भाषण में कहा था कि मैं संसदीय परंपरा की सब चीजों को पुष्ट करूंगा। मैंने आपसे आज क्षमा मांगने में इसलिए कोई संकोच नहीं किया तो यह भी जानना चाहिए कि ऐसा शासकीय संकल्प देश की किसी विधानसभा में नहीं आया है। ये पद लिप्सा है,ये राजनीतिक संतुष्टीकरण का उपकरण बनाने की कोशिश विधानसभा को हो रही है। इसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं इसका विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी ने जो शासकीय संकल्प प्रस्तुत किया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। मुख्यमंत्री जी का यह प्रस्ताव न तो संख्या बढ़ाने के लिए है और न ही किसी को संतुष्ट करने के लिए है। मंत्रिमंडल का आकार इसलिए बड़ा होना चाहिए ताकि पूरे राज्य का समुचित व सर्वांगीण विकास हो सके। जैसे की सरकार की मंशा है प्रदेश के अंतिम छोर तक रहने वाले व्यक्ति को शासकीय योजनाओं का लाभ मिल सके, यह राज्य की जरूरत और राज्य की आवश्यकता है। हमारे प्रदेश की भौगालिक संरचना और समस्यायें अलग हैं।..... (जारी)..

श्रीमती नीर

नीरमणी\08-01-2019\i10\07.40-07.45

जारी..........श्री अरूण वोरा :- और राज्य की आवश्यकता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश की भौगोलिक संरचना और समस्याएं अलग हैं । आप देखेंगे कि बस्तर में नक्सलवाद की समस्याएं पनप रही हैं, अंबिकापुर की समस्याएं अलग हैं, बिलासपुर में विकास की अपार संभावनाएं हैं, मैदानी क्षेत्र में किसानों की अपनी एक अलग समस्या है इसको आधार मानते हुए मुख्यमंत्री जी ने जो प्रस्ताव लाया है मैं समझता हूं कि उसका समर्थन करना चाहिए और आप देखेंगे कि हमारा प्रदेश केरल, तमिलनाडू व पश्चिम बंगाल से बड़ा है, जनसंख्या के हिसाब से इन राज्यों की जनसंख्या कम होने के कारण मंत्रिमण्डल का आकार छोटा है । आप देखिये हरियाणा में 14 मंत्री हैं जबकि वहां पर 90 सदस्य हैं । मेरा पूरे सदन से अनुरोध है कि छत्तीसगढ़ का हम सब समुचित विकास चाहते हैं, हम सब चाहते हैं कि

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सर्वहारा वर्ग के उत्थान के लिये काम किया जा सके तो माननीय मुख्यमंत्री जी का जो प्रस्ताव है उसका हम सबको समर्थन करना चाहिए और मैं अनुरोध करूंगा इस सदन से कि इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से केंद्र में भेजें और इसको स्वीकृति दिलायें। धन्यवाद ।(मेजों की थपथपाहट)

श्री धर्मजीत सिंह :- आपको महामंत्री बना देना चाहिए । जितने मंत्री की जरूरत है, सबको महामंत्री बना दो, झंझट खत्म ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत संकल्प का मैं विरोध करता हूं । वास्तव में यह संकल्प माननीय मुख्यमंत्री जी ने राजनैतिक शूचिता को ध्यान में रखकर प्रदेश के हित में इस सदन में प्रस्तुत नहीं किया है । माननीय मुख्यमंत्री जी के सामने एक संकट खड़ा हो गया है कि भारी बहुमत मिला है, 68 सदस्य चुनकर आये हैं, मंत्री बनने की लाईन लगी हुई है, कैसे इनको संतुष्ट करूं और इन सीनियर 5-7 लोग जो छूट गये हैं इनको संतुष्ट करने के लिये, यह दिखाने के लिये कि तुम्हारे हित में मंत्रिपरिषद की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव पास कर हम भेज रहे हैं । इनका भाव प्रदेश का हित नहीं, अपने सदस्यों के संतुष्टिकरण का है इसलिये भारतीय जनता पार्टी उनके इस प्रस्ताव का विरोध करती है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2003 में जब केंद्र में एन.डी.ए. की सरकार थी और एन.डी.ए. की सरकार ने जब मंत्रिमण्डल के संबंध में प्रस्ताव पास किया, यह प्रस्ताव सर्वसम्मत हुआ था, संविधान संशोधन हुआ था । आखिर आवश्यकता क्यों पड़ी संविधान संशोधन करने की, कहीं न कहीं दल-बदल का खेल रूके, कहीं न कहीं सत्ता के लिये जो सौदेबाजी होती है वह सौदेबाजी रूके इसके लिये प्रस्ताव पारित करना पड़ा था और उस सौदेबाजी को इस छत्तीसगढ़ के इस सदन ने भी देखा है । पहली बार आपकी सरकार बनी, माननीय मुख्यमंत्री जी उस सरकार में मंत्री थे और खाली मंत्री और संसदीय सचिव पद का ऑफर देकर के जो दल-बदल हुआ था उसको छत्तीसगढ़ की जनता भूली नहीं है । होता क्या था, उत्तरप्रदेश जैसे राज्य में एक समय स्थिति यह बनी थी कि 103 लोग वहां मंत्री के पद पर...।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- श्री शर्मा जी, श्री रामदयाल उइके जी का क्या हुआ उसको भी थोड़ा बता दीजिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उत्तरप्रदेश जैसी विधानसभा जहां सदस्यों की संख्या है 403, उस 403 की विधानसभा में 101 लोग मंत्री थे । वही खेल बिहार में खेला गया, वही खेल एक-समय महाराष्ट्र में खेला गया । दल-बदल के भाव को रोकने के लिये, शासन के खर्च को बचाने के लिये सर्वसम्मत प्रस्ताव आया । मैं तो खाली आपके माध्यम से सदन के नेता जिन्होंने यह प्रस्ताव लाया उनसे पूछना चाहता हूं कि उस समय आपकी पार्टी लाईन अलग थी और आज आपकी पार्टी लाईन

अलग है क्या ? उस समय सर्वसम्मत प्रस्ताव को लाने के पहले आपने क्या सोचकर समर्थन किया ? आज के अपने केंद्रीय नेतृत्व से आपने परमिशन ली है.............जारी

.............श्री कुरैशी

कुरैशी\08-01-2019\i11\07.45-07.50

जारी.....श्री शिवरतन शर्मा:- उस समय सर्वसम्मत प्रस्ताव लाने के पहले आपने क्या सोचकर समर्थन किया । इस प्रस्ताव को लाने के लिए क्या आपने अपने केन्द्रीय नेतृत्व से परमीशन ली है ? अध्यक्ष महोदय, तुष्टिकरण ने हमेशा देश को नुकसान पहुंचाया है । तुष्टिकरण किसी भी रूप में हो । चाहे किसी व्यक्ति को प्रलोभित करने के लिए हो । किसी को अपने पक्ष में करने के लिए तुष्टिकरण किया जाए या इन सदस्यों को मंत्री पद का लालीपाप दिखाने की बात हो । ये तुष्टिकरण का खेल बंद होना चाहिए । हम सदन के नेता द्वारा प्रस्तुत इस संकल्प का विरोध करते हैं ।

डॉ. शिव डहरिया :- शिवरतन भैया, 10 प्रतिशत का जो आरक्षण ला रहे हो वह किसके लिए है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं उनके लिए यह 10 प्रतिशत का आरक्षण लाया जा रहा है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- 50 परसेंट लोगों को 10 परसेंट दे रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसमें मुस्लिम भी शामिल हैं, उसमें क्रिश्चन भी शामिल हैं ।

डॉ. शिव डहरिया :- आप लाओ तो सामाजिक न्याय है और हम लाएं तो गलत है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बिल्कुल गलत है ।

डॉ. शिव डहरिया :- वह तुष्टिकरण है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे, आपने समर्थन किया है । जब केन्द्र ने इसे पास किया तो आपकी पार्टी ने इसका समर्थन किया है । संविधान संशोधन का समर्थन किया है ।

डॉ. शिव डहरिया :- इसीलिए तो कह रहा हूं कि आप भी इसका समर्थन करो।

अध्यक्ष महोदय :- डहरिया जी, शांत रहिए प्लीज ।

श्री शिवरतन शर्मा :- और अभी भी 10 परसेंट का आपकी पार्टी समर्थन करने वाली है ।

डॉ. शिव डहरिया:- इसीलिए तो हम निवेदन कर रहे हैं कि आप भी इसका समर्थन करो ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी की तरफ से जो संकल्प आया है, मैं इसका विरोध कर रहा हूं । इस शासकीय संकल्प की न तो कोई वैधता है और न ही कोई आवश्यकता है । अध्यक्ष महोदय, संविधान में एक व्यवस्था है और उस व्यवस्था को हमारा यह संकल्प, वहां जाकर कुछ भी नहीं कर सकता । अगर इस प्रकार के संकल्प पास करते जाएं और उसका

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

उपयोग आप अपने दल के असंतुष्ट लोगों को संतुष्ट करने के लिए करें तो मुझे आपकी बुद्धि पर भी तरस आ रहा है कि आप इस प्रकार की बातों में मत आइएगा। देखिए, मुख्यमंत्री की कुछ लिमिटेशन्स हैं । वे गिनकर मिनिस्टर बनाएंगे । कौन बने या न बने, यह मैं नहीं जानता । लेकिन यदि मुख्यमंत्री जी आपने यह प्रस्ताव रखा है तो आपके नेतृत्व पर भी प्रश्न उठा रहा है । आप कहीं भयभीत होकर तो यह प्रस्ताव नहीं रख रहे हैं । कहीं आपको बगावत की बू तो नहीं आ रही है । आपके लोग असंतुष्ट हैं । दादी आप तो मंत्री बन गए, आपको कहां से बगावत की बू आ रही है । आप तो मज़ा करो । जितना मज़ा करना है करो, हाथ हिलाते रहो । अध्यक्ष महोदय, उसका भी रास्ता है, बिना प्रस्ताव के भी रास्ता है । मैंने अखबार में पढ़ा था कि ढाई-ढाई साल के लिए मुख्यमंत्री होंगे । तो 13 अभी बन गए और 13 टी.एस.बाबा के समय बन जाएंगे । टी.एस.बाबा कहां हैं ? (श्री टी.एस.सिंहदेव, मुख्यमंत्री जी के बगल में बैठकर बातचीत करने पर) अरे, वहां तो छोड़ो, कम से कम बात तो करने दो । अध्यक्ष जी, हमने अखबार में पढ़ा है, सही है या गलत है, यह नहीं जानता ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि धोखे से बगावत हो भी गई तो राजा साहब भी तो उसका नेतृत्व करेंगे ना ।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं, नहीं । मैं राजा साहब वाली बगावत की बात नहीं कह रहा हूं । मैं यह कह रहा हूं कि मंत्री बनने की इच्छा सबकी होती है । मुख्यमंत्री की एक सीमा होती है । यह उनके दल का अनुशासन होना चाहिए कि मुख्यमंत्री को इस बात के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए कि वह 15 का 20 करने के लिए यहां प्रस्ताव रखे । मुझे अच्छा लगता अगर आप यहां प्रस्ताव रखते कि छत्तीसगढ़ को विशेष राज्य का दर्जा देना चाहिए । मुझे अच्छा लगता यहां के पोलावरम बांध के निर्माण को रोकने के लिए आप यहां से प्रस्ताव पास करते ताकि हमारे दोरला जनजाति के लोग नहीं डूबते । बिना प्रस्ताव के भी ठीक हो सकता है । राजा साहब, मैंने अखबार में पढ़ा था, सही है या गलत है, यह नहीं जानता । ढाई साल ये 13 मंत्री बन गए और बाद के ढाई साल में आप 13 मंत्री बना लेना । आप 20 मांग रहे हैं आपको 26 मिल जाएंगे । माननीय मुख्यमंत्री जी इसकी वैधानिकता कुछ नहीं है । वहां जाकर कचरे के डिब्बे में फेंका जाएगा । क्योंकि वहां कोई पूछेगा नहीं, कोई संविधान संशोधन नहीं करेगा । लोक सभा में पास होगा, राज्य सभा पास होगा, तब जाकर कानून बनेगा और किसको पड़ी है कि छत्तीसगढ़ में 20 प्रतिशत मंत्री बनाने के लिए वहां संशोधन करें । अगर आपकी भी सरकार बन जाएगी तो भी नहीं सोचेंगे। इसलिए इसको मत पास करिये । जो जो नाराज हैं, इन लोगों से बढ़िया डिनर में बात करिये । अमरजीत जी, सत्यनारायण भइया, वोरा जी । आप तो कह रहे थे कि सेवा करने के लिए, ये आपके ही सेवा करने के लिए प्रस्ताव आया है और एक दूसरे महापुरूष कहां हैं, राजिम की तरफ गए हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- धर्मजीत भइया...............

--- श्री ठाकुर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ठाकुर\08-01-2019\i12\07.50-07.55

श्री अमरजीत भगत :- श्री धर्मजीत भैया, आप सलाह दे रहे हैं कि भड़का रहे हैं समझ में नहीं आ रहा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं आपको सचेत कर रहा हूं कि शायद 20 प्रतिशत पास हो ही जायेगा, बहुमत आपके पास है इससे आपके पन्ने का कोई रास्ता नहीं खुलेगा इसलिये एक लक्ष्य रखिये, एक सीट खाली है, आप मुख्यमंत्री जी का विश्वास अर्जित करो, एक बन जाओ, आगे तो मुख्यमंत्री जी एक आगे भी लालबत्ती लगा दो, एक पीछे भी, दो-दो लालबत्ती वाले मंत्री बना दीजिये, कैबिनेट रैंक ही तो देना है न, इनको आप दे दीजिये, खुशी रहना चाहिए, आपके चेहरे में हंसी रहना चाहिए, आप लोग दुखी मत रहिये लेककिन इस प्रकार का प्रस्ताव जिसकी कोई वैधानिकता न हो, जिसकी कोई अहमियत नहीं है दिल्ली में ऐसे प्रस्ताव का क्या मतलब है, हंसी का पात्र नहीं बनना चाहिए, आप वापिस ले लीजिये, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं और कोई दूसरा प्रस्ताव लाईये जो छत्तीसगढ़ के हित में हो, जो हमको कहीं से पैसा मिलता हो दिल्ली की सरकार से या और कहीं से उसके बारे में बात करें तो आपके काम आयेगा और आप बनाओ न बनाओ ये कुछ नहीं कर सकते, आप चिंता मत करिये, आप निश्चिंत रहिये । मैं भी तो कुछ साल पहले उसी पार्टी में था, मुझे वहां का स्वभाव मालूम है । आप चिंता फिक्र मत करिये, ये जितने मंत्री नहीं बने हैं वे कुछ नहीं कर सकते इसलिये इस प्रस्ताव को आप वापिस ले लीजिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- श्री धर्मजीत सिंह, श्री अरूण वोरा जी उतने में ही खुश हैं तो आप क्या कर लोगे ।

श्री अरूण वोरा :- श्री धर्मजीत सिंह जी, देखिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं अब भी बोल रहा हूं सीधे-सीधे लालबत्ती लगवा लीजिये नहीं तो दूसरे टाईप की बत्ती कहीं लगी तो बहुत मुसीबत हो जायेगी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप इस प्रस्ताव के बजाय मार्गदर्शक मंडल बना दो तो ज्यादा अच्छा रहेगा ।

श्री अरूण वोरा :- श्री धर्मजीत सिंह जी, आप भी ध्यान से सुनिये कि पूरे प्रदेश के मतदाताओं ने बम्पर समर्थन दिया है 68 और सबका सम्मान करना हमारे मुख्यमंत्री जी का काम है, हमारा काम है, हम सबका काम है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- इसीलिये तो मैं बोल रहा हूं कि संसदीय सचिव....(व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- देखिये लालबत्ती का सवाल नहीं है, हम चाहते हैं कि जनता की सेवा करें ।

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- ठीक है लाल ट्रैफिक वाला मिल जायेगा लेकिन आप जो बोले न कि ऐसा हो जायेगा तो आपके और श्री अमितेश शुक्ल जी के लिये मैं एक दिन बोलूंगा ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के लिये मंत्रि परिषद की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने का शासकीय संकल्प इस सदन में लाया गया है उसका समर्थन करना चाहता हूं । हमारा छत्तीसगढ़ राज्य तमिलनाडू, केरल से भी बड़ा है क्षेत्रफल की दृष्टि से संवैधानिक बाध्यताओं के कारण विधायकों की संख्या के 15 प्रतिशत ही मंत्रिमण्डल में जगह दी जाती है जबकि एक-एक मंत्री के पास 5-5, 6-6 विभाग कार्य कर रहे हैं । आप देखते हैं बस्तर जो केरल प्रांत से बड़ा है जब शासकीय योजनाओं का संचालन या प्रशासन तंत्र को दुरूस्त करना है तो बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है । तमिलनाडू में 20 प्रतिशत मंत्रिमण्डल के सदस्य हैं जहां 40 सदस्य हैं गोवा, मणिपुर उसमें 20 प्रतिशत मंत्रिमण्डल के सदस्यों की संख्या है तो छत्तीसगढ़ में भी इस सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी ने लाया है तो बहुत सोच-समझकर इस सदन में लाया है यह संकल्प तो इसको सदन सर्वसम्मति से पास करके केंद्र सरकार को भेजना चाहिए इसलिये मैं इस विधेयक का समर्थन करते हुए सदन से निवेदन आग्रह करना चाहूंगा कि सर्वसम्मति से शासकीय संकल्प पास किया जाये ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों को मैं धन्यवाद देता हूं जिन्होंने यहां अपने-अपने विचार रखे । माननीय अजय जी, माननीय शिवरतन शर्मा जी, श्री धर्मजीत सिंह जी, श्री अरूण जी ओर श्री मोहन मरकाम जी ने अपने विचार रखे । यह बात बिल्कुल सही है कि हमारे छत्तीसगढ़ का भौगोलिक क्षेत्रफल तमिलनाडू से पश्चिम बंगाल से, बिहार से भी अधिक है । यह बात भी बिल्कुल सही है कि जिन परिस्थितियों में इसको लाया गया वहां तुस्टीकरण के लिये लाया गया था उस समय जब यह 15 परसेंट का सीलिंग लगाया गया लोकसभा में तो उत्तरप्रदेश या बिहार की जो स्थिति थी उसको ध्यान में रखकर लाया गया था लेकिन आज जो परिस्थिति है आप देखेंगे कि नीति आयोग भी जब बजट अनुदान देते हैं केंद्र और...........जारी

...........श्री अरविंद

अरविंद\08-01-2019\i13\07.45-07.50

...........जारी श्री भूपेश बघेल :- आप देखेंगे कि नीति आयोग भी जब बजट अनुदान देते हैं केन्द्र और राज्यांश का भी, उस समय पहले यह होता था कि जनसंख्या के आधार पर हम लोगों को राशि आवंटित होती थी। चूंकि हमारा भौगोलिक क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। यदि छोटा राज्य हो, जनसंख्या अधिक हो, तो कम राशि में निर्माण कार्य हो जाते हैं और कव्हर हो जाता है। लेकिन दूरस्थ अंचल बस्तर है, सरगुजा है, रायगढ़ है, जशपुर है, ये बहुत दूर-दूर तक फैले हुए हैं। उसके लिए भी अब भारत सरकार मानती है कि

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए बजट राशि बढ़ाई जाये। माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 प्रतिशत के हिसाब से हम लोग 13 मंत्री बन सकते हैं। 13 मंत्रियों के पास काफी अधिक विभाग हैं। चाहे राजस्व विभाग हो, शिक्षा विभाग हो, स्वास्थ्य विभाग हो, ये ऐसे विभाग हैं, जहां पूरे प्रदेश भर में उनका कार्यक्षेत्र है। चाहे मंत्रीगण हों, चाहे सहयोगीगण हों, उनको इतना कव्हर करना बड़ा कठिन होता है। अध्यक्ष महोदय, इस दृष्टि से भी मंत्रियों की संख्या बढ़नी चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरा, जिन राज्यों की जनसंख्या बढ़ी, आज पूरे देश में या विश्व में कहे, जनसंख्या एक बड़ी समस्या के रूप में आ रही है। बहुत सारे प्रदेश जहां जनसंख्या अधिक है, जब परिसीमन की बात आई और लोकसभा में जब चर्चा हो रहा था, उस समय यह कहा गया कि जनसंख्या के हिसाब से लोकसभा में सदस्यों की संख्या होगी। तो उन राज्यों ने इसका विरोध किया, जिन राज्यों ने जनसंख्या कम करने में सहयोग दिया, उनकी सीटें कम करके सजा दी जायेगी ? हमने अपनी जनसंख्या कम की या छत्तीसगढ़ के लोग सीमित करने में सफल रहे तो उसमें हमारा दोष है ? क्या यह अपराध है, जिसकी सजा मिलनी चाहिए। प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। 13 मंत्री काम कर रहे हैं, विभाग बहुत हैं। हमने मध्यप्रदेश में देखा। आप भी दिग्विजय सिंह जी के मंत्रिमण्डल में थे। दिग्विजय सिंह जी के पास कोई विभाग नहीं था। यहां चाहकर भी मुख्यमंत्री जी को अपने पास विभाग रखना पड़ता है। क्योंकि विभाग इतने अधिक है और मंत्री सीमित हैं। यदि मैं कहूं कि कोई विभाग नहीं रखना चाहता, तो यह मुश्किल कार्य है। इसलिए इसमें किसी तुष्टिकरण की बात नहीं है। आपने जितनी राजनीतिक बात कही है, निश्चित रूप से मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं होने से थोड़ देर के लिए जरूर दु:ख होता है। लेकिन कोई स्थाई बात नहीं है। सभी लोग जानते हैं कि यदि इसको 20 प्रतिशत भी कर देंगे उसके बाद भी 18 के बाद जो 19वा व्यक्ति होगा, फिर वह बोलेगा कि मैं मंत्री नहीं बना। इसलिए तुष्टिकरण करने के लिए लाया गया है, बिलकुल गलत बात है। लेकिन जिस प्रकार से धर्मजीत जी ने कहा कि इसको दिल्ली में सुनने वाला कोई नहीं है। मैं आपको स्मरण दिलाना चाहूंगा कि हम लोगों ने इसी पवित्र सदन में छत्तीसगढ़ी को राजभाषा के लिए संकल्प पारित किया। दिल्ली भेजा, आज भी प्रयास करेंगे कि अनुसूची-8 में शामिल हो। हम लोग जान रहे हैं कि नहीं हो रहा है। इसका मतलब कि हम लोगों को प्रयास नहीं करना चाहिए ? आज हम लोग शुरूआत कर रहे हैं। हो सकता है कि ऐसे अन्य राज्य भी इस मामले में विचार करें जहां का भौगोलिक क्षेत्रफल बहुत बड़ा हो, जिसकी विधान सभा बहुत छोटी हो, प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा हो। तो शुरूआत कहीं न कहीं से होती है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम आज जो बीजारोपण कर रहे हैं, उसका फल आज ही मिल जायेगा। जब आज इस पवित्र सदन में चर्चा कर रहे हैं और प्रस्ताव पारित करेंगे तो आने वाले समय में निश्चित रूप से विचार होगा, राष्ट्रीय स्तर पर विचार हो सकता है। एक वातावरण बने। जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल बहुत बड़ा है, जहां विधायक कम हो, वहां पर निश्चित रूप से संख्या बढ़ाने के बारे में सोचेंगे। तो मैं समझता हूं कि सभी माननीय सदस्यों,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

यहसंकल्प बहुत पवित्र उद्देश्य के लिए लाया गया है। ताकि प्रतिनिधित्व बढ़े। जनता का काम हो, जनता का हित हो, प्रदेश का विकास हो। इसके लिए लाया गया है। मैं समझता हूँ कि इसे सर्वसम्मति से पारित करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

.......जारी श्री अग्रवाल

अग्रवाल\08-01-2019\i14\8.00-05

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि यह सदन केन्द्र सरकार से यह अनुरोध करता है कि राज्य के वृहद क्षेत्रफल व प्रदेश के त्वरित विकास के हित में छत्तीसगढ़ राज्य के लिए मंत्रि-परिषद के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने हेतु संविधान के अनुच्छेद 164 (1क) के प्रावधान को संशोधित करते हुए समुचित पहल की जाए ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों ने अपना विचार रखा और उसके बाद में हमारे तरफ के माननीय सदस्यों ने इसके औचित्य और आवश्यकता इन सब बातों को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया गया है कि इस संकल्प को वापस ले लिया जाये और मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करता हूं कि प्रदेश के हित में स्वस्थ् राजनीति और सारी बातों को देखते हुए इस संकल्प को वापस ले लिया जाए, ये मैं आग्रह करना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- आपने आग्रह करने में विलंब कर दिया है....

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, तो फिर हम इसका विरोध करते हैं और बहिर्गमन करते हैं ।

समय :
8:04 बजे

बहिर्गमन

भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के विरोध में

(श्री धरमलाल कौशिक, नेता प्रतिपक्ष के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के द्वारा प्रस्तुत संकल्प के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया)

शासकीय संकल्प (क्रमश:)

राज्य के मंत्रि-परिषद् के सदस्यों की संख्या 15 प्रतिशत के स्थान पर 20 प्रतिशत किये जाने संबंधी.

(अध्यक्ष महोदय द्वारा सभा का मत लिया गया)

संकल्प स्वीकृत हुआ ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(मेजों की थपथपाहट)

<u>विलोपन</u>

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया एवं श्री बृजमोहन अग्रवाल द्वारा आज कार्यवाही के दौरान प्रयुक्त असंसदीय शब्दों को मैं विलोपित करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 9 जनवरी, 2018 को 11:00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(रात्रि 8:00 बजकर 02 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 09 जनवरी, 2019 (पौष 19, 1940) के पूर्वाह्न 11:00 बजे दिन तक के लिए स्थगित की गई।)

रायपुर (छ.ग.)
दिनांक 8 जनवरी, 2019

चन्द्र शेखर गंगराड़े
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं